"लाल कृत"

बापू धाम के मीठे बोल

(संत चमत्कार)

ब्रह्मलीन परम श्रद्धेय बापू श्रद्धाराम जी महाराज

लेखक-कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी धार्मिक साहित्यकार सरस्वती रत्न सम्मानित भारत की अनेक सस्थाओं द्वारा यश प्राप्त
मंदिर श्री ओम नारायण जी सत्संग सभा ढक्का ग्राम, किंग्जवे कैम्प, दिल्ली-9.

लेखक एवं प्रकाशक :

कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी

धार्मिक साहित्यकार सरस्वती रत्न सम्मानित,

भारत की अनेक संस्थाओं द्वारा यश प्राप्त।

मंदिर श्री ओम नारायण हरनाम जी सत्संग सभा

ओम मंदिर मार्ग, किंग्जवे कैम्प, दिल्ली-110009

चेतावनी : मैं कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी घोषणा करता हूँ कि मैंने बापू धाम के मीठे बोल पुस्तक छापने का अधिकार केवल धमार्थ चैरिटेबल ट्रस्ट के चेयरमैन जी को दे रखा है। कोई भी व्यक्ति इसे तोड़-मरोड़कर छापने का प्रयास न करे। लेखक एवं प्रकाशक

हमारे प्रेरणा-स्त्रोत

श्री कुलानंद भारतीय जी, पूर्व प्रभारी शिक्षामंत्री, दिल्ली; श्री लक्ष्मण सिंह स्वतंत्र अखिल भारतीय लेखक मंच, दिल्ली-9; वरिष्ठ समाज सेवी-श्री शिव कुमार आहूजा जी, जे-23-24. प्रताप नगर, दिल्ली-7; स-सुरजीत सिंह जोबन जी. हिन्दी अकादमी, दिल्ली सरकार, दिल्ली

बापू मार्गदर्शक-

चौधरी अविनाश चन्द्र जी, चैयरमैन धर्मार्थ चैरिटेबल ट्रस्ट, ओम दरबार नंदाचौर। प्रधान-श्री ओम प्रकाश आहूजा जी ओम नारायण हरनाम जी सत्संग सभा। श्री रंजीत जग्गा जी-उप प्रधान सभा-श्री विजय छाबड़ा जी-संपादक ओम संदेश पत्रिका। सहसंपादक-राजीव गुम्बर जी। श्री इकबाल सिंह जी मुटनेजा एवं श्री हरगुलाल जी नागपाल सचीव।

बापू भक्त मुख्य सहयोगी -

स-हरभजन सिंह, सेवक लेखक कवि एवं गायक, निवास-44 ढक्का, गुरुतेग बहादुर नगर, दिल्ली-110009

बापू प्रचार-प्रसार परिवार-

भक्त श्री हरदयाल जी-पाठी एवं गायक। भक्त श्री लाल चंद जी हमदर्द पाठी एवं गायक। श्री राजू जी-गायक। श्री अशोक जी-गायक। श्री हरि सिंह जी-गायक। श्री कल्याण जी-गायक। श्री खरैती लाल जी दीपक-गायक। बीबी-अनीता जी-गायिका। बीबी रेखा जी गायिका। श्री सुखदेव जी-संगीतकार एवं गायक। श्री रफी खान जी तबला वादक। श्री गुलशन कुमार, नागपाल जी-ढोलक वादक। श्री रामा शंकर जी संगीत शिक्षक एवं गायक। श्री लालचंद जी ब्रजवासी गायक। भक्त श्री बोधराज जी-लेखक एवं गायक।

परामर्शदाता -

स-गुरमीत सिंह लाल, 0/44, सी.एस.ए. कॉलोनी, किशन गंज, दिल्ली-110007, दूरभाष: 981236949

बापू चित्र भेंट कर्ता-स-प्रीतम सिंह सिहरा जी, मोबाइल-9818714650

इस पुस्तक को प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें-

कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी, ओ-44 चन्द्रशेखर आजाद कॉलोनी किशन गंज, दिल्ली-110007, मोबाईल-9540962406

लेखक : कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी

तुच्छ भेट : 120.00 रुपये मात्र

टाईपसेटिंग-साहिल प्रिंटवेज, कमला नगर, दिल्ली-110007

निवास: 30/21, शक्ति नगर,

दिल्ली-110007

दूरभाष: 23841602

23847022

सत्यमेव जयते

कुलानंद भारतीय
पूर्व प्रभारी शिक्षामंत्री, दिल्ली कार्यकारी अध्यक्ष,

संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार

"सद्भावना-शुभकामना संदेश"

भगवत् कृपा से ही किसी व्यक्ति को लेखनी एवं वाणी की अभिव्यक्ति की शक्ति मिलती है। "कविः मुनीसी परीभू-स्वयंभू" होता है। अर्थात् कवि भी ब्रह्मा की भांति अपनी साहित्य सृष्टि का

रचनाकार होता है, साथ ही साथ यह भी कहा गया है कि "शरीर माध्यं खलु धर्म साधनम्" अर्थात् हमारा यह शरीर धर्म-कर्म का साधन है। हम अपने जीवन में जैसा भी भला बुरा कर्म करेंगे, हमको वैसा ही फल मिलेगा।   साहित्य सर्जनकर्ता समाज का पथप्रदर्शक, संरक्षक, दिग्दर्शक होता है और "तमसोमा ज्योतिर्गमय" की भांति लेखक भी समाज को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है।

"बापू धाम के मीठे बोल" के लेखक कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी जी ने बापू धाम मंदिर, श्री ओमनारायण हरनाम जी सत्संग सभा की कृति गुरुजन, सन्तजन, भगवत् भजन पर लिखकर अपने हृदय की लेखनी को पवित्र किया है, साथ ही पाठकगण को आत्म-परमात्म का महानतम् ज्ञान दिया है। नव

मुझे विश्वास है पाठकगण इनकी रचनाओं से अधिकाधिक लाभांवित होंगे। मैं लेखक कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी जी को बधाई के साथ अपनी शुभकामना, सद्भावना संदेश प्रेषित करता हूँ।

मुझे विश्वास है पाठकगण इनकी रचनाओं से अधिकाधिक लाभांवित होंगे।

मैं लेखक कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी जी को बधाई के साथ अपनी शुभकामना, सद्भावना संदेश प्रेषित करता हूँ।

धन्यवाद।

कुलानंद भारतीय

सुरजीत सिंह जोबन

अध्यक्ष एवं संपादक: कैपिटल रिर्पोटर

हिन्दी समाचार पत्रिका

निवास : 11A इन्द्रलोक, दिल्ली-110035

दूरभाष: 9310330013

सदस्य: हिन्दी अकादमी दिल्ली सरकार

"संदेश"

भाई नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी हिन्दी के सशक्त हस्ताक्षर हैं। इन्होंने गुरबाणी और सिक्ख इतिहास से संबंधित कई पुस्तकें लिखी हैं। जो मैंने पढ़ी हैं। मैं इनसे बहुत प्रभावित हुआ हूँ। यह राष्ट्रीय विचारधारा के कवि भी हैं। इनकी कविताओं को सुनने का भी मुझे अवसर मिला है। मैं इनके सरल सीधे व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हूँ। इन्होंने गुरबाणी, गुरु साहिबान और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से संबंधित कविताएँ,सरल भाषा में लिखी हैं। जो आम पाठक भी समझ सकता है। वास्तव में देखा जाए तो श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी पूरी मानव जाति का ग्रंथ हैं। इसमें 6 गुरु साहिबान के अतिरिक्त 15 संतों की वाणी भी शामिल की गई है। यह संत, भक्तगण देश के विभिन्न भागों से विभिन्न जातियों से सम्बन्ध रखते हैं। कवि की भाषा में भी देशज शब्दों की अधिकता है। परन्तु ईश्वर भक्ति की भावना की एकरूपता ने इन्हें एक मंच प्रदान किया और श्री गुरु अर्जुन देव जी ने संतों भक्तों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में सम्मिलित करके जहां अनेकता में एकता, राष्ट्रीय एकता, भाषायी एकता का परिचय देकर सार्वभौमिक साम्प्रदायिक सद्भावना को प्रदर्शित करके सम्पूर्ण मानव जाति के सम्मुख एक सुगंधिपूर्ण गुलदस्ता दिया है, जिसकी सुगंधि दिग-दिगन्त तक सीमातीत और सभ्यातीत फैली है। सत्य ही कहा गया है। हरि को भजै सो हरि का होइ। जिसने भी प्रभु की आराधना की है। उसका सम्मान किया है। वह जाति, रंग, राज्य की सीमाओं को समझ करके सभी का हो गया है।

भाई नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी जी की यह पुस्तक बापू धाम के मीठे बोल पाठकों को निश्चित तौर पर पसन्द आएगी। मैं इनके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूँ, ताकि यह मजबूती से कलम चलाकर पाठकों को अच्छी पुस्तकें दे सकें।

शुभकामनाओं सहित।

धन्यवाद।

सुरजीत सिंह जोबन

संचालन समिति, हिन्दी अकादमी, दिल्ली सरकार

॥ जय बापू दी ॥

चौधरी अविनाश चन्द्र

चैयरमैन, धर्मार्थ चैरिटेबल ट्रस्ट श्री ओम दरबार नंदाचौर होशियारपुर।

डिप्टी कमिश्नर ऑफ पुलिस (रिटायर्ड)

मोबाईल : 9899299138

संदेश

बापू श्रद्धाराम जी महाराज के अनन्य सेवक धार्मिक साहित्यकार सरस्वती रत्न सम्मानित कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी जी ने अपनी लेखनी द्वारा मधुर-मधुर शैली में बापू जी की महिमा पर प्रकाश डाला है। इनकी शैली हृदय को छूने वाली है। बापू जी की कथाओं को बड़े सुन्दर ढंग से संवारा है। कृति को बापू धाम के मीठे बोल नाम दिया है।

ओम शहनशाह झण्डा साहिब जी कीर्ति निस्सन्देह मोक्ष दिलाने वाली है। लंगर गृह में एकजुट होकर एक पंगत में बैठकर लंगर छकना भाईचारे का सच्चा प्रतीक है।

कवि जी की लेखनी को तथा इनकी वाणी को हमारे ट्रस्ट की ओर से बारम्बार प्रणाम है। कवि जी प्रशंसा के पात्र हैं। बापू जी इनपर कृपा बनाए रखें और यह इसी प्रकार बापू जी की लीलाओं पर प्रकाश डालते रहें। हमारी यही हार्दिक कामना है।

धन्यवाद।

चौधरी अविनाश चन्द्र

ओम प्रकाश आहूजा

॥ जय बापू दी ।।

प्रधान-श्री ओम नारायण हरनाम जी सत्संग सभा, ओम मंदिर मार्ग, किंग्जवे कैम्प, दिल्ली-9

"शुभ संदेश"

कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी जी को हमारी सभा की ओर से लाख-लाख बधाई। इन्होंने बापू धाम के मीठे बोल कृति लिखकर श्री ओम नारायण हरनाम जी सत्संग सभा में सम्मिलित होकर बापू जी का गुणगान कर अपनी लेखनी को महान बनाया है।

निस्सन्देह। यह कृति प्रशंसा के योग्य है। इस कृति में बापू जी की कथाओं पर प्रकाश डाला है। कवि जी बापू जी की महिमा बखान करने में उत्तीर्ण हैं। इन्होंने कबीर जी के दोहों को आधार मानकर वैसे ही दोहे लिखकर अपनी लेखनी को पवित्र बनाया है। इनकी शैली चिताकर्षक है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि इनकी यह कृति बापू भक्तों में अपना स्थान बना लेगी और पाठकों को सचखण्ड धाम दिखा देगी। हम कवि जी को इस कार्य के लिए बधाई देते हैं।

धन्यवाद

ओम प्रकाश आहूजा

प्रधान-श्री ओम नारायण हरनाम जी सत्संग सभा

निवास : 44 ढक्का, गुरु तेग बहादुर नगर,

दिल्ली-110009

मोबाईल : 9350944368

हरभजन सिंह सेवक

॥ हार्दिक शुभकामना ।।

कविरत्न श्री नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी एक ओजस्वी कलम के धनी हैं। इन्होंने अनेक किताबों की रचना की है। यह लेखक ही नहीं एक सुप्रसिद्ध कवि भी है। यह हिन्दी साहित्य अकादमी के द्वारा दिल्ली के विभिन्न स्थानों में होने वाले कवि सम्मेलनों में भाग लेकर श्रोताओं को अपनी मधुर वाणी से सरोबार करते रहते हैं।

इनका जीवन बड़ा ही सादा है। यह मृदभाषी है। इन्होंने नंदाचौर धाम से जुड़े अनेक धार्मिक स्थानों पर विराजे, विभिन्न गद्दी आसीन संतों का सहज व सरल ढंग से अपनी वाणी में वर्णन किया है। प्रस्तुत पुस्तक "बापू धाम के मीठे बोल" में पाठकों को नंदाचौर धाम से जुड़ी अनेक प्रकार की सामग्री पढ़ने को मिलेगी। कवि जी का यह प्रयास अपने आप में सराहनीय है। इन्होंने थोड़े समय में ही बापू दरबारनंदाचौर की शरण में आकर इतने बड़े महान कार्य को उचित प्रमाण दिया है। इनका यह कार्य प्रशंसा योग्य है।

बापू जी इनपर कृपा बनाए रखें। यह इसी प्रकार अपनी लेखनी द्वारा बापू जी का गुणगान करते रहें।

धन्यवाद।

हरभजन सिंह सेवक लेखक कवि एवं गायक मंदिर श्री ओम नारायण हरनाम जी सत्संग सभा ढक्का, दिल्ली-110009

नानक चंद संगीत कार

॥ श्री गणेश जी सहाय ॥

सदस्य-अखिल भारतीय साधु समाज,

वरिष्ठ समाजसेवी, हिन्दी प्रचारक एवं गायक। निवास-59 राजपुरा गुड़मण्डी

दिल्ली-110009; मोबाईल-9971336177

"शुभ संदेश"

सौभाग्यवश मेरी भेंट कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी जी से राजधानी कवि समाज सम्मेलन में तीन दशक पूर्व हुई। भेंट उपरांत इनके अनथक श्रम, प्रयास, खोज, लगन तथा बुद्धिमता का हृदय को आभास हुआ। इन्होंने कई धार्मिक पुस्तकें हिन्दी साहित्य को प्रदान की हैं। मुझे इनकी पुस्तकें पढ़ने पर इस प्रकार लगा कि यह धार्मिक पुस्तकों के रचयिता, ईश्वर के पुजारी तथा अध्यात्मिक ज्ञान के प्रकाश पुंज हैं यह हंसमुख, मृदभाषी तथा मिलनसार हैं।

बापू धाम के मीठे बोल-इस अनमोल निधि को रचकर इन्होंने बापू नाम लेवाओं में अपना स्थान बनाया है। इस कृति में लेखों एवं चित्रों द्वारा प्रकाश डाला गया है। बापू धाम के संतों-महतों का परिचय बड़े सुंदर ढंग से किया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इनकी यह कृति बापू नाम लेवाओं के हृदय में अपना स्थान बना लेगी। मैं कवि जी को इस कठिन श्रम के लिए बधाई देता हूँ।

धन्यवाद

नानक चन्द संगीतकार, बापू प्रशंसक

॥ जय बापू दी ।।

संपादक-ओम् संदेश पत्रिका

मोबाईल : 9811056953

विजय छाबड़ा

संपादक-ओम् संदेश पत्रिका

मोबाईल : 9811056953

हार्दिक संदेश

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि श्री ओम् दरबार नंदाचौर से जुड़े कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी धार्मिक साहित्यकार सरस्वती रत्न सम्मानित जी ने बापू जी की कथा-कहानियों को अपनी लेखनी की पवित्र शैली में कीर्तिमान किया है। इस कृति में बापू जी के स्वरूपों का संक्षिप्त दिग्दर्शन कराया है। कृति को बापू धाम के मीठे बोल नाम दिया है।

इस कृति में बापू जी का साक्षात् दर्शन होता है, जो अंतरमुखी कमल पर चढ़ी मल को धोता है। इस कृति में कार्यकर्ताओं के कार्यकलापों एवं सेवाओं की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है, जो बापू भक्तों को पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिए प्रयत्नशील होती है। इसे पढ़कर सम्पूर्ण बापू समुदाय लाभान्वित होगा।   कवि जी पर बापू जी की सदैव कृपा बनी रहती है, यह बड़ी सुगमता से बापूजी की लीलाओं पर प्रकाश डालते रहते हैं। इनकी शैली बड़ी सुंदर है। यह प्रशंसा के पात्र हैं। हम बापू जी से प्रार्थना करते हैं कि यह इसी प्रकार श्री नंदाचौर दरबार की चमत्कारी लीलाओं को लिखते रहें और बापू भक्तों में उजागर करते रहें। बापू जी इन्हें बल-बुद्धि प्रदान करें।

प्रशंसा सहित धन्यवाद।

विजय छाबड़ा

- लेखक की कलम से-

दोहा : सरस्वती की वंदना, करूं जोड़ कर दोए। सभी काज फल लाएंगे, विघ्न न होगा कोए।"

मां सरस्वती जी की अनुकम्पा से एवं बापू हर भगवान जी महाराज गद्दी आसीन श्री नंदाचौर दरबार की असीम कृपा से "बापू धाम के मीठे बोल" पुस्तक लिखने का मेरा प्रयास कार्य सम्पन्न हुआ। इस पुस्तक को पठन उपरांत प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में धार्मिक कार्यों के प्रति रुचि बढ़ेगी।

हम विश्वास सहित कहते हैं कि जो भी इस पुस्तक को लगन से पढ़ेगा, उसकी कीर्ति बापू भक्तों में अवश्य बढ़ेगी। पुस्तक को पढ़कर एक संतुष्टि का अहसास होगा। आशा है सभी धर्म प्रेमी बापू नाम लेवा इसे चाव से पढ़ेंगे। इस पुस्तक को लिखने में बड़ी सावधानी प्रयोग की है। श्री राजीव गुम्बर जी के विनयपूर्ण निवेदन पर पंडित दयाकिशन महाराज जी की पुस्तक संत महिमा ज्वाला ज्योति की सहायता से इसे नव रूप दिया है। इसके लिए हम पंडित जी के धन्यवादी रहेंगे। पंडित जी वास्तव में

महामानव है. इन्होंने अपने मुखारविंद से संतों की महिमा एकत्रित करके उनकी कीर्ति को उजागर किया है। हम अपने सत्संगी भाईयों का हृदय से सम्मान करते हैं, जिन्होंने पुस्तक छपवाने में हमारा पूर्ण सहयोग दिया। हम सभी को नतमस्तक होकर प्रणाम करते हैं।

दोहा : दर्शन कर हर संत का, मन दर्पण खिल जाए।
जन्म-जन्म की मल लगी, सहज-सहज धुल जाए।
संत हमारी शान हैं, संत हमारे प्राण। "लाल" संतों से पाया, हमने समर्थ ज्ञान।।

धन्यवाद

लेखक : कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी धार्मिक साहित्यकार सरस्वती रत्न सम्मानित

अनुक्रमणिका

1.श्री गणेशाय नमः.........13

2.ओम प्रेरणास्रोत चेतन शक्ति 14

2. श्री ओम दरबार सिहांसनरूढ़ सद्गुरुदेव.....15

3. मेरा परिचय.....17

4. बाबा पानप देव जी महाराज का जीवन चरित्र.....18

5. भक्ति स्थल.....20

6. धाम पुर नगर का उद्धार.....21

7. बाबा जी का समाधि लेना....23

8.संत बड़े उपकारी.....25

9. गुरु पूजन दिवस.....26

10. परमहंस बाबा ठाकुर जी की महिमा.....27

11. संत से अग्न भयभीत.....30

12. दृढ़ विश्वास.....32

13. ठाकुर जी की ख्याति.....33

14. भक्त का क्रोध छोड़ाना.....34

15.भक्त की लाज बचाई.....36

16.ठाकुर जी का जग छोड़ना.....38

17.ठाकुर जी की वाणी.....39

18.बापू ज्वाला सिंह जी की जीवनी.....40

19.स्तुति बापू ज्वाला सिंह जी की.....44

20.बाबा भाग सिंह जी की जीवनी.....45

21. बापू ओम नारायण दत्त जी की अमर कथा.....47

22.तपोस्थान श्री ओम जी का.....50

23. संत पुरुष के अटल वचन....51

24. ओम नाम की टेक ले.....53

25.अनार बाग.....54

26.सेवा की महिमा.....55

27.सिद्ध पुरुष श्री ओम जी महाराज.....56

28.कथा दो सेब की.....57

29. थड़ा साहिब की महत्तता.....58

30. बापू धाम के सेवक.....59

31. बापू ओम नारायण जी का ज्योति ज्योत समाना.....60

32. श्री ओम महिमा.....61

33. सच्चे खेवनहार.....62

34. ओम कही ज्ञान की बात.....63

35. नंदाचौर की धरती.....64

36. धर्मराज के किंकर.....65

37. बापू हरनाम जी महाराज की जीवनी.....66

38. महाबली हरनाम जी की महिमा.....69

39. बापू श्रद्धाराम जी महाराज की जीवनी.....71

40. गुरु की प्राप्ति.....73

41. धन का सदुपयोग.....75

42. डाक्टर को मुराद मिली.....76

43. नदी का प्रकोप.....77

44. आदरामान मंदिर की स्थापना.....78

45. बापू जी का आशीर्वाद.....79

46. भक्तों की कामना......80

47. ओम शहनशाह झंडा साहिब....80

48. एक माई की आस पुजाई.....81

49. सच्ची अरदास.....83

50. दिल्ली में बापू धाम.....83

51. ईश्वर स्वरूप बापू श्रद्धाराम जी महाराज.....85

52. सुरपुर प्रस्थान.....86

53. बापू गुरदास राम जी महाराज.....89

54. बापू भानु दत्त जी महाराज.....92

55. गद्दी आसीन बापू हर भगवान जी महाराज......94

56. बापू धाम श्री ओम मंदिर.....95

57. लंगर गृह.....96

58. सत्संग सम्पूर्ण आहूति दाता.....98

59. काव्य कलश.....99

60.आरती.....115

॥ श्री गणेशाय नमः ।।

बोलिए गणपति गणेश जी महाराज की जय

दोहा: गणेश जी का नाम ले, कारज किआ आरंभ। अब दृढ़ हो जाएंगे, बापू धर्म स्तंभ ।।

बोलिए बाबा पानप देव जी महाराज की जय।

परमहंस ठाकुर जी महाराज की जय।

बापू ज्वाला सिंह जी महाराज की जय।

बापू भाग सिंह जी महाराज की जय।

बापू ओमनारायण दत्त जी महाराज की जय।

बापू हरनाम जी महाराज की जय।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज की जय।

बापू गुरदास राम जी महाराज की जय।

बापू भानु दत्त जी महाराज की जय।

बापू हर भगवान जी महाराज की जय।

बोलिए-बापू नाम लेवा समस्त भक्तजन की-जय।

ओम शहनशाह झंड़ा साहिब की सदा ही-जय।

।। ज्ञानोपदेश ॥

बापू-बापू जपा करो, हर संकट से बचा करो। उठत बैठत सांझ सवेरे, इसी नाम को रटा करो।

।। ओम प्रेरणास्त्रोत चेतन शक्ति ॥

ॐ ओम दरबार नन्दाचौर धाम

दोहा :ओम अगाध समुद्र का, ज्ञान पथ मिल जाए।
पूर्ण गुरु का साथ हो, तो हिए पट खुल जाए।।
जन्म-जन्म की मल लगी, बिन साबुन धुल जाए।
जगत्पति का द्वार लख, मनवा खिल-खिल जाए।

श्री ओम दरबार सिंहासनरुढ़ सद्गुरुदेव

संतशिरोमणि बापू हर भगवान जी महाराज।

दोहा: दर्शन कर इस संत का, जन्म मरण कट जाए।
चौरासी का चक्र भी, सहज-सहज मिट जाए।।
संत पुरुष के बोल में, अमृत रस का घोल। संत पुरुष जब बोलते, बोलें मीठे बोल ।।

संतपुरुषों की वाणी ध्यानपूर्वक सुनो। ओम एक ऐसी शक्ति हैं जो सम्पूर्ण सृष्टि को नियंत्रण में रखती है। कभी विचलित नहीं होती, कभी भयभीत नहीं होती, यह अजन्मी है, अथाह है, अरूपा है तथा असीम है। इस महान शक्ति को राम-शाम-अल्लाह ईश्वर-वाहेगुरु-गौड आदि-आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। यह आदि मध्य और अंत से रहित हैं।

हमारा देश ऋषि-मुनियों एवं संत महापुरुषों की परम्परा से है। हमारे महामनिषियों ने वेदों शास्त्रों तथा अनेक धार्मिक ग्रंथों को रचकर ओम नाम का

गुणगान किया है। इसी प्रचलित परम्परा में नंदा-चौर पंजाब के पवित्र स्थान पर बापू जी जैसे संत शिरोमणियों ने अपने कोमल व पवित्र चरण रखे। धरती कृतकृत्य हो गई। ऐतिहासिक तीर्थों में अग्रगण्य हो गई। तभी से नंदाचौर धाम ग्राम जिला होशियारपुर जन-जन की आस्था व श्रद्धा का प्रमुख केन्द्र बना।

दोहा : धरती सुखमय हो गई, संत पुरुष जब आए।

उबड़ खाबड़ धरती ने, तब फिर मंगल गाए।। मानवता के बीज बो, बापू भेद मिटाए।

"लाल" यहाँ अब देख लो, सब धर्मों के आए।

॥ काव्य लहरी ॥

बापू जी ने दर आये का, हृदय से सम्मान किया।

एक बार जिस सिर को झुकाया, उसका झट कल्याण किया।।

॥ भजन ॥

तर्ज-बिछड़े हुए परदेशी, इक बार तो आना तू

बापू जी की जिसपर कृपा, वह शाहों का शाह। उसे न चिंता किसी की भी, वह जन बेपरवाह ।।

बापू जी की जिस पर कृपा.....

बापू जी का जो जन हुआ, वह जन परम सुजान। उसे थोड़ न किसी वस्तु की, उसपर जग कुर्बान ।।
बापू जी की अमर वाणी, उसके पावन साह।उसे न चिंता किसी की भी, वह जन बेपरवाह।

बापू जी की जिस पर कृपा .....

बापू जी ने जिस मनुज के, रखा शीश पर हाथ। उसकी लौ प्रभु से लग गई, उसे मिले रघुनाथ।। बापू जी के प्रवचन तो, देते नेक सलाह। उसे न चिंता किसी की भी, वह जन बेपरवाह।।

बापू जी की जिस पर कृपा......

सुंदर सूरत रूप अनूप, हमारे बापू का। स्वाति बूंदे रूप निखारे, प्यारे बापू का।। ऐसे में जिस दर्शन किया, उस को मिल गई थाह। उसे न चिंता किसी की भी, वह जन बेपरवाह ।। बापू जी की जिस पर कृपा.....

बापू धाम के मीठे बोल / 17

जो भी बापू धाम पर आए, वह वर फल सुख पाए। बापू जी को जो भी मनाए, वह सुरपुर को जाए।। "लाल" मुझे यहाँ से मिल गई, ईश्वर की दरगाह। उसे न चिंता किसी की भी, वह जन बेपरवाह ।।

बापू जी की जिस पर कृपा.....

मेरा परिचय

बापू धाम के मीठे बोल - यह पुस्तक बापू प्रेमियों के लिए मानसरोवर झील के अमूल्य रत्नों का भण्डार है। इसे सत्संगी भाईयों के हाथों में समर्पित करके मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। इसे रचकर मेरा मनोरथ पूरा हुआ, मन का उद्यान खिला, जीवन धन्य-धन्य हुआ।

एक समय की बात है जब बापू हर भगवान जी महाराज मंदिर श्री ओम नारायण हरनाम जी ढक्का गांव के रविवारीय सत्संग में पधारे, तब बापू भक्त हरभजन सिंह सेवक जी ने मुझे उनके दर्शन करवाए और बापू जी से कहा कि यह भी एक लेखक हैं, अनेक धार्मिक पुस्तकें लिख चुके हैं।

ऐसे में बापू हर भगवान जी ने मेरे सिर पर वरद् हस्त रखकर कहा-लिखते रहो, तुम्हें सफलता मिलेगी। बापू जी की अनुकम्पा से मैं इस पुस्तक को लिखने में सफल हुआ।

बापू हर भगवान जी महाराज आपकी सदा ही जय-

मैं भटका बहुत धामों पर, यहाँ पर विश्राम हो गया।

मेरा यह नास्तिक जीवन, बापू के नाम हो गया।।

ओम शाहनशाह झंडे साहिब की सदा ही-जय।

॥ भजन ।।

तर्ज-फूलों का जोश खाए जा, कांटों की नोक पर खड़ा मुस्कुराए जा

बापू तुम्हारी कृपा का, मुझ पर बड़ा ऐहसान है।

चरणों में मुझकों ले लिया, हिये में अब मुस्कान है।

बापू तुम्हारी कृपा का .....

मेरे मन की सुनली टेर, आने में न करी देर। सारे दुःखों का मर्दन कर, जीवन में कर दी सवेर।। तेरे ह्वदय में सदा से, मुझ जैसों का सम्मान है। चरणों में मुझको ले लिया, हिये में अब मुस्कान है।

बापू तुम्हारी कृपा का.....

मैं भटका था अंधयारों में, मुझको उभारा संसार में। मेरे अवगुण सब बिसार के, नाम लिखा निस्तार में।। दुःख व बीमारी सब छट गए, अब मेरी उच्ची शान है। चरणों में मुझको ले लिया, हिये में अब मुस्कान है। बापू तुम्हारी कृपा का ....

मेरी चिताएं हट गई, दुःखों की बदरिया छट गई। इनके सुरक्षा चक्र से भारी विपदाएं मिट गई।। "लाल" अब सुखमय होकर के, करता इनका यशगान है। चरणों में मुझको ले लिया, हिये में अब मुस्कान है।

बापू तुम्हारी कृपा का.....

बाबा पानप देव जी महाराज का जीवन-चरित्र

दोहा :संत पुरुष पानप देव, उच्च कोटि के संत।

यह कर्ता का अंश है, कहलाते भगवंत ।।

इनके निर्मल कर्म का, कहीं न देखा अंत।

चारों युगों में फैल गई, इनकी सुखद सुगंध ।।

संत शिरोमणि सदगुरु बाबा पानप देव जी महाराज कोई साधारण पुरुष नहीं थे। वह साक्षात ईश्वर स्वरूप थे। उनके चेहरे पर सदैव सुनहरी रंग का प्रकाश दिखाई देता था, जो सचखण्ड वासी होने की सच्चाई कहता था उनके मुखारविंद से भक्तों के प्रति फूल बरसते थे, जो नाम कमाई की प्रेरणा देते थे, उनकी आँखों में सूर्य समान तेज प्रकाश पुंज था। उनसे आँखें मिलाना बड़ा कठिन था। उनकी

स्तुति करना सूर्य को दीपक दिखाना था। उन्होंने अपने धाम पर पूजा अर्चना तथा उपासना की गंगा प्रवाहित कर रखी थी। यही कारण था कि उनकी रसना से सदैव अमृत वर्षा होती थी। जो नतमस्तक हो

उनके शरणागत हो जाते, वह संसारिक बंधनों से मुक्त हो जाते। उनकी कृपा से प्रभु का दर्शन होता और मन मंदिर का अरविन्द पावन होता। जो प्राणी इनके आनंद में खो जाता, वह उस परम तत्व के अनमोल खजाने को प्राप्त कर लेता।

बाबा पानप देव जी महाराज का जन्म सन् 1780 ईसवीं में ब्राह्मण कुल के एक परिवार में हुआ। आपके माता-पिता अधिक धनवान न थे, वह बड़ी कठिनाई पर अपनी आजीविका चलाते थे। जनश्रुति अनुसार अकाल के कारण वह अपने पुत्र पानप को गोद में लेकर भोजन की खोज में निकले, बहुत दिनों तक इधर-उधर भटकते रहे। एक दिन एक घने वन से जा रहे थे। ऐसे में भूख प्यास ने उन्हें बेबस कर दिया। तब एक छायादार वृक्ष तले पुत्र को लेटाकर तथा विश्राम सहित सुलाकर इधर-उधर कंदमूल ढूंढने लगे। ढूंढते-ढूंढते वह दूर निकल गए और कुछ समय के लिए पुत्र को भूल गए। इधर एक राहगीर उस स्थान से निकल रहा था, तब अचानक उसकी दृष्टि उस बालक पर पड़ी, वह निस्संतान था. बालक को देखकर गद्-गद् हो गया, फिर बालक को उठाया और घर चला आया, बालक के घर आने पर घर धन-धान्य से भर गया और प्रसन्नताओं से उभर गया। यहां बालक पानप जी ने अपना जीवन आरंभ किया। माता-पिता की देख-रेख में शिक्षा प्राप्त की और तेरह वर्ष की आयु में पिता श्री के साथ रहकर राजगीरी सीख ली।

एक दिन बालक पानप देव जी महाराज अपने घर के पिछवाड़े में एक एकांत स्थान पर चुपसाध बैठे थे, ऐसे में उनके हृदय में तरह-तरह के विचार फूटने लगे, तब वह ईश्वर स्वरूप का आनंद लूटने लगे, इस आनंद को लूटते-लूटते चिरकाल हो गया, तब एक दिन उन्हें ईश्वर के गुप्त खजाने का ज्ञान हो गया किन्तु गुरु के बिना ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती, गुरु ईश्वर के दूत हैं, जो मानवी कुम्भ को हरिनाम से निर्मल बनाकर हरि का पथ दिखाते हैं और फिर उसी में लीन होने की जुगत बताते हैं। अब उन्हें एक स्वच्छ निर्मल छवि बोले गुरु की आवश्यकता थी। जब सच्ची लगन लग जाती है तो उसकी आस पूर्ण होती है। जब भक्त ध्रुव को ईश्वर की सच्ची लगन लगी तब जगत्पति जगदीश्वर जी ने ब्रह्मापुत्र देवऋषि नारद जी को अपना दूत बनाकर उसके पास भेजा और पांच वर्ष की आयु में उसे अपना सम्पूर्ण ज्ञान दे दिया। नारद जी ने उस अबोध बालक को प्रभु मिलन का मार्ग-गुरुमंत्र 'ओऊम नमो भगवते वासुदेवाय" रटा दिया और सच्चिदानंद महाराज का परम धाम दिखा दिया।

इस अनमोल वाणी को सुनकर बालक पानप जी पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। तब वह रात दिन गुरु मिलन के उपाय ढूंढने लगे, ऐसे में उनकी भेट कबीर पंथी एक संत से हुई। संत जी ने उन्हें देखते ही तथा चेहरे को पहचानते हुए कहा हे

उद्यमी बालक ! तुम्हारे भीतर प्रभु मिलन की तीव्र जोत जग रही है। अतः तुम्हें सद्‌गुरु की आवश्यकता है। इधर आओ। हमारे वचनों पर कान लगाओ, जाओ। यहां से तिजारा गांव जिला अलवर की डग अपनाओ। संत मग्नी राम जी महाराज जैसे महामनीषि को अपना गुरु बनाओ। वह झूराज नामक भड़भूजा के घर रहते हैं और मौन रहकर हरि की उपासना करते हैं, उनके नेत्रों से हरि नाम का रस छलकता है तथा जिव्हा से बड़ा कठोर एवं कटु वचन निकलता है, जो सहन न हो पाता है। लोग उन्हें उन्मादी जानकर दूर रहते हैं। वह भी इसी के लीन रहकर ईश्वर की उपासना में चूर रहते हैं। तुम तुरंत जाकर उनके चरण थाम लेना। जब तक शिष्य न बनाए चरण छोड़ विश्राम न लेना। वह कितने ही कटुवचन बोले-सुनते रहना। कुछ न कहना।

बालक पानप जी ने वैसा किया। इस पर गुरु जी ने प्रसन्न होकर बालक को चरणों से उठाकर गले लगाया और नाम की दीक्षा देकर लोक कल्याण हेतु वरदान सुनाया। सच्चे गुरु को पाकर बालक पानप जी धन्य-धन्य हो गए। मनोकामना पूरी हुई, हृदय कमल खिल गया, गुरु का आसरा मिल गया। तब गुरु जी के आग्रह से ग्रामवासियों के उद्धार हेतु अपने गांव लौट आए।

दोहा : लोगन के कल्याण को, आ गए अपने धाम।

राम नाम का अमर रस, तब बांटा निष्काम।। गुरु आशिष को पाए के, पानप बन गए पीर। अब जो आते पास में, उनकी हरते भीर।। ग्रामवासियों की हुई, अब निर्मल तकदीर। "लाल" दुःखों की कट गई, गले पड़ी जंजीर ।।

भक्ति स्थल

दोहा : भक्ति स्थल कैसा होए, पानप करे विचार।

तब सूने वनखण्ड में, लिया चौकड़ा मार।।

घर से नाता तोड़कर, जपते हैं करतार। जिसकी आज्ञा में चले, यह सारा संसार ।।

गुरु कृपा से मिल गया, उनको मोक्षद्वार।

जन सेवा ने कर दिया, जग जीवन निस्तार ।।

बालक पानप देव जी महाराज ने घर से नाता तोड़कर, अपने माता-पिता को छोड़कर गांव से थोड़ी दूर पर एक सूनसान एकांत स्थान का चयन किया, फिर अपने हाथों से एक थड़ा साहिब की स्थापना कर अपना जीवन गुरु भक्ति को समर्पित कर दिया। जिस सर्वशक्तिमान प्रभु की आज्ञा में सारा संसार चल रहा है,

गुरु कृपा से उसे अपना सर्वत्र अपर्ण कर दिया। गुरु सेवा, मात-पितु सेवा तथा जन सेवा इसी को अपना आधार माना। इसे ही परमात्मा का सच्चा मार्ग जाना। अब जो भी उनके पास कामना लेकर आता, उनसे तुरंत मनवांछित फल पाता। ऐसे में उनकी प्रसिद्धि दूर-दूर तक हो गई, फिर दूसरे गांव से लोग भी समस्याएं लेकर आने लगे और उचित समाधान पाने लगे।

इधर उनके गुरु मग्नी राम जी के कानों में अपने शिष्य की शुभ खबर पहुंची। तब अपने धाम को छोड़कर अपने तेजस्वी शिष्य को आशीर्वाद देने आए। सतगुरु मग्नी राम जी अपने शिष्य को थड़ा साहिब पर सुशोभित देखकर बड़े प्रसन्न हुए। बालक पानप देव जी महाराज गुरु कृपा से सभी कार्यों में निपुण थे। वह सभी को मनचाही भेटें दे रहे थे और लेने वाले धन्य पानप-धन्य पानप करके ले रहे थे। गुरु की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। ऐसे में गुरु ने शिष्य के शीश पर वरद् हस्त रखकर आशीर्वाद तथा मानव सेवा की शुभ प्रेरणा दी। हे जीवात्मा रक्षक। अब मानव कल्याण के लिए धामपुर जिला बिजनौर चले जाओ और वहां जाकर सत्य पथ से भूले भटके प्राणियों को परम तत्व के सत्य का बोध कराओ, वहां की जनता को कलयुग के घोर अंधेरे से बचाओ। सभी को भाईचारे का पाठ पढ़ाओ, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी को एक की संतान बताओ। अपने गुरु की वाणी को सुनकर बालक पानप देव जी ने गुरु जी के चरण पकड़ लिए फिर कुछ समय उपरांत गुरु जी से आज्ञा लेकर लोक कल्याण को निकल पड़े।

दोहा : पानप देव जी चल पड़े, अब धाम पुर की ओर।

हृदय में विश्वास है, होंगे ना कमजोर।।

गुरु का सिर पर हाथ है, मन आनंद विभोर। कौन बाधक पथ का है, किसमें इतना जोर।।

उसकी जग में जीत है, सतगुरु जिसकी ओर।

उसके जीवन काल में चढ़े न दुःख की भोर ।।

तू भी गुरु मनाए के, बन मानव सिरमौर। "लाल" उसी की जीत है, जिस गुरु हाथ दी डोर ॥

धाम पुर नगर का उद्धार

दोहा : धाम पुर में जैसे ही, पानप पैर टिकाए।

धन्य-धन्य सब हो गया, जन-जन मंगल गाए।।

सत्ता नवाबी छट गई, सुखमय सब नर-नार।   पानप जी के कर्म ने, सबका किया उद्धार।।

22 / बापू धाम के मीठे बोल

बाबा पानप देव जी महाराज अपने गुरु जी की आज्ञा शिरोधार्य करके तथा गुरु वचनों का पालन करके धाम पुर नगर में आए। उस समय धाम पुर में नवाबी शासन था। धाम पुर का क्षेत्र छोटी-छोटी रियासतों में बटा हुआ था। रियासतों की जनता नवाबों के अत्याचारों से बड़ी दुःखी थी। नवाब के अधिकारी अपनी मनमानी कर रहे थे। उनका दंड क्षेत्रवासी भर रहे थे। कहीं भी सुख शांति न थी। समस्त जनता खान-पान वस्तुओं से भी परेशान थी। सरकारी दुकानें भी शासन की आज्ञा से खुलती व बंद होती थी। दीन दुखियों की दुदर्शा थी, कोई कहने वाला और न कोई सुनने वाला था। ऐसी दुखदाई घड़ी में बाबा पानप देव जी महाराज ने अपने पैर धाम पुर नगर में जमाए और जन-जन के दुःख मिटाए। बाबा जी ने सभी धर्मों के पाखण्डी ठेकेदारों को ललकारा और दीन दुखियों को उनके चंगुल से उभारा। बाबा जी को जनता में जागृति लाने के लिए चमत्कारी शक्ति का सहारा लेना पड़ा। वहां एक सेठ साहूकार जी का मकान निर्माण हो रहा था। सेठ जी को एक कुशल कारीगर की आवश्यकता थी। ऐसे में बाबा जी तुरंत इस कार्य में जुट गए। वह राजगीरी के चतुर खिलाड़ी थे देखते ही देखते दीवार खड़ी कर दी और सभी कारीगरों को पीछे कर दिया। सभी कारीगरों ने मिलकर उन्हें निकलवाने की युक्ति बनाई। एक दीवार टेढ़ी करके सेठ जी से चुगली लगाई और आपको डांट पड़वाई। बाबा जी ने कटुवचनों पर ध्यान न देकर शांत मन रखा और तनिक भी क्रोध न किया फिर बड़े प्रेमपूर्वक दीवार पर हाथ फेर कर सेठ जी से बोले-दीवार कहां से टेढ़ी है? उनके हाथ फेरते ही दीवार सीधी हो गई। इस चमत्कार को देखकर चुगलखोर अपनी करनी पर पश्चाताप करने लगे और अपनी भूल की क्षमा मांगने लगे। सेठ जी भी कटुवचनों के कारण बाबा जी के चरणों में गिर पड़े और क्षमा याचना करने लगे। तब सेठ जी ने वह मकान बाबा जी को भेंट कर दिया और वहां धर्मशाला बनाने को आग्रह किया। अब वह मकान पानप महल के नाम से प्रसिद्ध है। वहां निशदिन अमृत वाणी का प्रवाह चलता है, जो मानव समाज को भव सागर से पार उतरने का मार्ग बताता है।

यहां बाबा पानप देव जी महाराज की मुख्य गद्दी सुशोभित है। यहां नित्यप्रति भक्तजन आते हैं और मन की मुरादें पाते हैं।

दोहा: पानप देव की लीला, अद्भुत खेल   रचाए।

कौन जाने किस पल में, कौन रूप बन   जाए।।

दीवार सीधी हो गई, केवल हाथ लगाए। जादूगर के भेद को, कोई समझ न पाए।। चमत्कार को नमस्कार, इतना समझ में आए।

"लाल" झुकाके शीश को, संतों के गुण गाए।

बापू धाम के मीठे बोल / 23

बाबा जी का समाधि लेना

दोहा :पानप देव समाधि ले गए प्रभु के देश। जाते-जाते वे गये, हम सबको उपदेश।।

राम नाम भजते रहो, यही उत्तम संदेश।

हम तो सुरपुर जा रहे, दूजा धरने भेष।।

बाबा पानप देव जी महाराज अपने जीवन काल के सभी कार्य पूर्ण करके, सभी श्रद्धालुओं के दुःख हर के एक ओम प्रभु का जाप करते हुए, योग की सहायता से उस सचस्वरूप में सदैव के लिए लीन हो गए। आपने अन्तिम दिवस धामपुर बिजनौर में व्यतीत किये और यही से अपने प्राण पखेरू सचखण्ड के विमान पर चढ़ाकर विदा किये। आपके अन्तिम दिनों में आपके सद्‌गुरु संत मग्नी राम जी भी आपके पास थे।

संवत् 1830 विक्रमी फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को आपने इस पुरातन चोले का त्याग किया और जाते-जाते अपने दूसरे जन्म का ज्ञान दिया। हम पंजाब के मांझा क्षेत्र में बारह वर्ष की अवस्था में प्रकट होंगे, तब हम परमहंस ठाकुर जी के नाम से पुकारे जाएंगे। इसके उपरांत इस पंथ को आगे बढाएंगे। शेष ओम शांति-शांति-शांति।

दोहा : बाबा ने इतना कहा, तब लिया विश्राम।

कोई भूल न पाएगा, उनके किए शुभ काम।।

जब तक रहेगी सृष्टि, उनका रहेगा नाम। "लाल" बाबा को मन से, सदा करें प्रणाम।

तर्ज-मेरे देश की धरती सोना उगले उगले हीरे मोती

सुनो सुनो रे सुनाएं, सतगुरु, श्री पानप देव की कहानी सुनो सुनो रे सुनाएं......

इस महामुनि की अमर कथा तो, अत्यन्त पावन व सुंदर है। इसे ब्रह्मा-विष्णु-शिव ने भी, माना यह सुखों का सागर है।। इसकी कीर्ति नारद ने भी, सारे युगों में बखानी है। यह गाथा है इतनी पावन, ज्यों देवनदी का पानी है।।

सुनो सुनो रे सुनाएं......

यह कथा पहुंचाती मंजिल तक, जो इसका ध्यान लगाते हैं। यम बंधनों से बच जाते हैं. जो पानप देव मनाते हैं।। हरनाम बापू के मंदिर में, इसे बापू भक्त सुनाते हैं।

जो प्रेम से इसको सुनते हैं, वह भव सागर तर जाते हैं। सुनो सुनो रे सुनाएं.....

श्री बापू धाम मंदिर का तो, दुनियां में रंग निराला है। यहां सदा बाबा की जय होती, सब घट में ओम उजाला है।। हर रविवार की मधुर सभा में, यहां पानप जी भी आते हैं। जिनकी दृष्टि में समर्था है, वह उनका दर्शन पाते हैं।

सुनो सुनो रे सुनाएं ......

पानप देव के उपदेशों ने, हम सबको ऐसा ज्ञान दिया। उस जगकर्ता का ध्यान करो, जिसने यह जीवन दान दिया।। अनमोल वचन यह ब्राह्मण के, तुम आत्म राम को पहचानो। "लाल" तुम्हारे भीतर है जो, तुम उस को ही अपना जानो।।

सुनो-सुनो रे सुनाएं....

॥ काव्य लहरी ॥

सुबह सवेरे नूर के तड़के, बुलबुल से तुम गाना सीखो। इस समय को सफल बनाकर, ओम को शीश झुकाना सीखो।। यदि जीवन को सुखी बनाना, घर के सारे झगड़े छोड़कर। मन बर्तन को स्वच्छ बनाकर, ओम से प्रीत लगाना सीखो।।

तर्ज-फूल तुझे भेजा है खत में-सरस्वती चन्द्र

जागो बापू भक्त प्यारो, भोर ने ली अंगड़ाई। सिद्ध पुरुष सब जाग गये हैं, तुम भी नींद त्यागों भाई।।

जागो बापू भक्त प्यारो .....

ओम शहनशाह ध्वज बुलाए, बापू जी का पथ दर्शाए। इसी ओर चले आओ भक्तों, भक्त जनों ने हरि यश गाए।। इस सुवासित मधुर समय में, तुम भी ओम की करो बढ़ाई। सिद्ध पुरुष सब जाग गये हैं,

तुम भी नींद त्यागो भाई।।

जागो बापू भक्त प्यारो .....

तारे खेल-खेल रजनी से, अलविदा गगन से कहते। भानु की किरणों में वह तो, अधिक देर तक टिक न पाते।। ऐसा कहते फिर संग होंगे, जब भानु न देंगे दिखाई। सिद्ध पुरुष सब जाग गये हैं, तुम भी नींद त्यागो भाई।। जागो बापू भक्त प्यारो.....

बापू धाम के मीठे बोल/25

प्रभु द्वारे भक्त खड़े हैं, शीश झुकाकर चरणन में। दिनचर्या की आज्ञा दे दो, नाथ हमारे जीवन में।। प्रातः की आशिष भली है, वेदों ने भी यह बताई। सिद्ध पुरुष सब जाग गये हैं, तुम भी नींद त्यागो भाई।।

जागो बापू भक्त प्यारो.....

पंछी परिंदे सुर में गाते, ओम प्रभु को भजलो भाई।

इसी नाम ने गणिका पापिन, भवसिंधु से पार लगाई।। राम नाम की महिमा गाकर, अहिल्या ने मुक्ति पाई। सिद्ध पुरुष सब जाग गये हैं, तुम भी नींद त्यागो भाई।।

जागो बापू भक्त प्यारो......

अंत समय में अजामिल ने, ओम नाम की महिमा गाई। इसी नाम की रट लगाकर, यमदूतों से देही छुड़ाई।।ओम नाम से मुक्ति मिलती, यह उपदेश बड़ा सुखदाई। सिद्ध पुरुष सब जाग गये हैं, तुम भी नींद त्यागो भाई।।

जागो बापू भक्त प्यारो.....

नदियां नाले कल-कल करते, ओम नाम की रट लगाते। जल बरसाने वाले बादल, ओम नाम को हिए बसाते।। सुन लो बापू भक्त प्यारों, ओम नाम की करो कमाई। सिद्ध पुरुष सब जाग गये हैं, तुम भी नींद त्यागो भाई।।

जागो बापू भक्त प्यारों.....

जीवन मेला लुट जाएगा, यदि नींद ना त्यागोगे। पशु की भांति सारे दिन भर, इधर-उधर ही भागोगे।। "लाल" उसी ने सब कुछ पाया, जो बापू की शरणाई। सिद्ध पुरुष सब जाग गये हैं, तुम भी नींद त्यागो भाई।

जागो बापू भक्त प्यारों.....

संत बड़े उपकारी

बाबा मन के चक्षु खोल के, सदा यहां पर आया करो। उच्च कोटि के इन संतों का, निशदिन दर्शन पाया करो।। अहंकार और लोभ छोड़कर, इनको शीश झुकाया करो। चार दिनों की इस जिन्दगी को, समर्थ सफल बनाया करो।।

तर्ज-दुनिया दर्शन का है मेला

बाबा संत बड़े उपकारी, बाबा संत बड़े उपकारी। संतजनों की महिमा न्यारी, यह जानती दुनियां सारी ।। बाबा संत बड़े उपकारी.....

पानप देव और ज्वाला सिंह, यही राम शाम बनवारी। यही है ब्रह्मा, यही है विष्णु, यही है शम्भु अवतारी।।अपने भक्त की भीर मिटाने, चले आते मार उड़ारी।

बाबा संत बड़े उपकारी.....

परमहंस श्री ठाकुर जी की, उज्जवल जोत हितकारी। ओम नारायण बापू जी तो, पूजन के हैं अधिकारी।। इन संतों का दर्शन करके, मिले जन्म-मरण छुटकारी।

बाबा संत बड़े उपकारी.....

श्रद्धाराम गुरदास राम जी, दया धर्म के पुजारी। सतपथ के अनुरागी बनकर, सच की जिन्दगी गुजारी।।

राम नाम की माला लेकर, जिन-जन की नाव उभारी।

बाबा संत बड़े उपकारी.....

भानुदत्त जी के चेहरे पर, नित चढ़ी रहती खुमारी। इस संतों ने हरदम मुख से प्रभु की वाणी उचारी।। युगों-युगों तक अटल रहेगी, इनकी वाणी सुखकारी।

बाबा संत बड़े उपकारी.....

हर भगवान की हर इक इक इच्छा, करती है जग कल्याण। जग निस्तारी इस संत का, हर कर्म है सुख प्रधान ।। "लाल" धाम पर कूक रहा है, अब सुनलो सब नर-नारी।

बाबा संत बड़े उपकारी.....

गुरु पूजन दिवस

जय-जयकार करो सब मिलकर, ओम सच्ची सरकार की। चार युगों के इष्ट देव की, राम रूप अवतार की। गुरु पूजन को आए हैं, आज यहां सब लोग। सावन रंग दिखाए हैं, खूब भले संजोग।। गुरु चरणों

को परस के, करो ओम का ध्यान। प्रथम पूजकर ओम को, फिर पूजो भगवान।

तर्ज-जान सके तो जान, तेरे घट में छिपकर बैठे देख तेरे भगवान

करो रे ओम प्रभु का ध्यान, मिलेंगे तुम्हें शुभ वरदान। जप-तप तीर्थ योग ध्यान में, यह नाम सदा विद्यमान ।।

करो रे ओम प्रभु का ध्यान ....

यह ओम अपनी जिन्दगी है, यह ओम अपनी आत्मा।

यह ओम हैं इस जग का अंकुर, यह ओम ही है परमात्मा।।

यही हैं हम सबके भगवान ....करो रे....

ओम नाम सुख का भण्डार है, यही जग मूलाधार है। इस नाम की ऐसी लीला, जो बड़ी अपरम्पार है।। यही हैं सब रत्नों की खान.... करो रे.......

ओम ही जड़ चेतन शासक है, ओम ही जन-जन पालक है। अपने नयना खोल देख ले, यही जगत संचालक है।। यही लेते देते प्राण ....करो रे....

इस जीवन को सफल बनाले, ओम नाम को मन बसा ले। धर्मराज की धर्म सभा में, दुष्कर्म से मुक्ति पाले।। यहीं हैं ऋषियों के फरमान....करो रे.....

गुरु शरण में आके देख ले, सिर को झुकाके देख ले। थड़ा साहिब की पावन धूल, सिर पर चढ़ाके देख ले।। "लाल" ओम जी देंगे वरदान.... करो रे.........

(परमहंस बाबा ठाकुर जी की महिमा)

दोहा :वह धरती हरियावली, संत जहां पर आए।

मानवता के बीज बो, जिन सब भेद मिटाए ।।

भक्तवत्सल ठाकुर जी, भक्तन के सिरमौर। विभिन्न रूप के स्वामी, ग्राम नरवड़ ठौर।। इस संत का दर्शन तो, जगजीवन आहार। जिसको दर्शन दे दिये, वह उतरा भव पार।। तरह-तरह के रूप धर, तार रहे संसार।

दर्शन करलो प्रेमियों, जो चाहो निस्तार।। तीन लोक में निखरा, इनका हर्ष अपार। देवा परी सब कर रहे, इनकी जय-जयकार ।।

संत पुरुष ठाकुर जी की महिमा बड़ी निराली है, शीघ्रता से समझ न आने वाली है। संत पुरुष पानप देव जी ने अपना मानवी चोला छोड़ने से पूर्व अपने शिष्यों को संकेत दिया कि वह अपने आगामी चोले में ठाकुर जी के नाम से प्रसिद्ध होंगे, पंजाब के मांझा क्षेत्र में बारह वर्ष की आयु लेकर प्रकट होंगे। हमारा शरीर हृष्ट पुष्ट गौरवपूर्ण होगा पांव में काठ की चरण पादुकाएं, सिर पर सुनहरी जटा और मुखमण्डल पर खूब आंनदिता होगी, हम हाथ मे चिमटा लेकर स्थान-स्थान पर भ्रमण करेंगे। भक्तिपथ से विमुख प्राणियों को उस परम तत्व का अटल सुमिरण देंगे। हम पूर्व जन्म की भ्रांतियों को पूर्ण करके अलौकिक आनंद उपजा कर, इस पंथ को आगे बढ़ाऐंगे। हे मेरे विश्वासी श्रद्धालुओं। हम अपने धाम पर सदैव ज्ञान की गंगा बहाएंगे। तुम हमारा यह ग्रंथ जिसमें हमारी वाणी अंकित है, साथ लेकर आना, हम तुम्हें बाल रूप में मिलेंगे और इस ग्रंथ की वाणी को आगे बढ़ाकर देश भर में इस पंथ की कीर्ति बढ़ाएंगे। शेष हरि ओम तत-सत्।

दोहा: इतना कह पानप देव, गये जगत को छोड़।

अपने प्रिय शिष्यों से, गए वह नाता तोड़। शिष्य भी उनकी डग में, अपने नयन बिछाए ।।

एक दिवस तो आएंगे, पानप देव रघुराए ।। ठाकुर जी का रूप धर, दिये वचन अनुसार।

पानप देव जी आ गए, फिर करने उपकार ।।

सेवक वसाबा सिंह का, आ खटकाया द्वार।

भक्त द्वारा खोल के, करो संत दीदार ।

पूर्व जन्म के दिये वचनानुसार परमहंस ठाकुर जी महाराज अपने सच्चे अनुयायी भक्त वसाबा सिह जी के द्वार पर आकर जोर-जोर से पुकार-पुकार कर कहने लगे-वसाबा सिंह जी द्वार खोलो। हम आ गये हैं। हमने तुम्हारे हृदय की

पुकार सुन ली है और तुम्हारे द्वार पर दस्तक दी है। वसाबा सिंह कहां हो। जब किसी प्रकार का कोई उत्तर न मिला तो जीने के रास्ते से उसके चौबारे के सामने जा पहुँचे। यही वसाबा सिंह जी का वास्तविक घर था। वसाबा सिंह जी ठाकुर जी के प्रमुख सत्संगी थे। वह उनके मुखारबिंद से अनेक बार एक ओम प्रभु की कथा कहानियां सुन-सुनकर प्रभावित हो चुके थे। वह ठाकुर जी की प्रतीक्षा में सदैव लीन रहते थे और उनके आवन की राह में नयन बिछाये रहते थे।

इधर मधुर-मधुर स्वर में ठाकुर जी ने फिर दस्तक दी, वसावा सिंह जी द्वार खोलो। हम आ गए हैं। अपने इष्टदेव की टेर सुनकर वसाबा सिंह जी ने द्वार खोला। तब अपने चहेते स्वरूप को देखकर धन्य धन्य हो गए, आँखें चकाचौध हो गई। मन का मुरझाया कमल खिल गया, साक्षात जगत जगदीश्वर मिल गया। आज जन्म सफल हुआ, उपासना का फल मिला। आंखों से प्रेमाश्रु बहने लगे, जो सच्ची प्रीति जताने लगे। तब आनंद विभोर होकर युगल चरण को थाम लिया। ऐसे में प्रेमाश्रुओं से चरणों को पखारने लगे और गुरुदेव की जय-जयकार बुलाने लगे-धन्य हो गुरुदेव। धन्य हो।

परमहंस जी ने भक्त की ऐसी प्रीति को देखकर उसे तुरंत गले से लगा लिया और जन्म भर का विछोह मिटा दिया। तब उसे बड़े प्रेमपूर्वक नाम की दीक्षा दी, सुरत, सुमिरण, साधना, उपासना आदि भक्ति की श्रेष्ठ युक्ति दी। तब भक्त को बांहों में लेकर कहा-वसाबा सिंह जी तुम्हारा हमारा जन्म-जन्म का साथ है। इसका साक्षी यह धरती और आकाश है। हम तुम्हारे बिना और तुम हमारे बिना किसी काम के नहीं, हमारे मन को तुम्हारे बिना कहीं विश्राम नहीं, तुम्हें हमारे बिना कहीं आराम नहीं। अच्छा। अब इस वार्तालाप को छोड़ो और हमें जाने की आज्ञा दो। हम तुम्हारे प्रेम बंधन में बंधे यहां आये हैं।

दोहा : हरि भक्त के वश में है, भक्त वचन निभाए।

टेर सुनी जब भक्त की, दौड़े-दौड़े आए।। प्रहलाद की टेर सुन, खंभे से प्रकटाए।
हिरणाकुश को मार कर, भक्त के दुःख मिटाए।

जब गज की टेर सुनी, तो नंगे पांव धाए। गज छुड़ाया ग्राह से, यम को दूर भगाए।
द्रौपदी की टेर सुन, साड़ी हाथ उठाए।

भरी सभा में राख ली, दुष्ट मुंह की खाए।। तुम सदा मेरे हो, मेरे जिगर समाए।
विपदकाल में भक्त तो, हमको सदा बुलाए।

भक्त वसाबा सिहं जी अपने गुरुदेव के प्रशंसापूर्ण वचनों को सुन-सुन कर झुके जा रहे थे और गुरुदेव वचन सुनाये जा रहे थे। जिस प्रकार डाली फल लगने पर झुक जाती है, ठीक उसी प्रकार वह भी गुरु वचनों के बोझे से दबे जा रहे थे। कुछ समय उपरांत परमहंस जी ने अपनी वाणी को विराम

दिया और भाई जी को अपने गुप्त ठिकाने का पता दिया। हम नरवड़ ग्राम की पूरब दिशा में घने वन में अपना आवास रखते हैं। जब जी आये वहां चले आना। हम वहीं मिलेंगे। अपने इष्टदेव को प्रसन्नचित देखकर भक्त ने अपने मन की कह डाली और उनकी दोनों चरण पादुकाएं मांग ली। भक्त वसाबा सिंह जी ने चरण पादुकाएं अपने चौबारे में सुसज्जित करके राम भक्त भरत की भांति पूजा की अमूल्य वस्तु बना ली और प्रतिदिन उनकी सेवा में लीन रहकर जिन्दगी अपर्ण कर दी। चरण पादुकाएं अब भी चौबारे पर सुरक्षित पड़ी है, भक्तजन आते हैं और उनको माथा झुकाते हैं।

दोहा : चरण पादुका संत की, पाप जन्म के धोए।
इसकी निशदिन सेव से, करनी निर्मल होए।।
यह संत का दपर्ण है, संत भक्त बतलाए। इसे पूजकर भक्त तो, भव सागर तर जाए।।
इसकी आज्ञा में चले, भक्तों का संसार। "लाल" झुकाकर सिर इसे, नमों हजारों बार।।

संत से अग्न भयभीत

दोहा : संत से अग्न डरे, सदा रहे भयभीत। हाथ जोड़कर संत के, वह भी गाती गीत ।।
संत अटल हैं धर्म पर, चलें धर्म अनुरीत। पवन पाणी बैसंतर, सभी संत के मीत।।

संतों की भक्ति में उस सर्वशक्तिमान की शक्ति है। इसीलिए उसके सामने बड़े-बड़े अभिमानियों की दुगर्ति है। संत अपने धर्म पर अटल रहकर जगत्पति की आज्ञा का पालन करते हैं। इसीलिए पवन पानी अग्नि आकाश पाताल सभी संत के भय में रहते हैं। संत अपनी मौज में कभी-कभी ठिठोलियां भी करते हैं। ऐसी एक घटना नरवड़ ग्रामवासी भाई स्वरूप सिंह जी से ठाकुर जी महाराज ने की धहपुरा गांव जो नरवड़ ग्राम की सीमा से मिला है। वहां के वासी भाई स्वरूप सिंह जी अपने खेतों की सिंचाई रहट के पानी के द्वारा करते थे। अकस्मात् उधर से परमहंस ठाकुर जी महाराज मौज मस्ती की धुन में आ रहे थे। ऐसे में उनकी दृष्टि भाई स्वरूप सिंह जी पर पड़ी, तभी मन में ठिठोली सूझी। बैलों को रहट

से खोल दिया। सिंचाई का कार्य रुक गया। भाई जी संत जी की इस करनी को चुपसाध देखते रहे, कुछ समय उपरांत बैलों को रहट से जोड़ दिया। संत जी ने फिर बैलों को खोल दिया। इस प्रकार बार-बार ऐसा होता रहा। भाई जी इस व्यवहार से बड़े व्याकुल हुए। तब उनके मस्तक में एक घृणित युक्ति सूझी। संत जी तो बारह वर्षीय बालक थे और भाई जी हष्ट पुष्ट यौवन भरपूर व्यक्ति थे। तत्काल संत जी को बाहों में लेकर रस्सी से बांध लिया फिर घास फूस को एकत्रित करके अग्नि प्रचण्ड कर संत जी को उसमें डाल दिया और मन ही मन विचार लिया। अब न बांस रहेगा, न बांसुरी बजेगी। किन्तु संत जी तो अपनी लीला रचा रहे थे तुरंत अग्नि को अपने वश में कर लिया। रस्सी से मुक्त होकर, सुंदर स्वरूप को धार कर, हाथ में चिमटा लिये, दोनों पांव में पादुकाएं पहने ठहाका मारते हुए दिखाई दिये। अग्नि उनका कुछ न बिगाड़ पाई, क्योंकि अग्नि भी उन्हीं की दासी है। भाई जी इस चमत्कार को देखकर लज्जा के मारे पानी-पानी हो गए। तब हाथ जोड़कर क्षमा मांगकर संत जी के चरण पकड़ लिये और बारम्बार चरणों की स्तुति करने लगे।

दोहा : संत चरण मन भा गये, छटा घोर अंधकार।

संत यह विष्णु रूप है, ईश्वर का अवतार ।। मैं मूर्ख समझा नहीं, भटका था बेकार। मूर्खपन में कर दिया, इन पर अत्याचार ।। अब मैं पकडू कान को, विनती करूं हजार। संतों के उपकार पर, तन मन करूं निसार ।। अब इच्छा है नाथ की, करें न करें उद्धार।

मैं चरणों में आ पड़ा, तजकर सब हंकार ।।

देव पुरुष सच स्वरूप परमहंस संत ठाकुर जी महाराज की स्तुति करते-करते भाई जी थके नहीं, बोलते-बोलते कहीं रुके नहीं। हे दीनबंधु। आपने मेरे मन के कपाट खोल दिये, मैं धन्य धन्य हुआ। हे कृपासिंधु । ऋषि-मुनि आपके चरणों को स्पर्श करने के लिए दिन रात तरसते हैं, आयु भर तपस्या करते हैं फिर भी चरण न परस पाते हैं। मैं कितना भाग्यशाली हूँ जो आपके चरणों में बैठकर विनय सुना रहा हूँ।

भक्त की करुणामयी वाणी को सुनकर संत जी का हृदय पसीज गया। तब उसे चरणों से उठाकर गले से लगाकर सब प्रकार से सुख सम्पद किया।

दोहा : संत पुरुष ने बदल दी, उसकी तब तकदीर।

गले लगाकर भक्त का, पावन किया शरीर।।

अब वह कष्ट न पाएगा, कष्ट दिये सब चीर।

"लाल" संत ने सहज में, उसकी हर ली पीर।

दृढ़ विश्वास

दोहा :स्वरूप सिंह के घर में, अब ठाकुर का वास।

ठाकुर जी श्री हरि हैं, हुआ वृढ़ विश्वास ।। ठाकुर सा इस जगत में, दूजा ना है कोए। जो समझे इस भेद को, वह ठाकुर का होए ।।

संत पुरुष एकांत में बैठकर शुद्ध हृदय से उस सच्चिदानंद परमेश्वर का सुमिरण करते हैं। वह अपने मनमंदिर में उस एक ओम प्रभु का नाम जपते हैं। वह मन-वचन व कर्म से संसारिक कामनाएं छोड़कर, झूठे सम्बन्धों को तोड़कर उस एक से नाता जोड़ लेते हैं और अपना सम्पूर्ण जीवन उस एक की सेवा में अर्पित कर देते हैं। संत कभी निराश नहीं होते। उनका सारा जीवन परमानंद की प्रसन्नताओं से भरपूर होता है।

संत ठाकुर जी महाराज एक निर्जन वनखण्ड के कोने में गुप्त रूप से रहते थे। वह अपने विश्वासी अनुयायियों के अतिरिक्त किसी को भी अपना पता न देते थे। उनका आहार केवल पवन था, वह अन्न आदि का सेवन न करते थे। वह कभी-कभी अपने बाल सखाओं के साथ जो वनखण्ड में भेड़ बकरियाँ चराने आते उनके मनोरंजन के लिए विचित्र लीलाएं रचते। एक बार ठाकुर जी ने अपने बाल सखाओं से कहा-आज हम तुम्हें अग्नि का खेल दिखाते हैं। तुम सभी मिलकर लकड़ियों का ढेर लगाओ। जब ढेर लग गया। तब ठाकुर जी ने उस ढेर को आग लगवा दी और फिर सबके देखते ही देखते तेज अग्नि में प्रवेश कर गए। बाल सखा रोने चिल्लाने लगे। हा हाकार मच गया, कोई कुछ न कर पाया। लकड़ियां जल कर राख हो गई। ठाकुर जी का नाम निशान न रहा। सब रोते पीटते अपने-अपने घरों को लौट गए। इस दुखद घटना को सुनकर ठाकुर स्नेही रो रोकर आकाश पाताल हिलाने लगे। तब किसी सयाने ने कहा-बालकों की बात पर विश्वास न करो, चलो। घटना स्थल पर चलकर देखें। सत्य क्या है और असत्य क्या है। तब सभी घटना स्थल पर पहुँचे। अपनी आंखों को बार-बार मल-मलकर देखने लगे। ठाकुर जी जीवित खड़े थे और चिमटा बजा-बजाकर ओम नमः शिवायः, ओम नमः शिवायः महामंत्र का जाप कर रहे थे।

दोहा : ठाकुर जी के भाल पर, चमके कपिल हजार।

उनसे रोशन हो रहा यह सारा संसार ।। तैतीस करोड़ देवता, उनपर है बलिहार।
अग्नि की बिसात क्या, जो करदे प्रहार ।। ठाकुर जी तो मौज में, चिपटा रहे बजाए। "लाल" यह लीला उनकी, जोकि समझ न आए।

ठाकुर जी की ख्याति

दोहा: ठाकुर जी तो हो गये, सकल जगत विख्यात ।
अब तो उनके धाम पर, खलकत है दिन रात।।
वहां सदा होने लगी, मंगलमय बरसात। चहूं तरफ आनंद है, कहीं न दुःख की बात ।।
जो आता दरबार में, वह पाता सौगात । वहां सभी को मिल रही, हर मनभाती दात।

ठाकुर जी की प्रसिद्ध अब दूर-दूर तक फैल गई। उनके परम शिष्य स्वरूप सिंह जी व भाई चरण सिंह जी अब प्रतिदिन उनकी सेवा में लीन रहने लगे। भक्तजन ज्ञानोपदेश पाकर अपने जन्म को सफल बनाने लगे। ठाकुर जी के अध्यात्मिक ज्ञान और चमत्कारों की ख्याति शेरे-ऐ-पंजाब महाराजा रणजीत सिंह जी के दरबार तक जा पहुंची। महाराजा जी संत पुरुषों का हृदय से सम्मान करते थे। धर्म स्थलों की सेवा करना अपना सौभाग्य मानते थे। ऐसे में अपने एक प्रहरी को पत्र लिखकर ठाकुर जी महाराज को राजदरबार की शोभा बढ़ाने हेतु निमंत्रण दिया, ठाकुर जी ने निमंत्रण स्वीकार किया और महाराजा जी से भेंट करने चले आए। महाराजा जी ने बालस्वरूप जोगी को साधु स्वरूप जानकर स्वागत किया। उन्होंने साधु स्वरूप में कोई चमत्कारी लक्षण न देखा। जब ठाकुर जी विदा होकर जा रहे थे। तब तत्काल गुरु गोबिंद सिंह जी का रूप धार लिया। इस चमत्कार को देखकर महाराजा जी ठगे से रह गए। तब दौड़कर ठाकुर जी के चरण पकड़ लिये और नतमस्तक हो क्षमा याचना करने लगे फिर कहने लगे-ईश्वर स्वरूप मुझसे भूल हो गई। मैं आपको पहचान न पाया। आप साक्षात परब्रह्म है।

ठाकुर जी ने उन्हें उठाकर गले लगाया और राजकार्यों में वृद्धि का उपदेश देकर अपने धाम पर लौट आए। इधर ठाकुर जी के प्रेमियों के हृदय में दिन प्रतिदिन ठाकुर जी के चमत्कारों को देख-देख कर श्रद्धा आस्था और भक्ति की भावना बढ़ने लगी। सत्संग में सभी वर्गों के लोग हिन्दू-मुस्लिम व सिक्ख आने लगे और ठाकुर जी के प्रवचनों का लाभ उठाने लगे। एक दिन संगत ने प्रार्थना की हे सद्‌गुरु ! संत महाराज जी। आप खुले आकाश तले विश्राम करते हैं। यह स्थान सुविधाजन नहीं, यहां गर्मी, सर्दी, आंधी, वर्षा आदि का भय रहता है। यदि आज्ञा हो तो यहां पर मंदिर का निर्माण करा दिया जाए। ठाकुर जी ने भक्तों की प्रार्थना मान ली। इस पर ठाकुर जी ने सुझाव दिया कि सामने की ओर झाड़ियों तथा वृक्षों से ढ़का हुआ भू-खण्ड स्वच्छ बनाकर वहां मंदिर का निर्माण किया जाए। यह बात सभी को भा गई फिर तुरंत मंदिर समिति की स्थापना हुई, बाबा धर्म दास जी बाबा मेला राम जी और भाई लहरा सिंह जी को यह सब कार्य भार सौंपा गया।

मंदिर समिति की देख-रेख में कार्य आरंभ हुआ फिर कुछ खुदाई उपरांत मंदिर की नींव रखने का विचार हुआ। ऐसे में ठाकुर जी ने ओर खुदाई करने का आदेश दिया, ओर खुदाई करने पर एक पक्का आसन दिखाई दिया। दो चरण पादुकाई एक तुंबी, एक वरागन, एक चिमटा तथा हवन सामग्री की बहुत सी वस्तुएं प्राप्त हुई। इस पर ठाकुर जी ने कहा-यह हमारा बहुत पुरातन स्थान है। हम त्रेता युग में यहां बैठकर तपस्या करते थे किन्तु युग परिवर्तन उपरांत यह स्थान रसातल को चला गया था। अब खुदाई पर यह प्रकट हुआ है। तब यहीं पर नींव पत्थर रखकर कार-सेवा को आरंभ किया गया। ऐसे में दूर-दूर से संगते आकर कार-सेवा में सहयोग देने लगी। कार-सेवा में छोटे बड़े सभी वर्ग के लोगों ने सहयोग दिया। महाराजा रणजीत सिंह जी तथा उनके घनिष्ठ मित्र शाम सिंह अटारी वालों ने भी मिट्टी की टोकरियां शीश पर रखकर पूर्ण सहयोग दिया। पूरी रात यह कार्य चलता रहा। बाबा धर्म दास जी बाबा वसाबा सिंह जी और भाई प्यारा सिंह जी भी रात्रि भर इस कार्य में डटे रहे। ऐसे में उन्हें आकाश से उतरता हुआ एक प्रकाश पुंज दिखाई दिया, जिसमें देवगण विमान पर सवार थे। धरती पर पैर रखते ही उन्होंने कार-सेवा में भाग लिया और मंदिर की दीवार के तीन रद्दों की चिनाई की, फिर देखते ही देखते विमान पर सवार होकर अलोप हो गए। इस आश्चर्यजनक दृश्य को देखकर सभी अवाक रह गए। सो इस प्रकार इस मंदिर की स्थापना हुई. स्थापना उपरांत सर्वसम्मति विचार पर इस मंदिर का नाम राम झरोखा रखा गया। गहराई के कारण इस मंदिर की एक मंजिल भूमिगत तथा शेष मंजिले ऊपर हैं। ठाकुर जी की सभी पुरातन वस्तुएं इस मंदिर में सुशोभित हैं। ठाकुर जी के श्रद्धालु आते हैं और इनका दर्शन करके धन्य धन्य हो जाते हैं।

दोहा : मंदिर में सुसज्जित हैं, ठाकुर के सामान।

त्रेतायुग के संगी, जो इनकी पहचान।। चरण पादुका वरागन, चिमटा और पलंग। तूंबी सुर मिलावन की, राग-रागनी संग ।। यशोगान अब हो रहा, इनका देश विदेश। "लाल" प्रणाम दण्डवत, इनको करें हमेश।।

भक्त का क्रोध छुड़ाना

दोहा : अमृतसर से कुछ दूर, रहते मोती लाल।
ठाकुर जी की दया से, कुटम्ब था खुशहाल ।।
एक दिवस ठाकुर जी को, दिया निमंत्रण आए।
प्रभु आपकी दया से, पुत्र विवाह रचाए।।

दर्शन देने आपको, विघ्न पड़े न कोए।

"लाल" ऐसी आशिष दो, युग-युग शोभा होए।।

अमृतसर से कुछ दूरी पर चब्बा नामक ग्राम में पंडित मोती लाल जी नाम के एक ठाकुर भक्त जी रहते थे। उनका परिवार प्रत्येक कार्य में ठाकुर जी का सहारा लेता और साधांवाली धाम पर उपस्थित होकर प्रार्थना करता। ठाकुर जी की कृपा से उसके पुत्र का विवाह निश्चित हो गया। तब वह अपनी धर्म पत्नी सहित साधांवाली धाम पर ठाकुर जी को निमंत्रण देने आए। ठाकुर जी ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया और वचन दिया। हम अवश्य आएंगे फिर हंसते हुए कहा-बड़े आदमियों के बड़े काम होते हैं। क्या आप हमें पहचान लेंगे। पंडित जी ने हाथ जोड़कर कहा-क्यों नहीं। आप आएं और हम न पहचाने। ऐसा कदापि न होगा। तब ठाकुर जी ने कहा-हम आएंगे और अवश्य आएंगे। पंडित जी क्रोधी स्वभाव के थे। ठाकुर जी उनका स्वभाव छुड़ाना चाहते थे, इसलिए विवाह में आना चाहते थे।

तब एक कलंदर का भेष धार कर, कंधे पर चमड़े का थैला सजा कर, एक रीछ को तैयार कर, एक हाथ में रीछ की रस्सी तथा दूसरे में डमरू लेकर विवाह के दिन पंडित जी के द्वार पर पहुंचे और अलख का जयकारा जगाकर तथा डमरू बजा-बजाकर रीछ का खेल दिखाना शुरू कर दिया। जब खूब जमघट इकट्ठा हो गया। तब खेल बंद करके कहने लगे। अरे कोई जाओ। दुल्हे के पिता से कहो-यह रीछ भी भूखा है और हम भी भूखे हैं। हमें रोटी दें और हमारी आशिष लें। इस पर पंडित जी ने आकर कहा हमारे यहां पहले ब्राह्मणों को भोजन कराने का नियम है। हम क्षुद्रों को पहले भोजन नहीं देंगे। कलंदर ने फिर दो पग बढ़ाकर आंगन में प्रवेश किया और रीछ को नचा-नचाकर कहने लगे-नाच बेटा नाच। खूब मिलेगा। यजमान प्रसन्न होगा तो जी खोल कर देगा। इस पर पंडित जी ने क्रोध में कहा-यहां से बाहर चले जाओ। खाना नहीं मिलेगा। जब भण्डारा खुलेगा, तभी मिलेगा। जाओ। यहां से चले जाओ। हमारे कान न खाओ। तब एक बूढ़े ने कहा-यह अलमस्त कलंदर है इसे आज के दिन निराश न लौटाओ। घर में देखो यदि दो चार बासी रोटी पड़ी है तो इसे देकर विदा करो। पंडित जी बड़े क्रोध से भीतर गए और कुछ बासी रोटियां लाकर उसे देते हुए बोले-कहां से आ जाते हैं मांगने वाले। न समय देखते हैं न दिन देखते हैं।

कलंदर के रूप में ठाकुर जी यह सब सुनकर भी अपने भक्त के प्रति कटुवचन न बोले फिर भी वहां से चलते हुए आशीर्वाद दिया। यजमान। तुम्हारे भण्डारे भरे रहे। विवाह निर्विधन सम्पन्न हो। कोई विघ्न न पड़े। सभी हंसी खुशी आएं और हंसी खुशी जाएं। ऐसा कहकर वेषधारी कलंदर ने अपनी डग की ओर पैर बढ़ाए।

इधर विवाह संबंधी सभी कार्य पूर्ण होने के उपरांत पंडित जी दूसरे दिन कुछ मिष्ठान व फल लेकर ठाकुर जी के धाम सांधावाली आए। ठाकुर जी के चरण स्पर्श के पश्चात् धीरज धरकर ठाकुर जी से बोले-महाराज। आपने विवाह में आने का वचन दिया था। हम प्रतीक्षा में रहे किन्तु आप नहीं आए। ठाकुर जी हंस पड़े और बोले पंडित जी-हम आए थे, तुमसे मिले थे और आशीर्वाद देकर चले आए, किन्तु आपने हमें पहचाना नहीं। हमने रोटी की मांग की तो आपने बासी रोटियां देकर विदा कर दिया। इस पर भी निराशता व्यक्त करते हो। मेरे भोले अज्ञानी शिष्य। हम कलंदर के भेष थे और तुम्हारा क्रोध छुड़ाने आए थे, यदि हम ऐसा भेष न धारते तो न जाने तुम्हारा क्रोध किस पर बरसता और फिर तुम्हारा ही कार्यक्रम नाश कर डालता। आपका क्रोध छुड़ाने के लिए हमने आपकी खोटी-खरी सुनी और चुपसाध चले आए।

इस पर पंडित जी ने अपनी भूल की क्षमा मांगी और और आगे से क्रोध त्यागने का वचन दिया। ठाकुर जी ने उसे गले लगाकर उसका दोष भुला दिया।

दोहा : संत दयालु होते हैं, करें सभी का हेत।

समय-समय पर भक्त को, सदैव करें सचेत ।।

नाव भक्त की आन कर, खुद ही करते पार। "लाल" भक्त की लाज को, आते उसके द्वार।।

भक्त की लाज बचाई

दोहा : रोसा नगर ठाकुर का, अति पूजित स्नान।

यहां ठाकुर ने बैठ के, किया प्रभु का ध्यान।।

दूर-दूर से भक्तजन, ठाकुर के दर आए। जिसकी जैसी कामना, ठाकुर जी से पाए।।

ठाकुर जी ने ज्ञान के, यहां फूल बिखराए। जिनकी अनुपम महक से, कण-कण खिल-खिल जाए।

ठाकुर जी ने रोसा नगर में आकर उस सचस्वरूप जगतपति जगदीश्वर जी का जोरदार जयघोष किया-जय सच्चिदानंद महाराज की जय। इस जयघोष को सुनकर ठाकुर प्रेमियों ने अनुमान लगाया कि ठाकुर जी यहां पधार चुके हैं। तब सभी दौड़-दौड़कर ठाकुर जी के प्रवचन सुनने को एकत्रित हो

गये। देखते ही देखते ठाकुर प्रेमियों की भरमार हो गई। तब ठाकुर जी ने अपने मुखारबिंद से ईश्वरीय खजाने से ज्ञान की गंगा बहाई और सभी के मन की प्यास बुझाई।

जब प्रवचनों की समाप्ति हुई, तब तुरन्त पास आकर सांधावली मंदिर के अध्यक्ष बाबा धर्म दास जी ठाकुर जी के संमुख हुए। ठाकुर जी ने उन्हें देखते ही

उनसे पूछा-वहां की क्या स्थिति है। धाम पर क्या हो रहा है। जो धन संगत से एकत्रित किया था. वह कहां-कहां प्रयोग हुआ है। तब बाबा धर्म दास जी ने हाथ जोड़कर निवेदन किया। महाराज जी मंदिर के पास संगत के स्नान के लिए एक सरोवर बनवाया है। उसके चारों तरफ पौड़ियां बनाई हैं ताकि संगत चारों ओर से आ जा सके। महिलाओं तथा पुरुषों के लिए पृथक-पृथक स्नानागार बनाए कारो घाट भी बनाया है। जहां पशुपालन भी होगा। इस प्रकार सारा धन लगा दिया है। इस पर ठाकुर जी ने कहा-भाई तुमने बड़ी भयंकर भूल की है। पहले मंदिर की चार दीवारी बनानी थी, फिर सरोवर बनाना था। अब सरोवर में जल नहीं ठहरेगा। तब आंखों को भरकर भाई जी ने कहा-आपका वचन सत्य होगा। किन्तु यह अपराध मेरा है। संगत ने मुझे चार दीवारी बनाने को कहा था किन्तु मैंने उनकी न सुनकर मनमानी की। मेरी भूल को क्षमा करें। हे कृपासिंधु। कोई ऐसा उपाय सुझाएं, जिससे मेरी लाज रह जाए, सरोवर में जल आ जाए। अन्यथा संगत मुझे दोषी ठहराकर धिक-धिक कहेगी।

संत बड़े दयावन होते हैं, भक्त की करुण पुकार सुनकर तुरंत मोम की तरह पिघल जाते हैं, उसके गुण अवगुण भुलाकर उसके हो जाते हैं। तब ठाकुर जी ने भक्त को धीरज बंधाते हुए कहा-चिंता न करो, इसका उपाय भी हमारे पास है। नूरशाह निवासी हमारे शिष्य ज्वाला सिंह जी महाराज स्वयं इधर आएंगे और सरोवर में गंगा की धार बहाएंगे। जो सरोवर में स्नान करेंगे वह जन्म मरण से मुक्त हो जाएंगे। हमारा यह वचन युगों-युगों तक दृढ़ रहेगा।

ठाकुर जी से आशीर्वाद पाकर बाबा धर्म दास जी मंदिर साधांवाली लौट आए। मंदिर में पैर रखते ही उन्हें सूचना मिली कि पश्चिम दिशा से आने वाले ठाकुर जी के परम शिष्य ज्वाला सिंह जी महाराज आप से भेंट करना चाहते हैं। उन्हें ठाकुर जी के गुप्त अनमोल वचनों का पालन करना है। ठाकुर जी का आदेश है कि साधांवाली मंदिर जाओ और जाकर सरोवर में गंगा की धार बहाओ। ज्वाला सिंह जी का आगमन सुनकर भाई जी अत्यन्त प्रसन्न हुए। फिर दोनों ने आपस में आलिंगन किया। तब मंदिर निर्माण की बात चली। साधांवली मंदिर की सेवा ज्वाला सिंह जी के नाम लगी। तब तहसील ओकाड़ा जिला मिन्टगुमरी के जमींदारों तथा जागीरदारों को बुलवा कर कार-सेवा आरंभ की। सभी बापू भक्त टोकरे, फावड़े, गेनती लेकर इस कार्य में जुट गए। सभी के सहयोग से मंदिर की चार दीवारी कुछ ही

दिनों में तैयार हो गई। मंदिर का क्षेत्रफल लगभग सात हजार वर्ग गज था। इस कार्य में बापू जी के मुख्य सेवादार बाबा भाग सिंह जी तथा पंडित कल्याण दास जी ने बड़ी नेक नीति से भाग लिया। जब काम सभी प्रकार से हो गया। तब बाबा धर्म दास जी ने ज्वाला सिंह जी से हाथ जोड़कर विनम्र निवेदन

किया। हे महामनीषि। परोपकारी देव। आपकी कृपा एवं कठिन श्रम से मंदिर का निर्माण हो गया है। अब सद्‌गुरु ठाकुर जी महाराज के मुखारबिंद से निकले वचनों पर पुष्प चढ़ाएं और सरोवर में प्रवेश करके सद्‌गुरु जी का ध्यान करके गंगा जी की धार को प्रकटाएं। ज्वाला सिंह जी महाराज को सद्‌गुरु ठाकुर जी महाराज का स्मरण आया, तब हाथ में कई लेकर सरोवर में प्रवेश कर भूमि पर टक लगाया, तुरंत गंगा की धार फूट पड़ी और सभी के मन में प्रसन्नता उमड़ पड़ी। इसके उपरांत ज्वाला सिंह जी महाराज अपने आवास नूरशाह लौट गए।

सो इस प्रकार ठाकुर जी महाराज ने अपने भक्तों की लाज बचाकर सरोवर में गंगा की धार बहाई।

दोहा: ठाकुर अपने भक्त के, हरदम रहते साथ।
उसे निराशा ना मिले, जिस पर रख दें हाथ।।

क्षमा शस्त्र सबसे बड़ा, इससे बड़ा न कोए। धर्म दास मनाए लिया, सतगुरु आगे रोए।
गंगा सरोवर आ गई, सबके मन हर्षाए। "लाल" ठाकुर के तब से, जन-जन मंगल गाए।

ठाकुर जी का जग छोड़ना

दोहा : ईश बुलावा आ गया, बांध लिया सामान।
छोड़ जगत को चल दिये, भक्तों के भगवान।।

ठाकुर जी तो चल दिये, आज छोड़ संसार। प्रभु नाम की टेक से, किया जगत निस्तार ।।
उनके पावन धाम पर, जो करते अरदास । "लाल" इच्छा फल लाती, मन में रखके आस ।।

अपने जीवन काल के सभी कार्य सम्पूर्ण करके अब ठाकुर जी ने जगत छोड़ने का निर्णय ले लिया। इकसठ वर्ष के इस बालस्वरूप ने अपने परम प्रिय शिष्यों को बुलाकर कहा। हम पंचभूत शरीर को छोड़कर अब सच्चिदानंद के धाम पर जा रहे हैं। आप हमारे मृत शरीर को अग्नि भेंट न करना और भूमि में भी न गाड़ना, इसे रावी दरिया में प्रवाह कर देना, हमारी कोई समाधि न बनाना। हमारे जाने पर शोक भरे आंसू न बहाना। केवल प्रभु का भजन, बंदगी व सुमिरण करना। यही हमारा आप सबको उपदेश

है। ऐसा कहकर ठाकुर जी ने यौगिक क्रियाओं का सहारा लेकर अपने प्राणों का त्याग कर दिया। संगत ने उनका अन्तिम संस्कार उनकी इच्छानुसार किया।

दोहा : स्वेच्छा से तज दिये, ठाकुर जी ने प्राण।

संगत ने दुःख सह लिया, मन पर रख पाषाण ।।

अब ठाकुर उपदेश पर, संगत का है ध्यान। "लाल" प्रभु का करेंगे, हरदम ही यशगान।।

ठाकुर जी की वाणी

दोहा :भक्तवत्सल ठाकुर का सबसे ऊंचा धाम।

उनके ऊंचे धाम को, सब करते प्रणाम ।। देव परी सब हुक्म में, तत्पर आठों याम। सबके मन की कामना, युगल चरण ले थाम।

तर्ज-यह कौन आया रोशन हो गई महफिल किसके नाम से

आओ अब हम कथा बखाने, ठाकुर जी महाराज की। कलयुग में प्रधान यही है, कथा यह संत समाज की ।।

कष्ट कलेश दीन दुःख भंजन, भक्त रक्षक सिरताज की।।कलयुग में प्रधान यही है, कथा यह संत समाज की।

आओ अब हम कथा बखाने.....

सारे जग के एक हैं कर्ता, ठाकुर जी ने ज्ञान दिया।जगकर्ता को कभी न भूलो, जिसने खान व पान दिया।।

कृतघ्न होकर कभी न जीना, जिसने ऐसी आवाज की। कलयुग में प्रधान यही है, कथा यह संत समाज की ।।

आओ अब हम कथा बखाने.... परमहंस ठाकुर की वाणी, सबसे ऊंची वाणी है। देवपुरी में देवों ने भी, इसकी महिमा जानी है।। ठाकुर जी के मुख की वाणी, सीख देती शुभ काज की। कलयुग में प्रधान यही है, कथा यह संत समाज की।

आओ अब हम कथा बखाने.....

ठाकुर जी ने इस धरती पर, सुख की जोत जगाई है। दया धर्म का दीपक लेकर, घर-घर महक फैलाई है।। "लाल" सदा बखान रहे हैं, यह कथा गरीब निवाज की। कलयुग में प्रधान यही है, कथा यह संत समाज की। आओ अब हम कथा बखाने.....

बापू ज्वाला सिंह जी की जीवनी

दोहा :चरण पादुका संत की, मल जन्मों की धोए।

अंत काल सुरलोक में, यही सहाई होय ।। संत पुरुष ज्वाला सिंह, सृष्टि के भगवान् । घर-घर चर्चे हो रहे, देव पुरुष इंसान ।।

सुख सम्पद भण्डार हैं, सर्व गुणों की खान। सबके काज संवारते, देके शुभ वरदान।।

संत पुरुषों की लीलाएं बड़ी मन लुभावनी होती है, अन्तरमुखी कमल को छू जाने वाली होती हैं। संत पुरुष सदा सत्य की डग पर चलते हैं। वह ईश्वर के अतिरिक्त किसी का भय नहीं खाते। वह जब अपनी मौज में होते हैं, बड़ी-बड़ी शक्तियों को भी चुनौती देते हैं। वह सत्य की ओट लेकर बड़े-बड़े अभिमानियों को झुका देते हैं और सत्य का पवित्र पताका फहरा देते हैं। बापू ज्वाला सिंह जी भी इसी श्रेणी के महान संत थे।

बापू ज्वाला सिंह जी का जन्म दत्त मोहियाल ब्राह्मण कुल में लतीफाल हारना (झेलम) में हुआ। इस ग्राम को पोठेवाल भी कहते थे। आपके पिताश्री का नाम पडित आत्मसिंह तथा माताश्री का नाम किशन देवी था। आपको जन्म देकर आपको माताश्री इस संसार से चल बसी। आपका पालन पोषण आपके ननिहाल वालों ने किया। आपके कुल से भाई मतिदास जी और भाई परमानंद जी का जन्म हुआ। भाई मति दास जी तो गुरु तेगबहादुर जी के साथ दिल्ली में शहीदी पा गए और भाई परमानंद जी सदैव के लिए ईश्वर भक्ति में लीन होकर समाधि लेकर मौन हो गए। आपका सारा जीवन सदा भक्ति पथ की ओर बढ़ता रहा। दस वर्ष की आयु में आपने घर का त्याग कर दिया और साधु संतों की शरण में रहने लगे। एक दिन आपकी भेंट एक सिद्ध पुरुष से हुई। आप उनके मुखारविंद से ईश्वर की मग्नमय लीलाएं सुनकर उनके साथ चल दिए, उसने आपसे पीछा छुड़ाने के बड़े यत्न किए किन्तु हर मोड़ पर

असफलता पाई। तब एक युक्ति का सहारा लेकर एक स्वर्ण मोहर आपके हाथ पर टिकाई। जब आप हाथ में रखी मोहर को देखने लगे तो सिद्ध पुरुष अलोप हो गए। तब आप जान गए कि वह सिद्ध पुरुष जगत्पति जगदीश्वर है जो मेरे सामने से चले गए, किन्तु मैं उन्हें अपने मन से कभी न जाने दूँगा। तब स्वर्ण मोहर को नदी में फेंक कर कहने लगे। हे संत स्वरूप ईश्वर जी। आपकी धरोहर आपके पास पहुंच गई हैं। फिर सचस्वरूप की धुन में आगे बढ़े। इस प्रकार भ्रमण करते-करते रावी नदी के तट पर स्थित ग्राम पिंडी शेखमूसा (लायलपुर) पहुंचे। इस ग्राम का नाम फैसलाबाद भी है जो अब पाकिस्तान में हैं। यहां आकर आपने कपड़े सिलने का काम आरंभ किया। आप दिन भर सिलाई का काम करते थे और रात्रि में रावी नदी के तट पर बैठकर ईश्वर की आराधना करते थे। धीरे-धीरे आपके तपोबल का प्रकाश दूर-दूर तक फैलने लगा। तब गृहस्थी लोग आपके पास आने लगे और अपनी समस्याएं सुनाने लगे। आपको यह सब अच्छा न लगा। आप इस जीवन में मुक्ति पाना चाहते थे और एकांत में बैठकर प्रभु को रिझाना चाहते थे।

तब आप रावी नदी के दूसरे तट नूरशाह नामक नगर में आए। यहां के लोग धनी व नेक स्वभाव के थे। वह साधु-संतों का सम्मान करते थे। वहां जग्गा, छाबड़ा, मेंहदीरत्ता, गुम्बर आदि अनेक प्रतिष्ठित परिवार रहते थे। इसके अतिरिक्त कुरैशी मुसलमान परिवार भी रहते थे। नूरशाह में पंजाब मल जग्गा नामक एक व्यापारी रहते थे जो पिंड़ी शेखमूसा आया जाया करते थे, जो आपके भक्त एवं प्रशंसक थे। वह भी आपके पास आने लगे और कहने लगे। आप हमारा गृह पवित्र करें, हम आपके धन्यवादी रहेंगे। तब आप किसी अपरिचित व्यक्ति के

चौबारे में रहते थे वह आपकी सेवा में प्रतिदिन उपस्थित होने लगे और कहने आए हमारे यहां सुरक्षित ठिकाने पर रहें। तब आपने हंसकर कहा। हमारा क्या रहना क्या न रहना। हम दिन भर कपड़े सिलते है और रात्रि को रावी नदी के तट पर चले जाते हैं। तुम्हारे घर में रहने से हमारे कारण लोगों का जमावड़ा लग जाएगा। हमें अच्छा न लगेगा। इसलिए हम आपके घर निवास नहीं करेंगे। जग्गा परिवार की बार-बार हठ करने पर आपने उनके पक्के चौबारे में बसेरा किया। किन्तु ज्ञान का प्रकाश कब तक छिप सकता है एक न एक दिन सामने आ जाता है। लोग सैकड़ों की गिनती में वहां आने लगे। आपको जिसका भय था वही हुआ।

तब एक दिन नजर बचाकर चुप्पसाध नूरशाह नगर से अपने पूर्व सत्संगी बाबा लहरा सिंह जी के पास अमृतसर चले आए। आपने अपनी चरण पादुकाएं सीढ़ियों में उतार दी और नंगे पांव कमरे में प्रवेश किया। बाबा जी आपको देखकर गद्-गद् हो गए, फिर कुशल क्षेम पूछकर कहने लगे, आपकी चरण पादुकाएं कहां हैं। आपने कहा वह सीढ़ियों में हैं। बाबा लहरा सिंह जी गए और चरण पादुकाएं

हाथ में उठाकर ले आए। इस पर आपने ने कहा-बाबा जी आपने यह क्या किया-उलटी गंगा बहा दी। इस पर बाबा जी ने कहा-आप महान योगी हैं। परमहंस है। ब्रह्मज्ञानी है। सिद्ध पुरुष है। सर्वशक्तिमान हैं। यह मेरा सौभाग्य है जो आप यहां पधारे हैं। तब कुछ दिन आप अमृतसर में रहे और बाबा जी के साथ ज्ञान गोष्ठी करते रहे।

इधर नूरशाह में आपके भक्त पंजाब मल जग्गा जी की दशा आपके बिना वियोगी की भांति हो गई। उनके जीवन से बहारें लुट गई। वह आपको ढूंढते-ढूंढते अमृतसर पहुंचे। संयोगवश भेंट हुई। ऐसे में पंजाब मल जग्गा जी ने आपके दोनों चरण पकड़ लिये और तब तक न छोड़े जब तक आपने नूरशाह नगर आने के वचन न दिये। भक्त की विनती पर पुनः नूरशाह नगर आए।

बापू ज्वाला सिंह जी महाराज कुछ समय के लिए नूरशाह नगर में सुखपूर्वक रहे। एक दिन उनके भक्तों में श्रेष्ठ भक्त भाई कन्हैया लाल जी उनकी सेवा में प्रातः काल तारों की छावं में उनके पांव स्पर्श करने आए। ऐसे में बापू जी ने भाई कन्हैया लाल जी की ओर बड़े विचित्र ढंग से देखा और फिर चेहरे से दृष्टि हटाकर बोले-भाई जी। अब आप नौकरी से अवकाश ले लें और यहां आने वालों की सेवा में लग जाएं। अब आप इस फुलवारी के मुख्य सेवादार हैं। यहां रहकर सेवा में लीन होकर अपना जन्म सार्थक बनाएं। भक्त जी ने बापू जी की बात मान ली और नौकरी से अवकाश लेकर सेवा संभाल ली।

दूसरे दिन बापू जी ने एक पत्र मंगत भाई के भाई राय साहब निहाल चन्द जी के लिए लिखवाकर पंडित कल्याण दास जी को डाक द्वारा भेजा और लिखा।

अब शरीर स्वस्थ्य नहीं रहता, आप पत्र मिलते ही नूरशाह पधारें । बापू जी ने कुशल मंगल लिखने के पश्चात पत्र लाल स्याही से लिखा ताकि पडित जी लाल स्याही देखकर तुरंत चले आएं। यह पत्र पंडित जी की धर्मपत्नी के हाथ लगा, लाल स्याही को देखकर उसने अनुमान लगा लिया कि खतरे की घंटी बज रही है और बापू जी की दशा बिगड़ रही है। पंडित जी घर पर नहीं थे। पंडित जी के आते ही पत्र सहित सूचना दी। पत्र व सूचना को पाकर पंडित जी तुरंत वहां से दौड़ पड़े और नूरशाह आकर बापू जी के चरणों में बैठकर सांस ली। दूसरे मुख्य सेवादारों को कोई पत्र न लिख पाए। इसलिए वह आने में असमर्थ रहे।

बापू जी के सामने सैकड़ों की गिनती में संगत बैठी हुई थी। ऐसे में बापू जी ने पूछा-आज कौनसी तिथि है और कौन सा दिन है। तब पंडित जी ने कहा आज 23 कार्तिक संवत् 1945 अमावस्या का दिन है। फिर बापू जी ने पूछा रावी नदी में जल का प्रवाह कैसा है। पंडित जी ने कहा नदीं में जल कम है और प्रवाह धीमा है। ऐसे में संगत ने जान लिया कि बापू जी ने अब हमें छोड़कर जाने की तैयारी कर ली है। तब बहुत से श्रद्धालु रोने व चिल्लाने लगे और रो-रोकर कहने लगे। आप हमें किसके सहारे

छोड़कर जा रहे हैं। तव बापू जी ने संगत से कहा-रोने धोने से कुछ न बनेगा। प्रकृति का नियम कदापि न टलेगा।

दोहा : कौन रहा संसार में, राजा रंक फकीर।

जिसकी बारी आ गई, उसने तजा शरीर ।। ईश्वर के इस लेख पर, कभी न बहाओ नीर। सब पर मौत सवार है, सबका यही आखिर ।।

इन अनमोल वचनों को संगत के सामने रखकर बापू जी पद्मासन लगाकर पलंग पर बैठ गए और बड़े धीमे स्वर में बोले-जाओ। कोई पंडित कल्याण दास जी को बुला लाओ। पंडित जी तुरंत उपस्थित हुए और बोले-आज्ञा करें, किस कारण याद किया। बापू जी ने कहा-पंडित जी। शोक को त्यागकर, उस ईश्वर को याद कर हमारे पार्थिव शरीर को रावी नदी में प्रवाह कर देना। हमारी कोई समाधि न बनाना। अच्छा। अब हमारी राम-राम लो। जय सच्चिदानंद।

इतना कहकर बापू जी सदैव के लिए मौन हो गए। उसी क्षण ब्राह्मण वेश में कुछ देव गण प्रकट हुए और उनके शव पर पुष्प बरसा करके अलोप हो गए।

इसके उपरांत बापू जी के पार्थिव शरीर को पालकी साहिब में सुशोभित करके मीठे-मीठे हरिनाम के कीर्तन से पदयात्रा करके रावी नदी में प्रवाह कर दिया गया। इस प्रकार ज्योति ज्योत में समा गई। तब श्री नंदा चौर धाम की गद्दी संत बापू भाग सिंह जी ने संभाली।

दोहा :ज्वाला सिंह जी चल दिए, जो नित बोलें बोल।

हरि नाम के कीर्तन से, यह तन देते तोल ॥ नूरशाह में गूंजत्ती, यही कूक अनमोल। "लाल" वचन सुन संत के, हृदय के पट खोल ।।

स्तुति बापू ज्वाला सिंह जी की

दोहा :ज्वाला सिंह, सिंह सूरमा, विश्वनाथ अवतार। विश्व उभारण आ गये, मनुज रूप को धार।। मैंने इनको एक नजर, देव लिया पहचान। खुला हिये का द्वारा, प्रकट हुए भगवान ।।

तर्ज-इक परदेशी मेरा दिल गया

ओ जिसे ज्वाला सिंह के दीदारे चाहिए। इस सच्ची सरकार के द्वारे आईए ।।

ओ जिसे ज्वाला सिंह....

इस दरबार की तो शोभा है कोई भी यहां से न जाता है खाली ।।ओ जिसे सुखी जीवन भण्डारे चाहिए। इस सच्ची सरकार के द्वारे आईए।

ओ जिसे ज्वाला सिंह.....

इस दर पे आस रख, दूसरे की छोड़ दे। मोह लोभ का बंधन, आज से तोड़ दे।ओ जिसे सच्चे गुरु के प्यारे चाहिए।इस सच्ची सरकार के द्वारे आईए।

ओ जिसे ज्वाला सिंह.....

"लाल" आज बोल-बोल, तुझको सुनाएगा। यह धाम छोड़ के तू बड़ा दुःख पाएगा।। ओ जिसे मोक्ष धाम के नजारे चाहिए। इस सच्ची सरकार के द्वारे आईए ।।

ओ जिसे ज्वाला सिंह.....

बापू धाम के मीठे बोल / 45

बाबा भाग सिंह जी की जीवनी

दोहा:भाग सिंह पर चेचक ने, बचपन से दुःख द्वाए।

ज्योत छीन ली आंख की, दोनों लोचन

खाए ।।

नेत्रहीन की जिन्दगी, अब वह रहे गुजार। फिर भी मन में धीर है, पाएंगे करतार ।।

बाबा भाग सिंह जी महाराज का जन्म ग्राम फतेहपुर उकाड़ा जिला मिंटगुमरी में संवत् 1892 विक्रमी में पिताश्री खेमा राय और माताश्री चोघा देवी के घर हुआ। बाल्यावस्था में आपको चेचक रोग ने घेर लिया। आपकी दोनों आखे चली गई, किन्तु आपने इस स्थिति में भी अपने को बलहीन न माना और ईश्वर की इस देन को नतमस्तक होकर स्वीकारा। संसार की सभी मन लुभावनी वस्तुओं का त्याग कर ईश्वर के अनमोल खजाने की ओर ध्यान लगाया। परोपकारी संतो महापुरुषों की शरण में रहने का मन बनाया। ऐसे में हृदय में ईश्वर की प्राप्ति के लिए भक्ति की उमंग उत्पन्न हुई। तब दिन रात उठते बैठते ईश्वर का नाम ओम नमः शिवाय जपने लगे। यही एक सच्चा मार्ग है। जो ईश्वर की सच्ची दरगाह तक पहुंचता है। किन्तु ईश्वर की डगर पर चलने के लिए सतगुरु की आवश्यकता होती है। सतगुरु ईश्वर के दूत होते हैं जो ईश्वर से मिलवाते हैं। जब लगन सच्ची हो जाती है तो डगर स्वयं मिल जाती है। ऐसे में आपकी भेंट बापू ज्वाला सिंह जी महाराज के एक श्रद्धालु से हुई फिर ज्ञात हुआ कि बापू ज्वाला सिंह जी महाराज नूरशाह में नूर का भण्डारा खोलकर बैठे हैं। यदि उनसे मिलन हो जाए तो जन्म-मरण का दुःख मिट जाए। तब उस श्रद्धालु की सहायता से नूरशाह में आकर संत बापू ज्वाला सिंह जी के चरणों में आकर नतमस्तक होकर सादर वचन सुनाए। बापू जी ने देखते ही कहा-भाग सिंह जी। तुम आ

गए। आने में बड़ा विलम्ब किया। हम चिरकाल से प्रतीक्षा में थे। चलो अच्छा हुआ। जो स्वयं आ गए। अन्यथा हमें जाना पड़ता और आपको लाना पड़ता। अब आपस का लेन-देन, लेखा-जोखा सब समाप्त हो जाएगा। तब बाबा भाग सिंह जी ने हाथ जोड़कर कहा-हे सतगुरु जो मैं आपकी इस पहेली का अर्थ नहीं समझा, कृपा समझाकर कहें, इस पर बापू जी ने कहा-समय आने पर सब समझ आ जाएगा, फिर उन्हें अपनी बाहों में लेकर पलंग पर लेटकर, उन्हें चरणों में बिठा लिया। इसके उपरांत सिर पर हाथ फेरकर कहने लगे। तुम्हें नेत्र ज्योति मिलेगी। तीनों लोकों में कीर्ति होगी। संसार

तुम्हारी शरण में आएगा और तुमसे मुरादें पाएगा। हमारा वचन अटल है, अटल रहेगा फिर कुछ समय रूककर बोले-तुम्हारे नेत्र पहले से खराब है अथवा किसी कारण खराब हुए हैं। तब भाग सिंह जी ने कहा-बचपन में चेचक के प्रकोप से मेरी नयन ज्योति चली गई। बापू जी ने मौज में आकर कहा-भागो। भाग सिंह जी भागो। जितना भाग सकते हो भागो। ऐसे में भाग सिंह जी ने कहा महाराज आप क्या कहते हैं। हमें क्यों भगाते हैं, बड़ी मुश्किल से यहां आए हैं। तब बापू जी ने उनकी आंखों पर हाथ रखकर कहा। हम तुमसे अत्यन्त प्रसन्न हैं। मांगों क्या मांगते हो। जो मांगोंगे वही मिलेगा। भाग सिंह जी ने कहा-मुझे आपके दिव्य स्वरूप के दर्शन हों। बापू जी ने उनकी आंखों पे हाथ रखकर नेत्र ज्योति प्रदान की। बापू जी का दर्शन करके वह धन्य धन्य हो गये। उनकी अन्तर आत्मा को शांति मिली। बापू जी ने प्रसन्नचित होकर कहा-तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण हुई। मांगों और क्या मांगते हो। भाग सिंह जी ने कहा महाराज। मेरी और कोई इच्छा नहीं। मैं जैसा था वैसा रहूं और आपकी भक्ति में जीवन भर मग्न रहूं। बापू जी ने अपने हाथों से उनके नेत्रों को बंद कर दिया और उन्हें पहले की भांति ज्योति हीन कर दिया।

दोहा : मांगना आया नहीं, बापू लिया बुलाए।
अब पछताए क्या बने, जब कुछ ले ना पाए।

बापू जी ने जैसी भक्त की मंशा थी वैसे फल दिये, उनके बाहरी चक्षु बंद हो गये किन्तु भीतरी चक्षु खुल गये। बापू जी ने भाग सिंह जी को नाम की दीक्षा दी साधना तथा योग की विधि समझाई। मुक्ति तथा सुमिरण का ज्ञान पढ़ाया।

बाबा भाग सिंह जी जीवन भर बापू जी की सेवा में रहे। बापू भक्तों में उनका प्रमुख स्थान हुआ। संसार उनकी शरण में रहा, जिसने जो मांगा सो पाया। उनकी शरण में ऊँच नीच का कोई प्रश्न न था, सभी का मान एक समान था। वह बापू जी के बहुत निकट थे। जिसने संसार में जन्म लिया है उसका

मरण भी निश्चित है। सभी को अपनी-अपनी पारी अनुसार जाना है। बाबा भाग सिंह जी के निधन उपरांत श्री नंदा चौर धाम की गद्दी बापू ओम नारायण दत्त जी की देख-रेख में आई।

दोहा : जगत फेरा जोगी का, इक आये इक जाए।

कौन जाने कौन कहां, कब जाने मिट जाए। यही नियम संसार का, जो ना टलने पाए॥
'लाल' प्रभु की शरण ही, इनसे पार लगाए।

बापू ओम नारायण दत्त जी की अमर कथा

दोहा :धरती नंदाचौर की, निशदिन मंगल गाए।

जब से बापू ओम ने, अपने चरण टिकाए। एक नूर से सब उपजे, हमें बताने आए।
मुसलमान और हिन्दू, उसके सभी बनाए।। मानवता के बीज बो, सब घट दीप जगाए।।

सद्गुरु बापू ओम नारायण दत्त जी महाराज धर्म की सूरत, सत्य की सूरत संकल्प के पक्के वचन के सच्चे लब्धप्रतिष्ठित पुरुष थे। वह पराशक्ति परमपिता परमेश्वर के पुजारी थे। उनकी रमणीय आभा से आज नंदा चौर तपोवन के अमीर-गरीब सभी मालामाल होकर प्रसन्नताओं में मग्नमय हो रहे हैं। आपने थड़ा साहिब पर सुशोभित होकर गुरु नाम के आसरे दु:खों कष्टों कलशों तथा व्याधियों पर अंकुश लगाया। तभी से आपका नाम संतों की श्रृंखला सर्वोपरि है। पंजाब की पवित्र धरती नंदा चौर के इतिहास में आपका नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है।

सद्गुरु बापू ओम नारायण दत्त जी महाराज का जन्म 26 मई सन् 1845 को नंदा चौर जिला होशियारपुर में हुआ। आपके पिताश्री का नाम पंडित प्रभु दियाल जी तथा माताश्री का नाम गुलाब देवी जी था। आपके जन्म लेने पर सारा घर प्रकाशमय हो गया, चारों तरफ पुण्पों की सुगंधी फैल गई। इस पर पंडित प्रभु दियाल जी जान गए कि यह पवित्र आत्मा अवश्य ही उस परमपिता परमेश्वर का अंश है।

समय बीत गया। पाँच वर्ष की आयु में बालक ओम नारायण जी ने धरती पर पांव रखा और अपने मित्रों के साथ खेलने लगे। आपका स्वभाव बड़ा दानी था।

आप सेवा सिमरण और भक्ति पर विश्वास रखते थे। किसी का दु:ख न देख पाते थे. भूखे को दु:खी देखकर स्वयं दुखी हो जाते थे। अपने मित्रों की सब प्रकार से सहायता करते थे। आपको जो घर से मिलता अपने मित्रों में बाँटकर खाते।

सो इस प्रकार युवा अवस्था में पैर रखा। तब मन लगाकर कक्षा उतीर्ण की। अच्छे अंक प्राप्त करने पर एक सरकारी स्कूल में अध्यापक की चाकरी मिली। किन्तु बचपन से ही ईश्वर को पाने की लगन थी। आप चाकरी के साथ-साथ ईश्वर की भक्ति सिमरण तथा उपासना में भी समय बिताने लगे।

एक दिन आप विद्यालय में चाकरी निभा रहे थे। और बच्चों को खूब मन लगाकर पढ़ा रहे थे। तब अकस्मात् विद्यालय निरीक्षक ने आकर उपस्थिति पुस्तिका मांगी। अध्यापक जी सहम गए, क्योंकि कई दिनों से बालकों की उपस्थिति नहीं लगाई थी। आप ईश्वर की भक्ति में अधिक समय लगाते थे. इसलिए उपस्थिति लगाने का समय न मिला। इस पर निरीक्षक ने निराश होकर कहा-पुस्तिका तुरंत पेश करो। तब आपने परमपिता परमेश्वर से मन ही मन प्रार्थना की-हे जगसृष्टा। सब दुःख हर्ता। मेरा दुःख हर लीजिए और पुस्तिका में उपस्थिति भर दीजिए।

"काव्य लहरी"

तर्ज-आँसू भरी है जीवन की राहे कोई उनसे कह वो हमें भूल जाएं

दोहा : हे बांके बिहारी, नंद लाल मुरारी। अब हाथों में तेरे, है लाज हमारी ।।

हे बांके बिहारी ....

तेरे होते मेरी लाज लुट ना जाए।

कृपा कर दो मुझपर कि दुःख टल जाए।

हे भक्तों के प्यारे, प्रभु हितकारी।

अब हाथों के तेरे, है लाज हमारी।

हे बांके बिहारी .....

मैने बहुत दिनों से, हाजिरी न लगाई।

में ध्यान में मग्न था, मुझे होश न आई॥ मेरी भूल भुला दो, दुःख मेटनहारी।

अब हाथों में तेरे, है लाज हमारी।।॥

हे बांके बिहारी....

इस दयनीय पुकार को सुनकर प्रभु का हृदय पिघल गया। तब तत्काल अपने हाथों से तिथियों सहित उपस्थिति पुस्तिका भर दी। जब पुस्तिका प्रस्तुत की गई तो वह तिथियों सहित ठीक पाई गई। इस पर निरीक्षक महोदय भ्रम में पड़ गए। कि अध्यापक जी ने पुस्तिका देने में इतनी देर क्यों लगाई। तब बड़े विनम्र भाव

से पूछा-अध्यापक जी। हमारी शंका का समाधान करें। आपने पुस्तिका दिखाने में इतनी हिचहिचाक क्यों की। इस पर ओम जी ने कहा-मेरी पुस्तिका अधूरी थी। जिसनें इसे पूरा किया है। अब में उसकी चाकरी करूंगा। तब तुरंत पद से त्याग पत्र देकर चाकरी छोड़ दी और गुरु जी की खोज में निकल पड़े उन्हें भली भांति ज्ञान था कि गुरु के बिना प्रभु से मिलन नहीं होता क्योंकि गुरु परमात्मा के दूत है गुरु को धारण कर एवं प्रसन्न कर उस परम ज्योति के दर्शन हो सकते हैं।

इसी विचार को मन धार कर, घर बाहर को छोड़कर गुरु की खोज में निकल पड़े। दिल्ली, जालंधर, लुधियाना, बटाला, पटियाला, जयपुर, जोधपुर, अजमेर, आनंदपुर इत्यादि-इत्यादि पूरा भारतवर्ष घूमे, कहीं भी गुरु न मिले। तब निराश व उदास होकर अमरनाथ की यात्रा को गए। वहां कावाड़ियों का तांता लगा हुआ था। कावड़ियें भगवान् शिव को स्नान करा रहे थे। मेले का भ्रमण करके आप एक बर्फीले पहाड़ को लांघ कर घने वन में पहुंचे। तब वहां चार महात्मा भक्ति में लीन दिखाई दिये। मन को धीरज बंधाकर उनके पास गए वचन विलास किये और सच्चे गुरु का ठौर पूछा। उन्होंने कहा-ओम तुम पंजाब की पश्चिम दिशा में जाकर गुरु को खोजो, तुम्हें वहीं गुरु मिलेंगे। तब मुलतान से होते हुए नूरशाह नामक नगर में पहुंचे। वहां आपकी भेंट युग पुरुष बापू ज्वाला सिंह जी से हुई, उस सुंदर स्वरूप केशाधारी व्यक्ति को देखकर ओम जी गद्-गद् हो गए और भली प्रकार जान गए कि यही हमारे गुरु हैं। ओम जी को देखकर युग पुरुष बोले। ओम तुम आ गए। हम तुम्हारी प्रतीक्षा में थे। तुम गुरु की खोज में हो। इधर आओ। हमारे वचनों पर कान लगाओ। इस स्थान से दक्षिण पूर्व की दिशा में लगभग डेढ़ मील की दूरी पर धरती खोदकर एक भोरा बनाओ और फिर उसमें बैठकर ईश्वर का ध्यान लगाओ। कलयुग से भयभीत प्राणियों को हरि का नाम जपाओ। तुम्हें मोक्षता की प्राप्ति होगी और अंत सचखण्ड में शांति व कीर्ति होगी।

इन अमूल्य वचनों को सुनकर ओम जी के मन को शांति मिली। तब तुरन्त दौड़कर गुरु जी के चरण पकड़ लिये। इसके उपरांत गुरु जी से आज्ञा लेकर, सत्य वचन कहकर भोरा साहिब की स्थापना की और फिर गुरु कृपा से भक्ति के पथ पर चलकर परमपिता परमेश्वर की प्राप्ति की।

दोहा : गुरु कृपा से मिल गये, जगत्पति जगदीश ।

अब मन में उल्लास है, गुरु की साथ आशिष ॥

गुरु की परम आशिष से, अब होगा कल्याण।

वरदहस्त रख शीश पर, गुरु देंगे वरदान।। अब मेरा कर्तव्य है, करूँ गुरु का ध्यान।

"लाल" गुरु की युक्ति फले, करूं लोक कल्याण॥

तपोस्थान श्री ओम जी का

दोहा: तपोस्थान श्री ओम का, जो भोरा कहलाए।

यहाँ बैठकर ओम ने, अपने रंग दिखाए।। अंग्रेजी सरकार ने यहां डाली लकीर।

हमको नहर निकालनी, इसी धाम को चीर।।

तब सिद्ध पुरुष की करनी, चली नहीं तदवीर।

अनेक यत्न कर हारे, लखी न पड़े लकीर ।।

ओम जी का तपोस्थान-यह वह कर्म भूमि एवं पावन पवित्र स्थान है। जहाँ एकान्त में बैठकर बापू ओम नारायण दत्त जी महाराज ने उस परमपिता परमात्मा की प्राप्ति के लिए घोर तपस्या की। न दिन देखा, न रात देखी, न आंधी देखी न वर्षा देखी, न धूप देखी, न छांव देखी, न घटाटोप बादलों की बरसात देखी, यदि देखी तो उस अलख अपार की भक्ति देखी। गुरु की बताई सुमिरण युक्ति देखी।

सद्‌गुरु बापू ओम जी महाराज का तपोस्थान जो नूरशाह जिला मिन्टगुमरी पश्चिमी पंजाब (जो अब पाकिस्तान में हैं) यहां सदगुरु बापू ओम जी महाराज ने अनेक कौतुक दिखाए, उन्हीं के फलस्वरूप उनके गुरुदेव बापू ज्वाला सिंह जी महाराज के कारनामें भी उजागर हुए।

इधर ब्रिटिश सरकार के सिंचाई विभाग द्वारा नूरशाह नगर से पूर्व की ओर जा रही बड़ी नहर से छोटी नहर निकालनी थी, जो बापू ओम नारायण जी के तपोस्थान से जानी थी, किन्तु खुदाई उपरांत तपोस्थान के कारण, आगे कुछ भी न दिखाई देता था। सभी यत्न निष्फल हुए। इस पर अंग्रेज जिलाधिकारी को बुलाया गया। वह कब मानने वाला था, उसे इस बात पर विश्वास न हुआ, तब उसने स्वयं खड़े होकर निशानदेही का आदेश दिया। किन्तु कुछ समय उपरांत वह भी हैरान परेशान होकर, माथे पर हाथ मारकर बैठ गया। तब उसने भी खुदाई का काम रोक दिया। उसे भी कुछ न दिखाई दिया। इस पर जिलाधिकारी ने गांव के बड़े-बड़े प्रतिष्ठित लोगों को बुलाकर पूछा, यहाँ कौन-सी अद्भुत वस्तु है, जो कार्य करने पर बाधक है। तब महामनीषियों ने बताया। यहां सिद्ध महापुरुष ईश्वर उपासक बापू ओम नारायण जी महाराज का तपोस्थान है।

यह सब उन्हीं का प्रताप है, जो आगे कुछ दिखाई नहीं देता जिलाधिकारी साहिब हमारी मान लीजिए। इस स्थान को छोड़कर नहर को घुमाकर दूसरी ओर से निकाल लीजिए। अन्यथा संतों से टकराना, संकटों से खाली न होगा।

इस पर जिलाधिकारी को नहर घुमाकर लेनी पड़ी और तपोस्थान की भूमि छोड़नी पड़ी। तब जिलाधिकारी ने छः एकड़ भूमि बापू ओम नारायण जी के भक्तों को मंदिर निर्माण हेतु अर्पण कर दी ।

इस अनूठे अद्भुत चमत्कार को देखकर तथा आनंद विभोर होकर उनके गुरु ज्वाला सिंह जी महाराज ने अपने प्रिय एवं परम सुजान शिष्य को अपने जन्म स्थान नंदा चौर में जो पंजाब में जिला होशियारपुर में है जाने की आज्ञा सुनाई और वहां जाकर ग्रामवासियों को प्रभु के नाम से जोड़ने की युक्ति बताई।

ऐसे में गुरुजी के चरण स्पर्श कर, तथा नतमस्तक होकर नंदा चौर की डग अपनाई। नंदा चौर में आकर बापू ओम नारायण जी ने एक एकान्त स्थान का चयन कर थड़ा साहिब की स्थापना की। तब यहां प्रभु नाम की जोत जगाई, भजन, कीर्तन तथा सिमरण की रोशनी दूर-दूर तक फैलाई। इस बापू रूपी तेज प्रकाश पुंज ने अनेक प्राणियों का उद्धार किया, दुःख-रोग-व्याधि का संहार कर, सत्य का प्रकाश किया।

दोहा : भक्ति में है शक्ति बड़ी, जान लेओ सब कोए।

जो मूर्ख समझे नहीं, शीश पकड़ कर रोए। जिलाधिकारी झुक गया, पाप कौन संजोए। संतों से टक्कर लेना, अंतकाल तक रोए। संत पुरुष इस देश के, जग में बड़े महान। "लाल" इन्हीं से ले लो, जगजीवन वरदान।

संत पुरुष के अटल वचन

दोहा : ओम नारायण दत्त जी, देव पुरुष भगवान् ।

सुख-दुःख के साथी यही, जाने भक्त सुजान।।

इनके चरणों में रहो, तो होता कल्याण। इनकी गाए जो कीर्ति, उसके सुख में प्राण ॥

जो करता इस संत का, मन ही मन अपमान।

सहज भाव से भी कहें, तो होता नुकसान।।

सद्गुरु बापू ओम नारायण दत्त जी महाराज नंदाचौर की पवित्र धरती पर तपो स्थान थड़ा साहिब पर बैठकर एकान्त में तपस्या करते थे। वहां किसी प्रकार की कोई बांधा न पड़ती, आपकी आत्मा पति परमेश्वर से जुड़ जाती, आपको किसी प्रकार की सुध न रहती। आपकी रसना ओम तत सत-ओम तत सत की रट में लग जाती। ऐसे में आपको ईश्वर की ओर से आशीवार्द मिलता। तब आप प्रसन्नचित होकर लोक कल्याण के लिए समाधि से उठते और दूर-दूर तक दृष्टि दौड़ते, पवित्र एवं सच्चरित्र रहकर अन्य प्राणियों को बुरे कर्मों से बचाते। अभिमानियों को अभिमान से मुक्त कर सतपथ दिखाते।

एक बार संत पुरुष बापू ओम नारायण जी महाराज नंदा चौर में नामी कपड़ा व्यापारी की दुकान पर कपड़ा लेने गए। व्यापारी संत पुरुष को देखकर सिर नीचा करके बैठ गया, उसके मन में बुरे-बुरे विचार उठने लगे। कहीं ऐसा न हो, यह संत पुरुष कपड़ा ले जाएं और दाम न दें। उसकी बुद्धि व आत्मा मलीन हो गई। बापू ओम नारायण जी महाराज ने बड़े प्रेमपूर्वक कहा-भाई जी। हमें एक थान मलमल का पगड़ी के लिए चाहिए। उसने थान होने पर भी मना कर दिया। इस पर संत पुरुष ने सहज भाव से कहा-क्या तेरी दुकान में आग लग गई है जो एक थान भी नहीं है। बापू जी एक थान की पगड़ी बांधते थे। इसीएि एक थान मलमल की मांग की। इतना कह कर संत पुरुष चल पड़े। तब वह दुकानदार बड़ी ऐंठ से हुक्के का सेवन करने लगा। देखते ही देखते आंधी का एक प्रचण्ड झोका आया, हुक्के की चिलम से अग्नि का एक शोला निकला और सारी दुकान को नष्ट भ्रष्ट कर राख कर दिया। दुकानदार की स्थिति बड़ी दुःखदाई हो गई। उसे संत पुरुष के निरादर का फल मिल गया। संत पुरुष जो कह देते हैं वह पाषण पर रेखा है।

तब वह रोता-चिल्लाता, माथा पीटता, महाराज जी की शरण में तपो स्थान थड़ा साहिब पर आया और फिर महाराज जी के सन्मुख खड़ा होकर अपनी भूल का पश्चाताप करने लगा। हे संत पुरुष जी। मुझ अज्ञानी के दोष भुला दीजिए। मैंने अभिमान वश ऐसा कार्य किया, आपको साधारण व्यक्ति जाना। हे महामनीषी ज्ञानेश्वर जी। मेरी भूल को अनदेखा कर अपनी कृपा का प्रसाद दीजिए। मेरी दुकान फिर से भरवा दीजिए। अन्यथा मेरे बाल-बच्चे भूखे-प्यासे बिलख-बिलख कर अपने प्राण छोड़ जाएंगे।

संत पुरुष बड़े दयालु होते हैं। उनका मन फूल समान कोमल होता है। वह दीन की सहायतार्थ हेतु सदा तत्पर रहते हैं। उसके दोष भुलाकर तुरन्त उसके साथ हो जाते हैं। तब उस दुकानदार को पास बैठकर कहा- हे भलेजन। अब पश्चाताप करने का कोई लाभ नहीं, जो होना था सो हो चुका। जो खोना था सो खो चुका।जाओ अब अपनी दुकान को साफ सुथरा कर वहां बैठ जाओ। ईश्वर की कृपा होगी। तुम्हारी दुकान वैसी भरी होगी। तुम्हें देने वाले आएंगे और लेने वाले तुम्हारी दशा देखकर सब लिया दिया क्षमा करेंगे। तत्पश्चात् ऐसा ही हुआ, दुकानदार की दुकान फिर से भर गई और जोर शोर से चलने लगी।

संत पुरुषों की जिस पर कृपा होती है, उनकी नाव कभी न डूबती है।

दोहा : जिस पर कृपा संत की, उसे कष्ट ना कोए।

ओम संत महाराज ने, सबके दुखड़े धोए। जिसने थड़ा साहिब पर, की है दीन पुकार।
ओम तुरंत ही हो गये, उसके मददगार।।

ओम प्रभु स्वरूप की, महिमा बड़ी अपार। "लाल" उसी की जीत है, जो आया दरबार ।।

बापू धाम के मीठे बोल / 53

ओम नाम की टेक ले

दोहा : जगत झमेला झूठ है, इससे नाता तोड़।

अपनी जीवन नाव को, ओम निष्ठा पर छोड़।

एक दिवस चल देना है, सबसे मुखड़ा मोड़। तू बापू की टेक से, राम रत्न धन जोड़ ॥

यह संसार नाशवान है केवल प्रभु का नाम स्थिर रहने वाला है। वह मानव धन्य है, जो सुबह शाम उठते बैठते प्रभु नाम का जाप करते हैं और मन बर्तन को साफ रखते हैं। बापू ओम नारायण जी इसी पवित्र नाम का जाप करने की प्रेरणा देते हैं। तभी तो जगत झमेलों से दूर रहते हैं। उस जन पर सुख दुःख का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, जो बापू ओम नारायण जी का चिंतन करते हैं। बापू ओम नारायण जी संतपुरुष है, इन्हें सत्य से गहन प्रेम है। यह अपने श्रद्धालु के हृदय मे प्रवेश करके सत्य का प्रकाश करते हैं। एक दिन सभी को यह संसार छोड़कर जाना है, केवल प्रभु नाम ने साथ निभाना है मात-पिता-सुत-भाई, बहन सब यहीं के नाते हैं, जो आंख बंद होते ही छुट जाते हैं। बापू ओम नारायण जी महाराज! अपनी अमर वाणी में यही समझाते हैं और मानव को प्रभु नाम का रस पिलाते हैं !

हे कलयुग के झमेलों में फंसे हुए जीव। एक बार बापू ओम नारायण जी से नाता जोड़कर देख। अपने पराये सबसे नाता तोड़कर देख। बापू ओम जी महाराज तेरा उद्धार करेंगे, तेरी नाव को कन्धा लगाकर पार करेंगे। तू भव जल पार हो जाएगा, गोते नहीं खाएगा।

भाई अतर सिंह जी नाम के उच्चकोटि के एक कथावाचक एवं विद्वान ग्रंथी हुए हैं। जो नूरशाह नगर जिला मिन्टगुमरी, पश्चिमी पंजाब जो अब पाकिस्तान में हैं। वहाँ के निवासी थे। वह स्थान बापू जी की नगरी से विख्यात था। भाई जी वहां ओम दरबार में जाया करते थे और नित्यप्रति अपना सिर झुकाना सौभाग्य मानते थे। उनके घर दो पुत्र आत्मा सिंह व परमात्मा सिंह का जन्म बापू ओम नारायण जी की कृपा से हुआ था इसीलिए वह महाराज जी के दृढ़ विश्वासी भक्त थे। इधर एक दिन बापू ओम नारायण जी अपनी जन्मभूमि नंदा चौर जिला होशियारपुर पंजाब में चले आये। किन्तु दृढ़ विश्वासी भक्त का सम्बन्ध ठीक उसी प्रकार जुड़ा रहा, वह आंखे बंद करके प्रतिदिन बापू जी का दर्शन कर लेते, बापू जी भी अपने श्रद्धालु से दूर न हुए। जब कभी भी मन सेवक को देखने का करता तो नूरशाह नगर की ओर

मुख करके आवाज लगाते-भाई अतर सिंह आ जाओ, उनकी आवाज 350 किलोमीटर की दूरी पर बैठे हुए भाई अतर सिंह जी के कानों में पड़ती, वह तुरंत नंदाचौर की ओर दौड़ पड़ते और अपने गुरुदेव का दर्शन

करके शांति पाते। मार्ग में सच्ची गुरु प्रीति के कारण कोई बाधा न पड़ती। क्योंकि गुरुदेव अपने शिष्य की राह में पलके बिछाए रहते, जब शिष्य आ जाते तो तुरन्त गले लगाते और फिर कुशल क्षेम पूछकर चैन पाते।

भाई अतर सिंह जी के चेहरे पर नाम खुमारी की लाली सदैव चढ़ी रहती जो, गुरु शिष्य की सच्ची पहचान बताती।

दोहा :गुरु चेले की प्रीत तो, कई जन्मों का साथ।

फिर भी गुरु परीक्षा ले, रखते सिर पर हाथ।।

जब भी अपने भक्त को, गुरु ने कीना याद। मुखड़ा भक्त की ओर कर, तब दीनी आवाज ।।

गुरु की नेक पुकार पर, भक्त हुये तैयार। "लाल" सभी कुछ छोड़ के, आये गुरु के द्वार ।।

अनार बाग

दोहा :ओम नारायण बाग के, अनार बड़े स्वाद।

रंग बिखेरे ओम के, देवलोक प्रसाद ।। जिस जन ने भी कर लिया, इनका अमृत पान।

भक्ति रस की सीढ़ी पर, वही चढ़ा इंसान ।।

ऐसी करनी ओम की, जपे ओम का नाम। धर्मराज भी ओम सुन, उसे करे प्रणाम ।।

ओम नाम जगकर्ता का, जिसका सब संसार।

सभी लोग नित जप रहे, ओम नाम निस्तार ।।

अंग्रेजी शासन द्वारा छः एकड़ भूमि पा कर बापू ओम नारायण जी के प्रिय भक्त बाबा ब्रह्म दास जी महाराज बड़े प्रसन्न हुए। तब अपने दोनों युवा भतीजे श्री देवराज जी तथा श्री किशन चन्द जी को साथ लेकर बापू ओम नारायण जी का स्मरण कर इस भूमि को उपजाऊ बनाया फिर एक अनार बाग

लगाकर इस स्थान का नाम रामगढ़ रखा। बापू ओम नारायण जी की कृपा से भूमि धन धान्य से भरपूर होने लगी और अनार बाग की डालियां भी अच्छे फल देने लगी। तब ट्रकों में भर-भर कर अनार लाहौर शहर जाने लगे। बाबा ब्रह्म दास जी बापू ओम नारायण जी की संगत को एक आने के पांच सेर अनार देने लगे और साथ में पांच सेर अनार प्रसाद के रूप में भेंट करने लगे। बाग के मुख्य द्वार पर भक्त जी ने एक कुआं खुदवाया ताकि आने-जाने वाले यात्री अपनी प्यास बुझा सकें और बापू जी का यशोगान कर सके।

इस कुआं का जल बापू जी की अनुकम्पा से मीठा व बर्फ समान शीतल था। यात्री इसे पी-पी कर निहाल होते और ओम जी की जय जयकार बुलाते।

इस तपोस्थान के भोरे के ऊपर संगत ने सत्संग के लिए एक कमरा बनाया और वहां प्रतिदिन सत्संग का सागर बहाया। जब अधिक संगत आने लगी। तब इसी के ऊपर दूसरा कमरा स्थापित किया। सो इस प्रकार इस पवित्र धाम को चार चांद लगाए और बापू जी के ईश्वरीय संदेश घर-घर तक पहुंचाएं। तब यह पवित्र स्थान रामगढ़ धाम से प्रसिद्ध हुआ।

देश विभाजन उपरांत यह स्थान पाकिस्तान में रह गया। तब बाबा ब्रह्म दास जी मौला का मलंग नाम से जाने गए। बाबा जी ने नश्वर शरीर इसी स्थान पर अपने गुरुदेव बापू ओम नारायण जी का नाम जपते जपते त्यागा।

दोहा : बाबा ब्रह्म दास ने छोड़ा यहां शरीर। मतलोक की कट गई, गले पड़ी जंजीर ।। चली आत्मा भक्त की, जगकर्ता के धाम। आगे खड़े बापू ने, हाथ लिया झट थाम ।। सारे बंधन काट के, उसे जपाया नाम। "लाल" धर्मराज भी किए, सब अनदेखे काम।।

सेवा की महिमा

दोहा : सेवा कभी न छोड़िये, जब तक घट में प्राण,सेवा से ही पाइये, विश्वनाथ भगवान ।।सेवा अपना धर्म हो, सेवा हो ईमान।

फिर कैसे ना होगा, तेरा जग कल्याण ।। बापू जी ने दे दिया, यह सुंदर उपदेश। जान सके तो जान ले, यही नेक संदेश।।

सद्गुरु बापू ओम नारायण दत्त जी महाराज का समूह मानवी जाति को यही सुंदर उपदेश है। जिसने भी सच्चे मन से अपने आराध्य एवं गुरु की सेवा की है, सच मानो तो उसी ने ही जगत पिता की शरण ली है। जिस मनुष्य का सच्चा धर्म सेवा है, उसका निश्चित रूप से कल्याण है। हे कलयुगी प्राणी।

सच्चे गुरु की खोज कर और फिर गुरु की सेवा कर अपना जीवन कृतार्थ कर, यही इस जीवन का मनोरथ है। इस जन्म को कौड़ी के मोल न गंवा, बापू ओम नारायण जी के वचनों पर ध्यान लगा-

मानव जन्म दुलर्भ है, इसका जानो मोल,संत रात दिन कूकते, सुनो कान दो खोल ।।

सद्गुरु बापू ओम नारायण दत्त जी महाराज के परम शिष्य श्री हरनाम जी अपने गुरु की सेवा में सदा लीन रहते थे। वह थड़ा साहिब पर भक्ति में आसीन

गुरु जी की समाधि खुलने तक प्रतीक्षा करते थे। जब गुरु जी की समाधि खुलती, तुरंत वचनों का पालन करते और उनकी इच्छाओं की पूर्ति करते।

एक दिन भयानक ग्रीष्म ऋतु में एक माई हांपती हुई सिर पर भारी गठ्ठरी उठाए हुए, थड़ा साहिब के समीप आई और श्री हरनाम जी को सहायतार्थ हेतु विनय सुनाई। हे बापू भक्त जी। मेरी गठ्ठरी यहां से थोड़ी दूर मेरे गांव बुलोबाल पहुंचा दीजिए। मैं आपका उपकार कभी न भुलाऊंगी। श्री हरनाम जी को उस माई पर दया आई। तब गठ्ठरी उठाकर डग अपनाई, किन्तु मार्ग में घोर चिंता सताई कहीं ऐसा न हो गुरु जी की समाधि खुल जाए और मुझे न पाकर दुःख मनाएं। तब परोपकारी शिष्य ने बरसाती नाला (चोह) पार करवा गठ्ठरी उसके सिर पर रखवाकर दौड़कर सेवा में उपस्थिति दी। इधर सद्गुरु जी की समाधि खुल चुकी थी अपने शिष्य हरनाम जी को आते देखकर बोले क्यों मेरे भोले भक्त। यदि इतना परोपकार किया था तो थोड़ा ओर कर देते, उस वृद्धा को घर तक छोड़ आते। इसमें क्या हानि थी।

इस पर हरनाम जी ने जान लिया कि गुरु जी जानीजान है, इन्होंने मेरे मन की जान ली है। तब तत्काल गुरु जी के चरण पकड़ कर क्षमा याचना की। गुरु जी हंस पड़े और फिर शिष्य को गले से लगाकर बोले-हे मेरे हृदयग्राही शिष्य। आज के वचन सुनो।

दोहा : सेवा में ही लीन है, अठसठ तीर्थ धाम । तूने उजला कर दिया, आज गुरु का नाम ।। तेरा होगा जगत में, चहूं ओर यशोगान । तुझे शीश झुकाएंगे, बड़े-बड़े विद्वान।। थड़ा साहिब सुसज्जित हो, मेरा करना ध्यान। "लाल" गुरु की आशिष से, होगा मान सम्मान।।

सिद्ध पुरुष श्री ओम जी महाराज

दोहा : योगी हैं श्री ओम जी, रत्नों के भण्डार। उनकी यौगिक कला को, जाने सब संसार ॥ योग साधना से बना, उनका तन बलवान। प्रभु मिलन का पथ यही, योग सुखद सम्मान।। योग हमें ज्यों कहता, अपने को पहचान। तेरे घट में बस रहे, सृष्टि के भगवान ।।

महाराज जी का जन्म ब्राह्मण परिवार में हुआ, किन्तु वह योगियों, संतों. विद्वानों तथा ज्ञानियों में रहे, वह योगियों में योगी, संतों में संत, पंडितों में पडित. रियों विषयों में ज्ञानी तथा विद्वानों में विद्वान थे। वह अपने श्रद्धालुओं को सदैव सदुपदेश देते वह कहते -हे संसारियों। योग के द्वारा एकाग्रता बढ़ाओ सुष्टि कर्ता पालको साकार रूप में पाओ, तुम्हारे भीतर सर्वशक्तिमान प्रभु विद्यमान हैं। योग से भाई शरीर, बलवान बनाओ, योग ही प्रभु से मिलन का सुखद संगम है। योग का ध्येय दिव्यता को प्राप्त करना है। इसके अभ्यास से व्यक्ति सदाचारी एवं संयमी बनता है. सुंदर स्वस्थ काया को पाता है। जीवन में निरोगता व आत्म शांति मिलती है, स्वास क्रियाओं से आयु बढ़ती है, विकारों का नाश होता है ओर अन्तरमुखी तीर्थ में सत्य का प्रकाश होता है।

बापू ओम नारायण जी महाराज अपने प्रपन्नों को योग क्रियाओं के सहारे जीना सिखाते थे और स्वयं भी योग क्रियाएं करते थे। वह खण्ड योग तथा समाधि भी लगाते थे। खण्ड योग एक ऐसी कला है, जिसमें मां कालिका को सिद्धी द्वारा रिझाते हैं ओर फिर अपनी थकान को दूर करने के लिए शरीर को खण्ड-खण्ड कर लेते हैं। एक दिन एक कृषक ने यह दृश्य अपनी आंखों से देखा। ओम जी का सिर कहीं, धड़ कहीं पैर कहीं, हाथ कहीं, यह सब देखा। तब वह रोता पीटता व चिल्लाता घर लौटा, रो-रोकर यह सब अपनी पत्नी को बताया। उसका रोना पीटना सुनकर राष्य। उसके पड़ोसी इकट्ठे हुए और ग्रामवासियों सहित रोते पीटते थड़ा साहिब पर पहुंचे।

किन्तु वहां ओम जी को समाधि में लीन देखकर आश्चर्यचकित हो गए। तब उस कृषक के प्राण में प्राण आये।

इतने में ओम जी की समाधि खुली और वह कृषक को देखकर ठहाका मारकर हंसे, फिर उसे गले से लगाकर कहने लगे क्यों भाई। इतने भयभीत क्यों हो हम सुरक्षित है। हमारी चिंता छोड़ दो और प्रभु का नाम लो।

तब वह बापू ओम नारायण जी की जय जयकार करने लगा-बोलिए सद्‌गुरु बापू ओम नारायण जी महाराज की जय।

दोहा : जो भी ओम का नाम ले, वह निर्भय हो जाए। ओम नाम की शक्ति से, भय निकट नहीं आए। निर्भय हो जीवन जीओ, यही ओम का ज्ञान। "लाल" भय का त्याग कर, ओम के गुण पहचान।।

कथा दो सेब की

दोहा : ओम भक्त लभुराम जी, बड़े नेक इंसान। नंदाचौर पर आते, सुनने को व्यख्यान।। पर संकोचवश मन की, कह ना पाते आन। बापू जी एक पुत्र दो, घर है नर्क समान ।।

बापू भक्त लभुराम जी हकीम नंदाचौर धाम के नेक एवं सच्चे श्रद्धालु थे। वह नित्यप्रति नंदाचौर दरबार में आते और बापू जी को साक्षात् भगवान् जानका उनके चित्रों को नतमस्तक होकर शीश झुकाते। उनका विवाह पंडित घराने में बीबी हुक्म देवी के साथ बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। कई वर्ष बीत गए किन्न संतान का मुख न देखा। तब एक दिन संकोच को त्यागकर बापू ओम नारायण के से अकेले में बात की और एक पुत्र पाने की मांग की। अपने भक्त की दयानीय दशा देखकर बापू जी कुछ पल के लिए अवाक् रहे, फिर सामने पड़े दो सेबों को देखते हुए कहा-हे मेरे विश्वासी भक्त। तुम्हारे सामने तुम्हारे दो पुत्र बैठे हैं। जाओ। उन्हें उठालो और घर जाओ। संत साक्षात् ईश्वर होते हैं, वह भक्त पर सदा दयाल होते हैं, केवल मुख खोलने की आवश्यकता है। मनोकामना सिद्ध होने में देर नहीं। संत के पलक छपकते बारे न्यारे होते हैं, संत की दयादृष्टि से कर्म उजयारे होते हैं।

भक्त जी ने दृष्टि उठाकर सामने देखा, कुछ समझ न आया, फिर हाथ जोड़कर निवेदन किया। महाराज। मैं अल्पबुद्धि आपकी पहेली समझ नहीं पाया। कृपा समझाकर कहें। बापू ओम नारायण जी आसन से उठे, सामने दो सेब रखे उसकी झोली में डालकर बोले लो। इन्हें ले जाओ। यही तुम्हारे दो ज्ञानवान पुत्र हैं। एक इस गद्दी के स्वामी होंगे और दूजे ईश्वर के सच्चे पुजारी होंगे।

संतों के वचन अटल हैं, सदा अटल रहेंगे। संतो के आसरे धरती गगन अटल हैं, अटल रहेंगे। समयानुसार भक्त लभु राम जी के घर दो पुत्रों ने जन्म लिया। एक संत गुरदास राम जी के नाम से नंदाचौर दरबार के स्वामी हुए और दूसरे भक्त शिव दत्त जी के नाम से ईश्वर के सच्चे उपासक हुए। संतों के वचन मिथ्या नहीं होते, वह अवश्य प्रभाव दिखाते हैं।

दोहा : सूना घर भी खिल गया, बापू हर ली पीर। ओम नारायण दत्त ने, सब दुःख दीने चीर।। भक्त न्यौछावर गुरु पर, गुरु बंधावे धीर। "लाल" अंत में काल की, गुरु काटें जंजीर ।।

थड़ा साहिब की महत्तता

दोहा : ओम नारायण थड़े की, ललाट चढ़ाओ धूल। जन्म सफल हो जाएगा, सभी छटेंगी भूल ॥ धर्म कमाओं प्राणियों, यही धर्म अनुकूल। मानव जन्म पुनीत है, यह सृष्टि का मूल।

मानव जन्म बड़ा ही पुनीत हैं। संत पुरुष कहते हैं कि इसी जन्म में जगतपिता जगदीश्वर को मिला जा सकता है। उस परम तत्व को मिल कर चौरासी के

चक्कर से मुक्ति मिल सकती है। यही हमारे जीवन का मनोरथ है, यही हमारा धर्म है, यही सृष्टि का मूल है। मनुष्य के पांच शत्रु,काम-क्रोध-मोह-लोभ-हंकार सदा मनुष्य के पीछे लगे रहते हैं, जो मनुष्य को समय-समय पर डसते हैं। इन सबको को काटना गुरु की कृपा से संभव है। गुरु परब्रह्म के परम

तत्वों का ज्ञान रखते हैं। वह परब्रह्म के भेदों को जानते हैं। गुरु संसार के सुख-दुःख देखकर प्रसन्न व निराश नहीं होते।

सद्गुरु बापू ओम नारायण जी महाराज भी ऐसे धर्मात्मा थे। उन पर जगत झमेले का कोई प्रभाव न था उनके चेहरे पर ईश्वर का अलौकिक नूर था। एक थान की पगड़ी शेरों सा स्वरूप था। उनके थड़ा साहिब की धूल आज भी अनेकों व्याधियों का उपचार है। थड़ा साहिब की धूल मस्तक पर चढ़ाने से दसम् द्वार खुलता है। और फिर मोक्ष धाम का दर्शन होता है। जो जन श्रद्धापूर्वक नित्यप्रति इस धूल को मस्तक का श्रृंगार बनाते हैं। वह संसार सागर से पार हो जाते हैं।

दोहा : चरण धूल श्री ओम की, लाखों कर गई पार। लाखों खड़े पंक्ति में, लाखों को इंतजार ।। इसे चढ़ा लें शीश पर, मन में रख विश्वास। "लाल" ओम के आसरे, पूरी होगी आस ।।

बापू धाम के सेवक

बापू ओम नारायण दत्त जी महाराज का तपोस्थान पहले कच्चा थड़ा साहिब के रूप में स्थापित था। इसे भक्त गुरदास राम जी महाराज ने पक्का बनाकर भव्य मंदिर का स्वरूप दिया। फिर इसमें कुछ सुधार करके ओम शहनशाह झण्डा साहिब की स्थापना की। इसके उपरांत समाधि में लीन बापू ओम नारायण दत्त जी की जीती जागती संजीव प्रतिमा की स्थापना इसी तपोवन में बापू जी के चरणों में नतमस्तक होकर, श्री हरि को साक्षी करके, अपनी बुद्धिमता अनुसार की।

भक्त भानू दत्त जी महाराज ने इस पवित्र धाम को और सुंदर बनाने का संकल्प लिया। अतः स्वयं अपने कर कमलों से इसी पवित्र तपोस्थान पर अनार के सुंदर-सुंदर वृक्ष लगाकर इसे और सुन्दरता प्रदान की।

सो इस प्रकार श्री ओम नारायण दत्त जी के इस पवित्र स्थान को सारे संसार में प्रसिद्धि मिली। आज इस पवित्र स्थान पर चौबीस घंटे ओम नाम की धुन गूंजती है। जो वहां पर जाने वालों के हृदय में घूमती है। यहां सुसज्जित प्रतिमाएं प्रत्येक प्राणी के अन्तरमुखी कमल को चूमती हैं, और जन्म-जन्मान्तर के पाप धोती हैं।

दोहा :ओम नारायण धाम का, तब से निखरा रूप।जब से बापू हरनाम, यहां जगा गए धूप ॥ बापू श्रद्धाराम ने, इसका जाना मोल।

अपने भक्तों को दिये, यहां वचन अनमोल ।। गुरदास जी के श्रम से, सफल हुये सब काज। इन संतों के कर्म से, चमका संत समाज ।। बापू भानु दत्त ने दिया निराला योग। अनार बाग की देन है, इनका शुभ संयोग। इन संतों के कथन से, यहाँ चढ़े प्रभात। "लाल" सभी को मिल रही, जग जीवन सौगात ।

बापू ओम नारायण जी का

ज्योति ज्योत समाना

दोहा:प्रभु भक्त और प्रभु का, भेद समझ न आए।भक्त प्रभु घर जा रहा, मन हर्षित मुस्काए ।। जगत झमेला झूठ है, जान लेओ सब कोए। जगत्पति की कृपा से, पार उतारा होए। जिस कारण से प्रभु ने, भक्त जगत भिजवाए। भक्त सभी से निपट कर, लेखा देने जाए।।

इस संसार के नियमानुसार सभी को उस करुणाकर की धर्म सभा में जाकर लेखा जोखा देना होता है। फिर जन्म-मरण का चक्र आरंभ होता है। प्रभु भक्त एवं महापुरुष इन सब बंधनों से मुक्त होते हैं। वह दयावान बुद्धिमान तथा परम सुजान होते हैं। इसीलिए प्रभु अपने भक्त को संसार उद्धार के लिये भेजते हैं।

नंदाचौर वासी बापू ओम नारायण जी महाराज अपने जीवन काल के सभी कार्यों को भली भांति निभाकर अब मस्ती की दुनियां में रहने लगे। कभी-कभी वह रात्रि में सोते हुए उठकर चलने लगते और मुख से कुछ गुनगुनाने लगते। उनके भक्तों को भय लगा रहता कि कहीं चौबारे से नीचे न गिर जाएं। उन्होंने अंतिम समय में भी अपने प्रिय चौबारे को न छोड़ा। भक्त हरनाम जी को बापू प्रेमियों ने हर समय उनकी सेवा में नियुक्त कर दिया। एक दिन बापू ओम नारायण जी को चौबारे के नीचे बैंड बाजे सुनाई पड़े। तब बैड़ वालों को बुलाकर कहा-आज से आंठवें दिन तुम्हें यहां आना होगा, बैंड बाजा बजाना होगा, तुम्हें अच्छा पैसा मिलेगा।

कुछ दिन बीत जाने पर सांतवें दिन की रात को ओम जी जोर-जोर से चिल्लाने लगे। न जाने कौन-सी भाषा में शोर मचाने लगे। किसी की कुछ समझ न आया। ऐसे में भक्त हरनाम जी की नींद खुल गई, वह तुरंत आकर सेवा में उपस्थित हुए और बोले। आप इतना क्यों अकुला रहे हैं। ओम जी ने नींद को छोड़कर आंखें खोल कर कहा-भक्त जी! हमें धरती मां बुला रही है। अब जीवन लीला समाप्त होने जा रही है। तुम सो जाओ, कोई बात नहीं। इस पर भक्त हरनाम

जी निश्चिंत सो गए। इसी बीच ओम जी ने बिस्तर से उठकर चौबारे की गली में छलांग मार दी। उनके गिरने की आवाज सुनकर आस-पास के लोग इकट्ठे हुए और ओम जी को देखकर विराग करने लगे। इस शोर को सुनकर हरनाम जी भी जाग गए और रोते हुए ओम जी के संमुख उपस्थित हुए। ओम जी

ने कहा-रोओ मत। ओम के बाजे बज गए, गाजे गज गए, झंडे झुक गए। अब हम अपने प्रियतम से मिलने उनके देश जा रहे हैं। फिर तुरंत समाधि लगाकर यौगिक क्रिया द्वारा अपने शरीर का त्याग कर दिया। यह घटना सवत् 1970 विक्रमी ज्येष्ठ 25 सुदी पूर्णिमा सोमवार की थी।

बापू ओम नारायण जी की शव यात्रा को उनके आदेशानुसार गाजे-बाजे सहित निकाला गया और उनके चौबारे की व्यवस्था का सारा भार भक्त हरनाम जी को सौंप कर बापू जी की पदवी से सम्मानित किया।

दोहा : ओम नारायण दत्त जी, छोड़ गये संसार। जिस काज हित जन्म लिया, उससे उतरे पार ।। शुभ दिवस सोमवार का, गुरु कृपा निस्तार। "लाल" यात्रा सफल हुई, जो दीनी करतार ।।

श्री ओम महिमा

"काव्य लहरी"

दोहा : धरती पावन हो गई, जब ओम चरण टिकाए।उबड़ खाबड़ धरती ने, तब फिर मंगल गाए।

तर्ज-मेरी आंखों में बस गया कोई रे

नंदाचौर की धरती उभार ली, ओम संतों के संत महाराज ने।

थड़ा साहिब पे चौकड़ी मार ली, ओम संतों के संत महाराज ने ।।

नंदाचौर की धरती उभार ली......

ज्वाला सिंह की शरण में आशिष ली, फिर आशिष से ऐसी एक सीख ली। दीन दुखियों की सेवा में रहना, इसके दम से यह दुनिया जीत ली ।। छवि ईश्वर की सभी में निहार ली, ओम संतों के संत महाराज ने। थड़ा साहिब पे चौकड़ी मार ली, ओम संतों के संत महाराज ने ।।

नंदाचौर की धरती उभार ली.....

सच्चे गुरु बिना मार्ग नहीं मिलता, फूल हृदय का कभी नहीं खिलता। जगसृष्टा के दर जाने वाला, कोई रास्ता भी नहीं निकलता ।। सीख गुरु जी की मन में उतार ली, ओम संतों के संत महाराज ने।

थड़ा साहिब पें चौकड़ी मार ली, ओम संतों के संत महाराज ने।।।

नंदाचौर की धरती उभार ली.....

चारों धाम में जाकर के देखा, शीश सभी को झुका करके देखा। मन को शांति मिली न कहीं भी, गंगा में भी नहा करके देखा ।। गुरु के चरणों में मुक्ति विचार ली, ओम संतों के संत महाराज ने। थड़ा साहिब पे चौकड़ी मार ली, ओम संतो के संत महाराज ने।।

नंदाचौर की धरती उभार ली .....

एक गुरु ही सच्चा परमेश्वर है, इसके आगे सभी कुछ नश्वर है। सच्चे मार्ग का अनुरागी बनकर, किया ओम जी ने जीवन अमर है। "लाल" सतपथ में जिन्दगी गुजार ली, ओम संतों के संत महाराज ने। थड़ा साहिब पे चौकड़ी मार ली, ओम संतों के संत महाराज ने।।

नंदाचौर की धरती उभार ली......

सच्चे खेवनहार

दोहा : पगड़ी वाले ओम जी, सब घट जाननहार। दीन भाव से जो करे, इनसे करुण पुकार।। हाथ पकड़ उस दीन का, भव से करते पार। ओम सभी की नाव के सच्चे खैवनहार ।

।। भजन ।।

तर्ज-मुरली वाले मुरली बजा

ओम जी की सबसे निराली है शान। एक थान पगड़ी है इनकी पहचान।। एक थान पगड़ी में लगे शेर खान । एक थान पगड़ी है इनकी पहचान ।।

ओम जी की सबसे निराली.....

पगड़ी ने इनकी, सुरतिया संवारी। सभी के मन को जो लगती प्यारी।। भक्त हैं इनकी सूरत पे कुर्बान। एक थान पगड़ी है इनकी पहचान ।। ओम जी सबसे निराली......

पगड़ी में इनका छलकता है नूर। थड़ा साहिब ऊपर सजे जब हजूर ।।

आंखे नूरानी छवि मेहरबान । एक थान पगड़ी है इनकी पहचान।।

ओम जी की सबसे निराली......

पगड़ी है ओम के मन का नागीना। इसी ने सिखाया है हरि रस पीना ।। पगड़ी की गठरी में सारा जहान। एक थान पगड़ी है इनकी पहचान ।।

ओम जी की सबसे निराली......

पगड़ी कहलाती राजाओं का ताज। नानक गोबिंद की भी है यह लाज।। संतों की पगड़ी है सुखों की खान । एक थान पगड़ी है इनकी पहचान ।।

ओम जी की सबसे निराली .....

ओम पगड़ी वाले, कभी भी न रूठें। इनकी शरण में भगत खुशियाँ लूटें। "लाल" यह हमारे है करुणानिधान। एक थान पगड़ी है इनकी पहचान ।।

ओम जी की सबसे निराली......

ओम कही ज्ञान की बात

ओम प्रभु ने कह डाली, अपने मुख से बात। सुखी जीवन दो दिन का, फिर रोना दिन रात ।। जो जन नूर के तड़के, याद करे रघुनाथ। उसके सिर पर प्रभु का, दिन भर रहता हाथ।।

॥ भजन ।।

तर्ज-तूने रचा भगवान खिलौना माटी का

ओम कही ज्ञान की बात, ध्यान से सुनले रे। यहां नहीं किसी का साथ, ध्यान से सुनले रे॥

ओम कहीं ज्ञान की बात ......

कोई मात नहीं कोई पितु नहीं, सब झूठा पसारा है। यमदूत जब लेने आते, सबने किआ किनारा है। तब आगे पितु न हो मात, ध्यान से सुनले रे।

यहाँ नहीं किसी का साथ, ध्यान से सुनले रे।।

ओम कही ज्ञान की बात.....

तू फूला-फूला फिरता, क्यों मूर्ख इंसान। कौन चीज तेरे वश में, जिसका तुझे गुमान ।। यहाँ तेरी क्या बिसात, ध्यान से सुनले रे। यहाँ नहीं किसी का साथ, ध्यान से सुनले रे।।

ओम कहीं ज्ञान की बात.......

यह जीवन ढलती छाया, कभी भी ढल जाएगी। कागज की नाव पुरानी, कभी भी गल जाएगी।। इसे तोड़ दे तू हाथ, ध्यान से सुनले रे। यहाँ नहीं किसी का साथ, ध्यान से सुनले रे।।

ओम कहीं ज्ञान की बात.........

यह तेरा जीवन ठेला, कभी न चले अकेला। तू देखन को आया है, बस इस जग का मेला ।। "लाल" अवसर बीता जात, ध्यान से सुनले रे। यहाँ नहीं किसी का साथ, ध्यान से सुनले रे।

ओम कहीं ज्ञान की बात.....

नंदाचौर की धरती

।। भजन ।।

तर्ज-महफिल में जल उठी शमा परवाने के लिए

हे ओम नारायण बापू जी, तुम राजा के राजा हो। नंदाचौर में हमने देखा, तुम्हीं गरीब निवाजा हो।

हे ओम नारायण बापू जी .....

अपनी पावन नयन जोत से, सबके दुखड़े हरते हो। हाथ पसारे भक्त खड़े हैं, सबकी झोली भरते हो।। सब पर दृष्टि रखने वाले, तुम सबके अन्नदाता हो। नंदाचौर में हमने देखा, तुम्हीं गरीब निवाजा हो ।

हे ओम नारायण बापू जी ......

नंदाचौर की उस धरती पर, अन्न का एक न दाना था। पांव रखा जब वहां आपने, अन्न का भरा खजाना था। दीनजनों की सुनने वाले, तुम तो पीर ख्वाजा हो।।

नंदाचौर में हमने देखा, तुम्ही गरीब निवाजा हो।।

हे ओम नारायण बापू जी ......

थड़ा साहिब सुशोभित होकर, विनय सभी की सुनते हो। जिसकी जैसी मनोकामना, वैसा ही फल देते हो। दुख की रेख मिटाने वाले, जन्नत का दरवाजा हो। नंदाचौर से हमने देखा, तुम्हीं गरीब निवाजा हो।।

हे ओम नारायण बापू जी.....

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, भेद न कुछ भी रखते हो। आपस में हम सब है भाई, यह सबको समझाते हो। "लाल" आपसे हम भक्तों का, सच्चा पावन नाता हो।। नंदाचौर में हमने देखा, तुम्हीं गरीब निवाजा हो।

हे ओम नारायण बापू जी.....

धर्मराज के किंकर

यदि बापू को मना लोगो, तो दुःख पास न आएंगे। धर्मराज के किंकर भी, दूर खड़े रह जाएंगे ।। तब यम दण्ड की मार से, ओम जी मुक्त कराएंगे। एक ओम को भज ले बंदे, अंत काम यही आएंगे।

॥ काव्य लहरी ॥

तर्ज-स्वयं बनाएं

ओम जिसके बनें यें सहाई, उसके पैरो में पड़े खुदाई। जिस रसना पे ओम की समाई, उसके पैरो में पड़े खुदाई।

ओम जिसके बनें है सहाई ....

राम शाम नानक व गोबिंद, इन सभी में ओम का वास है। एक ओम हैं सृष्टि के कर्ता जन-जन को यही विश्वास है। यही नाम सदा से सुखदाई, उसके पैरों में पड़े खुदाई। जिस रसना पे ओम की समाई, उसके पैरों में पड़े खुदाई॥

ओम जिसके बनें है सहाई .....

जगकर्ता को ओम ही कहते, उसका यह सभी है पसारा। हर जीव में उसकी जोत है, हर जीव का वही सहारा। उसने ही यह सृष्टि रचाई, उसके पैरों में पड़े खुदाई। जिस रसना पे ओम की समाई, उसके पैरों में पड़े खुदाई॥

ओम जिसके बनें है सहाई....

तेरे हाथ में कुछ भी नहीं है, तू अपने को कहता बलवान। तू अंबार है इस माटी का, वो कौड़ी की तेरी है शान।। जो ओम की रहेंगे शरणाई, उसके पैरों में पड़े खुदाई। जिस रसना पे ओम की समाई, पैरों में पड़े खुदाई।

ओम जिसके बनें है सहाई......

एक ओम को माला पे जपले, इस जन्म का यह है मनोरथ। इस झूठे जगत को छोड़कर, इस जन्म का जानो रे अर्थ॥ "लाल" ओम की महिमा सुनाई, उसके पैरों में पड़े खुदाई। जिस रसना पे ओम की समाई, उसके पैरों में पड़े खुदाई।

ओम जिसके बनें है सहाई......

बापू हरनाम जी की जीवनी

दोहा : बापू हरनाम जी पर, चढ़ा भक्ति का रंग। घर बाहर को छोड़कर, किया संतों का संग।। संत प्रभु का रूप है, उनके घट आनंद। संत रूप मन भा गया, अब घट परमानंद ।।

संतों के पूजनीय एवं वंदनीय चरण जब-जब भी सोना उगलने वाली इस पवित्र धरती पर पड़े। तब-तब इस धरती ने संतों के गुण पुकार-पुकार कर कहे। नंदाचौर की उबड़ खाबड़ धरती ने जब संतों के चरणों को स्पर्श किया। उसके अन्तरमुखी तीर्थ पर एक विचित्र प्रकार का हर्ष हुआ। संतों ने अपनी ओजस्विनी वाणी से धार्मिक चेतना को जन्म दिया। तब धरती का कण-कण प्रभु के रंगों में झूम उठा। इस पवित्र धरती की गोद में बैठकर बापू ओम नारायण दत्त जी के शिष्य बापू हरनाम जी महाराज ने अपनी मुखारबिंद की वाणी से नास्तिक को भी आस्तिक बना दिया और प्रभु का पथ दिखाकर सुरपुर दिखा दिया। आपने नंदा चौर दरबार का सेवक होकर बापू नाम लेवाओं की सेवा करके अपना जीवन धन्य-धन्य कर लिया। बापू हरनाम जी महाराज का जन्म ग्राम हेड़िया जिला जालंधर पंजाब में पिताश्री पूरन दास तथा माताश्री हरकौर जी के गृह में हुआ। आपके पिताश्री ग्राम के ख्याति प्राप्त समाज सेवी प्रतिष्ठत व्यक्ति थे। ग्राम के झगड़े फिसाद मिटाने के कारण आपके पिताश्री अधिक लब्धप्रतिष्ठ हो गए। इसी कारण से उन्हें ग्रामवासियों ने सम्मानित व्यक्तियों की गद्दी का महंत नियुक्त कर दिया। ऐसे में एक श्रद्धालु शिष्य होकर साथ निभाने लगा और दिन-रात सेवा में लीन रहने लगा। बापू हरनाम जी महाराज ने कभी भी पिताश्री की गद्दी पर बैठने का विचार न किया। पिताश्री की शिक्षा को मन लगाकर ग्रहण किया। आपकी शिक्षा आरंभ से उत्तम ढंग से हुई। शिक्षा उपरांत आप चारों वेदों के प्रसिद्ध ज्ञाता हुए। गहन अध्ययन ने आपको ज्ञानी पुरुष बना दिया। आपने ज्ञान की ज्योति का लाभ उठाकर अपने को महान पुरुष बना लिया। पिताश्री के देहांत उपरांत उनके परम शिष्य ने पिताश्री की गद्दी पर अपना अधिकार जमा लिया। आपका गद्दी प्राप्त करने का कोई विचार न था। किन्तु ग्रामवासियों के आग्रह पर गद्दी प्राप्त करने हेतु आपने कचहरी में दावा पेश किया। सभी ग्रामवासी आपके पक्ष में गवाही देने को तैयार थे। कचहरी में जज के सामने बयान देने को गए किन्तु अपने विरोधी की दयनीय दशा देखकर आपने पिताश्री की गद्दी पाने का विचार त्याग दिया और जज के सामने उसे पिताश्री की गद्दी का सच्चा अधिकारी घोषित कर दिया। जज व ग्रामवासी देखते रह गये। सभी दाँतों तले ऊँगली दबाकर बैठ गए। जज आपके इस महान त्याग को देखकर भ्रमित हो गए।

तब आपने पिताश्री की गद्दी के साथ-साथ अपने घर का भी त्याग कर दिया। फिर अनेक धामों तीर्थों का भ्रमण किया। भूखे-प्यासे रहकर पर्वतों की

गुफाओं में घोर तपस्या की और वेदों की पवित्र वाणी के दम पर ईश्वर को जीत लिया। उन दिनों हरिद्वार में कुम्भ का मेला लगा हुआ था। ऐसे में आप मेले में आए। तब एक धनिक ने देखकर कहा- हे ईश्वर के समीपी संत जी। मैं एक लाख रुपया आपको सुख सुविधा के लिए देना चाहता हूँ। आप यही ठहर जाएं। किन्तु त्यागी एवं सच्चे संत ने इस भेंट को ठुकरा दिया। सेठ ने बड़े अभिमान से कहा-मेरे जैसा दानी आपको कहीं न मिलेगा। तब आप ने कहा- मेरे जैसा त्यागी भी आपको नहीं न मिलेगा। जो तुरंत आपकी धनराशि ठुकरा दे।

बापू हरनाम जी महाराज हरिद्वार से पंजाब की ओर चले। योग साधना और आत्म ज्ञान होने पर भी आपके मन को शांति न थी। आप मन की शांति के लिए पूर्ण गुरु की खोज में थे। घूमते-घूमते गुरु की खोज में नंदा चौर धाम पहुँचे। यहाँ ओम जी महाराज हाथों में सोने की कई-कई अंगूठियां पहने। बड़े ठाठ से हुक्का पी रहे थे। इस राजसी ठाठ को देखकर आपने अपने कल्याण की आशा छोड़ दी और चुपचाप वहाँ से दृष्टि फेर ली। तब एक दिन आपकी भेंट एक सूफी संत जी से पटियाला में हुई। संत जी ने मस्तक की रेखा देखकर कहा-भक्त जी। आप कहाँ भटक रहे हैं। आपका कल्याण नंदा चौर धाम में ओम नारायण जी के हाथों लिखा है। आप संशय छोड़कर वहां जाएं, इसी में आपका कल्याण है। सूफी संत जी की इस वाणी को सुनकर आप फिर नंदाचौर धाम आए। ओम जी को नतमस्तक होकर पास बैठ गए। तब ओम जी ने मुस्करा कर कहा-क्यों भाई जी। खूब घूम लिये अब और न घूमना यही रह जाना इसी में भलाई है। हरनाम जी महाराज ने चरण वंदना कर ओम जी के चरण थाम लिये। ओम जी ने उठाकर गले से लगा लिया और फिर मस्तक कपाट खोल कर कहा-आप ओकाड़ा शहर में इस गद्दी के स्वामी होंगे। ओम जी के निधन उपरांत यही नंदाचौर धाम की व्यवस्था के रक्षक हुए। यह कहा करते थे सेवा और सुमिरन एक ऐसी नौका है जिसके सहारे संसार सागर से पार हो सकते हैं। यही शिक्षा आप संगत को दिया करते थे।

संत बापू हरनाम दास जी महाराज ने अपने जीवन काल की यात्रा को पूरा करके सन् 1946 (11 प्रविष्टा को 11 बजकर 30 मिनट रात्रि) में अपने पार्थिव शरीर का त्याग कर दिया। आपकी समाधि राय साहिब सरदार नारायण सिंह चावला जी के यहाँ ओकाड़ा शहर पाकिस्तान में बनाई गई। इसके उपरांत श्री नंदाचौर धाम की गद्दी पर बापू श्रद्धाराम जी महाराज आसीन हुए।

दोहा : संत पुरुष तो चल दिये, छोड़ जगत का खेल। कौन जाने कब होगा, उनसे अपना मेल ।। अब तो नयना बरसते, उनको कर-कर याद। "लाल" भूल न पाएंगे, उनके मुख की नाद।

महाबली हरनाम जी की महिमा

॥ काव्य लहरी ।।

समाजसेवी कुटम्ब में, हरनाम ने जन्म पाया। पूरन दास के गृह में, वह पुत्र बनके आया ।। हर कौर का नयन तारा, सुरपुर से ओम भिजवाया। हम सबको तारने को, वह मनुष्य रूप में आया।। नंदाचौर दरबार की, गद्दी को उसने पाया। ओम जी के प्रवचनों पर, सदा उसने सिर झुकाया।।

॥ भजन ।।

तर्ज-दम भर जो इधर मुंह फेरे

हरनाम बापू के डेरे, तू आजा रे मन मेरे। इस धाम से मुक्ति होगी, कटेंगे जन्म के फेरे ॥

हरनाम बापू के डेरे......

मनमंदिर पावन होगा, घट भीतर नंदन होगा। तब स्वांसों की माला पर, पुष्पों का गुंथन होगा।। छटेंगे सभी अंधेरे, दुःख वर्द मिटेंगे तेरे। इस धाम से मुक्ति होगी, कटेंगे जन्म के फेरे ।।

हरनाम बापू के डेरे.......

संसार से मुक्ति होगी, फिर जन्म कहीं ना होगा। फिर गर्भ योनि का दुखड़ा, कभी न भरना होगा।। दिन आएंगे सुनहरे, दुःख दर्द मिटेंगे तेरे। इस धाम से मुक्ति होगी, कटेंगे जन्म के फेरे।।

हरनाम बापू के डेरे ......

सत्संग सभा में तेरा, यह हृदय कुंदन होगा। ओम की पावन नजर से, यह जीवन पावन होगा।। यहां से तरे बहुतेरे, दुःख दर्द मिटेंगे तेरे। इस धाम से मुक्ति होगी, कटेंगे जन्म के फेरे॥

हरनाम बापू के डेरे........

तू राम नाम को भजले, यम का त्रास न होगा। यह माटी वाला पुतला, काल का ग्रास न होगा।। "लाल" सुखी शाम सवेरे, दुःख दर्द मिटेंगे तेरे।

इस धाम से मुक्ति होगी, करेंगे जन्म के फेरे।।

हरनाम बापू के डेरे......

॥ काव्य लहरी ।।

ओम मेरी जिन्दगी है, ओम मेरी आत्मा। मैं ओम जी का हो जाऊं, बुद्धि वो परमात्मा ॥ आज मुझ नाचीज को सूझ इतनी हो गई। ओम जी की पवित्र वाणी, पाप सारे धो गई॥

तर्ज-स्वयं बनाए

मैंने तो अब यही विचारा, कभी न छोडूंगा ओम द्वारा। ओम नारायण सबके प्यारे, हम सबके हैं प्राणधारा।।

मैंने तो अब यही विचारा......

लाख बलाएं सिर पर टूटे, कभी ओम का साथ न छूटे। ओम नाम का मन मतवाला, यहां ओम की खुशियां लूटे॥ ओम नाम है जग निस्तारा, इसी नाम ने मुझे उभारा।

मैंने तो अब यही विचारा......

ओम अंत तक साथ निभाते, यमदूत भी पास न आते। ओम भक्त की देख सूरतिया, धर्मराज भी लिखा मिटाते ॥ओम नाम है कष्ट निकंदन, ओम नाम दु:ख मेटन हारा।

मैंने तो अब यही विचारा......

नंदाचौर जनों से पूछो, जिन्होंने ओम का रूप निहारा। अजर-अमर उस अविनाशी ने, जिस-जिस को भी पार उतारा।। ओम जी की सीख चलूं मैं, छोड़ जगत का सकल पसारा।

मैंने तो अब यही विचारा.....

ओम मेरे है रंग रंगीले, भक्तजनों की सुनने वाले। भक्ति पथ दिखलाने वाले, भव जल पार कराने वाले ॥ ओम पिता के वचनों को सुन, अब इस जन ने जन्म संवारा।

मैंने तो अब यही विचारा......

मंगल मूरत ओम प्यारे, सदा-सदा भक्तों के सहाई। जिसके सिर पर हाथ ओम का, उसे कहीं न कोई कठिनाई। "लाल" ओम की महिमा गा-गा, पाप उतारा सिर से सारा। मैंने तो अब यही विचारा......

बापू श्रद्धाराम जी महाराज की जीवनी

दोहा :बापू श्रद्धाराम की, कीर्ति बड़ी अपार। बापू भक्तों पर किये, जिन लाखों उपकार ।। नेक समाज सेवक बन, किया समाज सुधार। इनके किये कर्मों पर, जन-जन है बलिहार।। निःशुल्क स्कूल खोल के, कर शिक्षा प्रचार। श्रद्धाराम जी बन गए, हर जन के हितकार।।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज ने समाज सुधार कार्यों में भाग लेकर जन-जन के हृदय में अपना स्थान बना लिया। कोई भी आपके पास समस्या लेकर आता, वह उचित समाधान पाता। इसी कारण से सभी धर्मों के लोग बापू जी के पास आने लगे और अपने सुख दु:ख सुनाने लगे। ऐसे में सभी धर्मों के लोग आपस में जुड़ने लगे। ऊंच नीच, छुआछूत का भेद सदैव के लिए मिट गया। सर्वविदित है कि प्रेम एक दूसरे को जोड़ता है। सो यह कार्य बापू श्रद्धाराम जी ने बड़े चाव से किया। आपने बापू हरनाम जी

के निधन उपरांत नंदाचौर दरबार की संगत के अनुरोध पर मन लगाकर आगंतुकों की सेवा की। बापू श्रद्धाराम जी महाराज ने अपने जीवन काल में समाज को जोड़ने का महान कार्य किया। बड़ी योग्यता एवं चतुराई के साथ इस पंथ को आगे बढाया। आज आपके श्रद्धालुओं की गिनती लाखों करोड़ों में है।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज का जन्म अट्टी ग्राम जिला जालंधर पंजाब में बैसाख 19 संवत् 1945 विक्रमी में हुआ। आपके पिताश्री का नाम श्री गोविंद दास तथा माताश्री का नाम ईश्वर देवी (इशंरा) था। आपके माता-पिता देवी दर्शन तथ तीर्थ यात्राओं पर विश्वास रखते थे, उन्हीं के स्वभाव से आपका स्वभाव भी वैसा था। अतः ईश्वर को पाने की लगन थी। आपके जन्म पर ईश्वरीय संकेत हुआ। आप ईश्वर के अंश हैं, जगत उभारन आए हैं, कलयुगी प्राणियों को भव पार लगाने आए हैं। आपके आगमन पर घर का कोना-कोना महक उठा। सारा वातावरण शुद्ध हो गया। घर के सदस्यों के चेहरे खिल गए। मानों साक्षात् ईश्वर मिल गए।

श्रद्धाराम जी महाराज ने बालक का रूप धर कर पांच वर्ष की आयु में धरती पर पैर टिकाए। तभी खेल-कूद का चाव उत्पन्न हुआ। इस प्रकार बचपन बीत गया। युवा अवस्था में आते ही ज्ञान हुआ,हमारा मनोरथ उस सर्वशक्तिमान को प्राप्त करना है, उसके अतिरिक्त सारा संसार नश्वर है। घोर दुःखों का झरना है, इसे ईश्वर की उपासना से पार करना है। तब एकांत में बैठकर प्रभु चिंतन का अभ्यास करने लगे। धीरे-धीरे वैरागी रूप धार लिया और वैरागियों जैसे वस्त्र धारण करने लगे। यह सब देखकर माता-पिता पुत्र की चिंता में घोर समुद्र सागर में डूबने लगे। तब विचार कर इस निर्णय तक पहुँचे कि पुत्र का विवाह कर देना उचित है। यह संसारिक बंधनों में बंधकर सब कुछ छोड़ देगा और प्रभु पथ से मुंह मोड़ लेगा। आपने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का प्रण ठान रखा था इसीलिए सांसारिक बंधनों में न बंधे।

एक दिन आप एकांत में बैठे हुए, बड़ी गहन विचार धारा में डूब गए, यह नर तन चोला बड़ी कठिनाई से मिला है, चौरासी लाख योनियों से निकलना पड़ा है। हमें इस जन्म को सफल बनना होगा। इस संसार में कोई किसी का मीत नहीं, किसी को किसी से प्रीत नहीं। सब स्वार्थी नाते हैं, कोई न साथ निभाते हैं, अंत किए कर्म साथ जाते हैं, जो दरगाह तक साथ निभाते हैं। हमें सतपथ की डगर पर चलना चाहिए, स्वयं उभर कर संसार को उभारना चाहिए। इन्हीं विचारों में रत बालक श्रद्धाराम जी अपनी माताश्री के संमुख हुए और हाथ जोड़कर वचन विलास किये हे माताश्री ! मुझे मानव जन्म का मनोरथ ज्ञात हो गया है इसलिए मोह का त्याग कर, मेरे सिर पर वरद् हस्त रखकर फलदायक आशिष दीजिए और ध्रुव भक्त की माता समान गुरु खोजन का वरदान देकर विदा कीजिए। मैं आपके और पिताश्री के नाम को उज्जवल करूंगा और संसार को बता दूंगा कि माता-पिता की आशिष से गुरु की

प्राप्ति होती हैं। माताश्री ने मोह को मारकर तथा पुत्र की वाणी से प्रभावित होकर वरद् हस्त को शीश पर रखकर सहर्ष गुरु मिलन का वरदान दिया।

तब पास बिठाकर तीन ज्ञानप्रद एवं जीवन सम्बन्धी शिक्षाएं प्रदान की-बेटा। गुरु खोजने में बड़ी कठिनाईयां होगी किन्तु विचलित न होना। धीरज न खोना। तेरी

माताश्री की आशिष व्यर्थ न जाएगी। यह सच्ची आशिष है जो रंग लाएगी। अब शिक्षाओं पर ध्यान दे। तू जिस पथ को अपनाने चला है, वह सचस्वरूप का सच्चा मार्ग है, उसके समक्ष सब कुछ निष्फल है। यह एक ऐसा कल्पवृक्ष है। जिसकी छांव में सभी कुछ उपलब्ध है। मेरी प्रथम शिक्षा पर ध्यान लगा। तू जहां भी रहना, सुदृढ़ किले में रहना, द्वितीय शिक्षा अनुसार शुद्ध स्वच्छ बढ़िया भोजन करना तृतीय शिक्षा अनुसार स्वच्छ सुंदर बिस्तर पर सोना। ऐसे में बालक श्रद्धाराम जी ने माताश्री की ओर देखा फिर बड़े स्नेह पूर्वक पूछा-हे माताश्री। मैं आपकी शिक्षाओं का अर्थ नहीं समझा। कृपा समझाकर कहें। इस पर माताश्री ने कहा-सुदृढ़ किले का अर्थ है, गुरु चरणों में निवास। यदि गुरु चरणों में विश्वास सहित निवास रखेगा और मन लगाकर गुरु की सेवा करेगा तो तेरा कोई बाल बांका न कर पाएगा, बस यही सुदृढ़ किला है। द्वितीय शिक्षा अनुसार स्वच्छ शुद्ध बढ़िया भोजन का अर्थ है, संयम में रहना, अधिक न खाना, अधिक न बोलना, आवश्यकता अनुसार बोलना व खाना, आनंददायक भोजन है। तृतीय शिक्षा अनुसार स्वच्छ सुंदर विस्तर पर सोना, गुरु आज्ञा में हर समय तत्पर रहना, नींद तक को त्यागना और मुख से कभी भी गुरु के प्रति अपशब्द न कहना।

यही अनमोल शिक्षाएं तेरा जीवन साथर्क बनाएंगी और उस अलख दाता का मार्ग दिखाएंगी। अब जा। सच्चे गुरु की खोज में अपना जीवन बिता।

दोहा : गुरु ढूंढन को चल पड़े, बालक श्रद्धाराम। सीख माता की साथ है, भली करेंगे काम। जिस घट सच्ची कामना, उसके बन गए काम। "लाल" इशंरा के सुत ने, गुरु चरण लिये थाम ।।

गुरु की प्राप्ति

दोहा : गुरु की महिमा अकथ है, जो वरणी ना जाए। तीन लोक चौदह भवन, नौ खण्ड स्तवन गाए। गुरु प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं, वेदों का फरमान। बापू श्रद्धाराम जी, यही भेद गए जान।।

हे कलयुगी जीव। तू अपनी महत्तता को जान, तेरे भीतर सर्वशक्तिमान आसन ना लगाकर बैठे हैं। तू तृष्णाओं और इच्छाओं को छोड़कर संत पुरुषों के वचनों पर ध्यान दे। बापू जी की शरण में कल्याण जान ले। जब तू संसारिक चिंताओं को - छोड़ देगा। दु:ख व्याधियों से मुक्त हो जाएगा। रोगों को नाश करने वाली शक्ति का नाम भक्ति है। जो नंदाचौर धाम बापू दरबार में मिलती है। जिसके हृदय में बापू जी के अमृतमयी वचनों का आनंद बरसता है, वह समुद्र सागर पार करता है।

बाल ब्रह्मचारी बालक श्रद्धाराम जी नंदाचौर बापू दरबार की शरण पाकर फूले न समाए, उन्हें सच्चे गुरु महाबली बापू हरनाम जी महाराज की प्राप्ति हुई। बापू हरनाम जी महाराज ने आपको ईश्वर का नेक उपासक जानकर नाम दान दीक्षा सहित भक्ति, योग, सुमरण, साधना तथा उपासना की गुप्त विधि प्रदान की। तब आपने एकांत में बैठकर शुद्ध हृदय से जगतपिता का सुमिरण किया, तन-मन-वचन व कर्म से गुरु जी पर अपर्ण हो गए, मन की कामनाओं का त्याग कर जगत से मुख मोड़कर गुरु चरणों में नतमस्तक हो गए। गुरु सेवा में सारा जीवन न्यौछावर कर दिया। गुरु की कृपा से रोम-रोम में ईश्वर का प्रकाश हुआ, अंधकार का नाश हुआ। जीवन का बेड़ा पार हुआ। बापू हरनाम जी रिश्ते में श्रद्धाराम जी के मामा लगते थे। बापू हरनाम जी ने शिष्य बनाते हुए तथा दीक्षा देते हुए कहा-आज से मामा भांजे का नाता समाप्त हो गया है और गुरु चेले का नाता संजीव हो गया है। गुरु की महिमा वरणी नहीं जाती, गुरु साक्षात परब्रह्म हैं ऐसा हमारे वेदों पुराणों में कहा है।

गुरुः ब्रह्मा, गुरुः विष्णु, गुरुः देवा महेश्वर,गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवेः नमः

बालक श्रद्धाराम जी भली भांति जान गए, गुरु बिना भगवान की प्राप्ति नहीं हो सकती। भक्त शिरोमणि संत कबीर जी भी कहते हैं-

गुरु गोबिंद दोनों खड़े, काके लागों पांय,

बलिहारि गुरु अपनो, जिन गोबिंद दियो बताय।।

संत कबीर जी महाराज ने गुरु को भगवान से भी अधिक महत्व दिया है, इसमें कुछ संशय नहीं कि गुरु का स्थान भगवान से भी बड़ा है। गुरु ही भगवान् से मिलन करवाते हैं। इसलिए गुरु को भगवान् से भी बड़ा बताया है।

बालक श्रद्धराम जी महाराज ने गुरु की सेवा में लीन रहकर तथा गुरु की आशिष पाकर गुरवाणी कंठस्थ करली और राम नाम का अर्थ भली प्रकार जान लिया। इस पर गुरु जी ने प्रसन्नचित होकर उन्हें लोक कल्याण कार्यों में लगा दिया। तब बालक श्रद्धाराम जी ने अपना जीवन संतो जैसा बना लिया।

बालक श्रद्धाराम जी ने सन् 1946 तक अपने गुरु बापू हरनाम जी के साथ ओम जी की फुलवाड़ी की जी जान से सेवा की। सद्‌गुरु बापू हरनाम जी के निधन उपरांत नंदा चौर धाम का सारा कार्य भार आपके कंधे पर आ पड़ा। इस स्थिति में भी आपने कभी धैर्य नहीं छोड़ा और जन जीवन सेवा से कभी मुंह नहीं मोड़ा। आपका जीवन बड़ा सीधा सादा था। आप सुरमा बेचकर अपनी आजीविका चलाते थे और अपनी कमाई का कुछ भाग मंदिर के सुधार कार्यों में लगाते थे। मंदिर का एक पैसा भी अपने पर

खर्चना पाप समझते थे। मंदिर का लंगर व जल तक ग्रहण न करते थे। आप दानी व त्यागी पुरुष थे। आप नर सेवा को नारायण सेवा मानते थे। आप कहते थे-

दोहा : सेवा अपना धर्म है, सेवा अपनी शान। यदि सेवा निष्काम हो, तो मिलते भगवान।। इसी ध्येय को लेकर, कारज किए अनेक । "लाल" काज सब फल गये, सतगुरु की ले टेक ॥

धन का सदुपयोग

दोहा: भले कर्म में धन लगे, कहते श्रद्धाराम। उनकी ऐसी भावना, शुद्ध निर्मल पैगाम ।। धन दुरुपयोग न होए, काम करें निष्काम। हरि इच्छा से होएंगे, पूरे सारे काम ।।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज ने संगत के धन का कभी दुरुपयोग नहीं होने दिया। उनका ऐसा पवित्र एवं शुद्ध पैगाम है। वह धन को लोक कल्याण में लगाकार चैन लेते थे। निष्काम सेवा करना अपना धर्म जानते थे। बापू इच्छा तथा नेक भावना से नंदाचौर दरबार के सारे कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न होते थे। बापू नाम लेवा आपके समस्त कार्यों से अत्यन्त प्रसन्न थे। आप दीन की सेवा में पास से भी धन लगा देते थे। आपने समाज सुधार कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। कन्याओं के लिए शिक्षा का उत्तम प्रबंध तथा दहेज रहित विवाह करवाए आपने निर्बलों को उभारकर

शक्तिशाली बनाया। नंदाचौर दरबार के मुखिया होकर समूचे समाज को जाग्रत पुरुष की भांति सबका हितैषी बनाया। आप शुभचिंतक के कर्तव्य आसन पर स्थित थे। आपने चिंतन मनन उद्बोधन द्वारा मानवीय गौरव गरिमा और आत्म रस से समाज में जागृति समानता और बंधुत्व के भाव जगाकर उन्नत समाज की रचना की। आप नेक समाज सेवी बड़े साहसी एवं वीर पुरुष थे। आप धरती पर मनुष्य के रूप में भगवान् का अवतार थे। आपने संगत के धन से कन्याओं के लिए नंदाचौर में स्कूल की स्थापना की, जिसमें निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी, यही अब डिग्री कालेज बन गया। यहाँ से सैंकड़ों लड़कियां विद्या ग्रहण करके देश के कोने-कोने में कार्यरत हैं। आपने देश के विभिन्न-विभिन्न भागों में धर्मशालाएं और अस्पताल खुलवाए, निःशुल्क उपचार किया। नेत्र रोगियों के लिए स्थान-स्थान पर शिविर

लगाए और उनकी हर प्रकार से सेवा की।

परमात्मा की रचना सबके लिए एक समान है। इसमें कोई भेदभाव नहीं। मनुष्य के नेक कर्म ही उसे ऊंचा उठाते हैं।

अतः प्रत्येक व्यक्ति को दिनभर में एक नेक कर्म अवश्य करना चाहिए। अंधों को राह दिखाना, भूखे को भोजन देना, वस्त्रहीन को वस्त्र से ढकना सैकड़ों पुन्यों के समान हैं। ऐसा धार्मिक प्रचलित

ग्रंथों में लिखा है। इसलिए आप नंदाचौर दरबार में गुरु ग्रंथ साहिब, रामचरित मानस गीता का पाठ समय-समय पर

कराते रहें और ईश्वर को डग से भटकते प्राणियों को ईश्वर की ढंग से जोड़ते रहें। ऐसा करने से लोग शुभ कर्म करने लगे। आपको गुरवाणी कंठस्थ थी। प्रत्यका शब्द का अर्थ समझते थे। आप जगत्पति जगदीश्वर के बहुत समीप थे।

दोहा : जगकर्ता करतार तो, उनके थे सिरताज। उनके बल प्रताप से, वह करते थे काज। उनके हर इक काज में, छिपा लोक कल्याण। "लाल" प्रभु की टेक ही, उनका था सम्मान ।।

डाक्टर को मुराद मिली

दोहा : डाक्टर की भी जग गई, सोई हुई तकदीर। नंदाचौर में आकर, मन को मिल गई धीर।। पुत्र रत्न को पाए के, पावन हुआ शरीर। गुरु कृपा से हो गई, उजली कर्म लकीर ।।

जब सच्चे गुरु की कृपा होती है जन्म-जन्म की सोई तकदीर जग जाती है। नंदाचौर वह पवित्र तीर्थ स्थान है। जहां आकर मुरझाया कमल भी खिल जाता है। सद्गुरु जी की कृपा से ईश्वर की अनमोल निधि का प्रसाद मिलता है।

एक बार गांव के प्रसिद्ध डाक्टर नंदाचौर दरबार में बापू श्रद्धाराम जी महाराज की शरण में आए और एक पुत्र हेतु वचन सुनाए। बापू जी ने उसके चेहरे की रेखाएं देखकर कहा-हे धन के लोभीजन। लोभ का त्याग कर डालो, दीन दुखियों से अधिक धन न लो। तुमने किसी दीन के साथ अन्याय किया है उसकी संतान का उपचार अधिक धन लेकर किया है। इसी कारण से तुम्हें संतान रोग ने घेरा है। यदि इस रोग से मुक्ति चाहते हो तो निर्धनों से उचित धन लिया करो। जो धन देने में असमर्थ हैं। उनकी सेवा निःशुल्क किया करो। ऐसा करने से निर्धनों की दुआएं साथ रहेगी और ईश्वर की कृपा से सब विपदाएं टलेगी। घर में सुख शाति होगी, तुम्हें पुत्र प्राप्ति होगी। मरघट समान घर में फूल खिलेगा जो तुम्हारी उंगली पकड़कर चलेगा।

डाक्टर ने बापू जी की बात मान ली और निर्धनों की निःशुल्क सेवा की। डेढ वर्ष पश्चात् ईश्वर ने उसकी फरियाद सुनी और उसे पुत्र रत्न की मुराद मिली।

तब डाक्टर भली भांति जान गए जो भी बापू श्रद्धाराम जी के द्वार पर आता है वह मनवांछित मुराद पाता है।

दोहा : धन तो काला नाग है, इसने लाखों खाए। वही बचा इस दुष्ट से, जिसने हरि गुण गाए। बापू श्रद्धाराम ने, सब घट फूल खिलाए। बांझ की भी लाज रख, उसके भाग्य जगाए।

जब डाक्टर ने मानी, बापू जी की सीख। "लाल" बापू ने डाली, उसकी झोली भीख ॥

नदी का प्रकोप

दोहा :बापू श्रद्धाराम जी, सभी जनों के मीत। जिसने जब भी चीत की, झट से सुनली चीत।। लोग आदरामान के सभी बाढ़ भयभीत। बापू से अरदास की, चले आओ मनमीत ।।

जगत के दाता, भाग्यविधाता, दीनबन्धु, कृपा सिंधु, सभी घट व्यापक । बापू श्रद्धाराम जी महाराज अपने भक्तों के मन की जानने वाले हैं। भक्त की अरदास को तुरंत मानने वाले हैं। नन्दाचौर की देव दुलर्भ धरती, जिसके कण-कण में बापू का वास है, इस बापू चरण स्पर्श धरती ने नास्तिक को भी आस्तिक बना दिया। इसी के फलस्वरूप बापू जी की लीलाओं ने इस स्थान को महान तीर्थ एवं सचखण्ड धाम बनाया। यहां विराजमान बापू जी के कानों में जब भक्त की टेर सुनाई पड़ती है, तब तुरंत बापू जी की सहायता दिखाई पड़ती है।

एक ऐसी घटना आदरामान महितपुर की संगत से हुई। जब बापू के परम भक्त नम्बरदार रघुवीर सिंह जी का देहांत हो चुका था। उन दिनों आदरामान का मंदिर भी न था। गांव से थोड़ी दूर पर सतलुज नदी बहती थी। बाढ़ का भय गांव - वासियों को सदैव लगा रहता था। तब एक दिन संकट का समय आया नदी ने अपना प्रकोप दिखाया, ऐसे में बापू भक्तों ने बापू जी का स्मरण किया, स्तवन किया और हाथ जोड़कर अरदास की। हे सचस्वरूप ! बापू श्रद्धाराम जी महाराज ! - तुरंत चले आईए और इस नदी पर अंकुश लगाइए ताकि नदी इधर न आए और - हमें हानि न पहुंचाए।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज तुरंत चले आए और अपने कर-कमलों से ओम जी का नाम लेकर गांव की कुछ दूरी पर ओम शहनशाह झंडा लगाया और नदी से विनम्र निवेदन किया हे महारानी। दीनों पर उपकार करो, इस ओर प्रहार न करो। हम तुम्हारे धन्यवादी रहेंगे। बापू जी की बात मानकर नदी गांव को छोड़कर दूर बहने लगी और झंडा साहिब के भय में रहने लगी।

हे बापू के प्यारे भक्तों। ऐसे महान संत बापू श्रद्धाराम जी को अपने ह्रदय में स्थान दो, और अपनी रसना को इन्हीं का अमृतपान दो। नदियां-नाले-वन-उपवन- जल्ल-वायु-अग्नि सब इनकी आज्ञा में चलते है। चांद-सूरज नक्षत्र व सितारे सब

इनके कहे से निकलते हैं। इनके महान उत्सवों में ईश्वरीय संगीत छलकता है अंतरमुखी तीर्थ पर बरसता है।

आओ। अब विलम्ब न लगाएं। बापू धाम पर आएं और बापू जी के हो जाएं।

दोहा : बापू जी का नाम लो, जो संकट वें चीर। जीवन सुखमय हो जाए, जो हर लेवें पीर ॥ बापू जी की शरण में, मिलता मन को धीर। "लाल" यहां से बनती, हरजन की तकदीर ।।

आदरामान मंदिर की स्थापना

दोहा : आदरामान महितपुर, मंदिर जग विख्यात । यहां आज भी हो रही, भजनों की बरसात ।। ओम नाम की गूंज से, गूंज रहा संसार। बापू भक्तों की लगी, यहां खूब भरमार ।।

ईश्वर द्वारा स्थापित सर्व कल्याणमयी मूरत बापू श्रद्धाराम जी महाराज ने जहाँ पर भी अपने पावन पवित्र चरण-कमलों को टिकाया, वही स्थान अमर धाम के रूप में निखरं आया। वहां पर रात दिन भजनों की मधुर मधुर बरसातें होने लगी, जो बापू भक्तों के मन मोहने लगी। ओम नाम की महक से अंधकार का नाश हुआ और बापू भक्तों के मन में सत्य का प्रकाश हुआ।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज की कृपा से आदरामान महितपुर मंदिर की स्थापना हुई, बापू जी ने ओम शहनशाह झंडे साहिब को स्थापित किया, तब से वह स्थान पूजनीय एवं वंदनीय हुआ।

एक बार नम्बरदार रघुवीर सिंह के पुत्र नंदाचौर धाम के दर्शनार्थ हेतु आए। ऐसे में बापू जी ने पूछा-क्या आदरामान मंदिर में कोई व्यक्ति ओम नाम की जोत जगाता है अथवा नहीं। तब उत्तर मिला कभी-कभी कोई जोत जगा देता है किन्तु निरंतर ऐसा नहीं है। इस पर बापू जी ने दृढ़तापूर्वक कहा-जाओ। ग्रामवासियों को कह दो, जो श्रद्धापूर्वक झंडे साहिब के नीचे चालीस दिन सिर झुकाएगा। वह ओम जी की कृपा से जो चाहेगा सो पाएगा। जब वह दूसरी बार नंदाचौर आए। तब बापू जी ने कहा-अब सच-सच कहो-मंदिर में प्रतिदिन कितने दीप जलते हैं। तब उसने निःसंकोच कहा-मैंने अपनी आंखों से इक्तीस दीप जगते देखे हैं। इस पर बापू जी ने हर्ष पूर्वक कहा-अब वहां पर असंख्यों दीप जगेंगे और जन-जन के दुःखड़े हरेंगे। अब यहां प्रतिदिन असंख्यों दीप जगमगाते हैं और ओम जी की महिमा बखानते हैं। अब यहां दीपावली जैसा दृश्य देखने को मिलता है। जो बापू भक्तों के हृदय को अपनी महक से सुवासित करता है।

दोहा : ओम नाम की महक से अब सबके घर आनंद। "लाल" सभी को मिल रहे, वहां सच्चिदानंद ।।

बापू जी का आशीर्वाद

दोहा : जो जन श्रद्धाराम के, पक्के परम सुजान। उन्हें न कभी सताते, जग के कष्ट उफान ।। बापू जी के नाम से, सदा मिले सम्मान। "लाल" श्रद्धाराम जपो, तज संशय अभिमान।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज का जिसके सिर पर वरद् हस्त है, वही पुरुष भाग्यवान एवं धनवान है। इस संसार में वही श्रेष्ठ धनवान है, जिसके पास नाम कमाई का खजाना श्री नंदाचौर धाम के स्वामी

बापू ओम नारायण दत्त जी महाराज का है।आज नंदाचौर का वातावरण बापू ओम नारायण महाराज जी की कृपा से सुगंधी पूर्ण शुद्ध पावन एवं पवित्र है। इस धाम में प्रवेश करते ही उस अजर-अमर-अविनाशी सर्वशक्तिमान बापू ओम नारायण जी का दर्शन होता है। ऐसे में हृदय का कमल आनंद विभोर होकर खिल-खिल जाता है। आत्मा परमात्मा के बीच का अन्तर दूर हो जाता है,संशय चकनाचूर हो जाता है।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज के मुखारविंद से निकली वाणी कभी मिथ्या नहीं होती, उनके वचन अटल हैं, अमर हैं, अडिग हैं। उनके वचनों में सत्य छिपा है,जो समय आने पर प्रकट होता है। आदरामान महितपुर में लाला हंस राज जी और उनकी सुपत्नी बीबी राज चिरकाल से वहाँ रहते थे, किन्तु संतान न होने कारण बड़े दुःखी थे। वह कई वर्षों तक नंदाचौर धाम पर जाते रहे, किन्तु संकोचवश कभी संतान प्राप्ति हेतु, प्रार्थना न की। तब एक दिन संकोचता को त्यागकर बापू से एक पुत्र की प्रार्थना की। बापू जी ने प्रार्थना मान ली और पुत्र रत्न से झोली भर दी। कुछ समय उपरांत उनके घर एक पुत्र का जन्म हुआ।

इधर नंदाचौर में बापू श्रद्धाराम जी उनपर दृष्टि टिकाए हुए थे। तब एकाएक अंतर ध्यान होकर देखा। तुरंत लाला हंसराज जी के घर की ओर कूच की और कुछ ही समय में वहां आ गए। बापू जी का अक्रमात आगमन देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गए। ऐसे में बापू जी ने बच्चे को हाथों में लेकर चिरजीवी होने का वरदान दिया और कुछ समय उपरांत वहां से चलने लगे। तब न जाने मन में क्या आया-बीबी से बोले तेरा नाम क्या है। उसने हाथ जोड़कर कहा-महाराज जी मेरा नाम राज है। बापू जी ने प्रसन्नचित होकर कहा-ठीक है। हम जान गए। आज से तुम राज करोगी और जीवन भर आनंदित रहोगी।बापू जी के आशीर्वाद से वह आज तक परिवार में सुखपूर्वक राज कर रही है।

दोहा :राज-राज करने लगी, घर की वन सिरताज। अब सारे परिवार की, उसके हाथों लाज। उसके पीछे हर समय, खड़े गरीब निवाज। "लाल" ओम चले आते जब देती आवाज।

भक्तों की कामना

हे बापू के प्रिय भक्तों। बापू जी का ध्यान लगाओ और सुरपुर की सीढ़ी पर चढ़ कर जन्म पवित्र बनाओ।

दोहा :है यही कामना भक्तों की, हम बापू जी के हो जाएं। उस अजर-अमर अविनाशी के, चरणों में आपा खो जाएं।

॥ भजन ।।

दोहा : बापू धाम की सीढ़ी चढ़कर, हम सुरपुर को जाएंगे।

वहां विराजे बापू जी के, तब हम दर्शन पाएंगे।

बापू धाम की सीढ़ी चढ़कर....

हमें छोड़ क्यों गए यहां पर, तब हम उनसे पूछेंगे।जब वह हमसे बात करेंगे, बालक नाई रूठेंगे। हमको लाड लडाएंगे, जब निखरे खूब दिखाएंगे। वहां विराजे बापू जी के, तब हम दर्शन पाएंगे।

बापू धाम की सीढ़ी चढ़कर.....

जब वह कंठ लगाएंगे तब, विनय करेंगे बारम्बार। हमें शरण में अपनी रखलो, सब मुक्ति के मूलाधार।। हाथ जोड़ प्रणाम करेंगे, तब हम शीश झुकाएंगे। वहां विराजे बापू जी का, तब हम दर्शन पाएंगे।

बापू धाम की सीढ़ी चढ़कर.....

ओम शहनशाह झंडा साहिब

तर्ज-बहारो फूल बरसाओ, मेरा महबूब आया है-सूरज

दोहा : बड़े ठाठों से लहराए, यह झंडा ओम शहनशाह। चारों दिशाएं महकाए, यह झंडा ओम शहनशाह

बड़े ठाठों से लहराए........

यह झंडा लाल रंग का, बापू का यश गाता है, चलो तुम भक्ति के पथ पर, भक्ति का पथ दिखाता है। भक्ति का प्रेम उपजाए, यह झंडा ओम शहनशाह। चारों दिशाएं महकाए, यह झंडा ओम शहनशाह ।।

बड़े ठाठों से लहराए......

सभी से कह रहा झंडा, हमारी छांव में आओ। ईश का पथ दिखाएंगे, हमारी संगत अपनाओ ।।यह सबको ज्ञान करवाए, यह झंडा ओम शहनशाह। चारों दिशाएं महकाए, यह झंडा ओम शहनशाह ।।

बड़े ठाठों से लहराए......

यह मनुज जाति के निशदिन, सदा से पाप धोता है। जो इसको शीश झुकाता, दुःखों से मुक्त होता है। मुक्ति का मार्ग दर्शाए, यह झंडा ओम शहनशाह ।।चारों दिशाएं महकाए, यह झण्डा को ओम शहनशाह।।

बड़े ठाठों से लहराए.....

भाईचारे का संदेश, यह लेकर जग में उतरा। अंधेरा दूर करने को, यह प्रेम बनकर निखरा ।। प्रेम की शिक्षा पढ़ाए, यह झंडा ओम शहनशाह। चारों दिशाएं महकाए, यह झंडा ओम शहनशाह।।

बड़े ठाठों से लहराए..

बापू के भक्तजनों को, इसका नेक पैगाम है। भक्तों इस ओर चले आओ, इधर बापू का धाम है। "लाल" यही बोल सुनाए, यह झंडा ओम शहनशाह। चारों दिखाएं महकाए, यह झंडा ओम शहनशाह।।

बड़े ठाठों से लहराए....

एक माई की आस पुजाई

दोहा : एक माई औलाद का, दुःख रही थी भोग। ऐसा नारी जात को, कभी लगे ना रोग। उस दुःखीयारी की सुनी, बापू जी ने पीर। एक से पांच दे दिये, सभी दुःखों को चीर ॥

एक दुखियारी, औलाद की मारी, साधु, संतों, भक्तों, महंतों के डेरों पर एक हेतु डोल रही थी और अपने जीवन का दुखड़ा फोल रही थी। उसे कहीं से

भी आशा की किरण न दिखाई दी। वह डोलती-डोलती एक दिन बापू धाम श्री नंदाचौर में आई। यहां सत्संग का सागर बह रहा था, भक्तजन ईश्वर की लीलाओ का आनंद ले रहे थे और अपने अंतरमुखी कमल को सुगंधी दे रहे थे। बापू श्रद्धाराम जी महाराज उच्च सिंहासन पर आसीन थे। सभी को मुरादें मिल रही थी. इच्छाएं खिल रही थी।

सत्संग की समाप्ति पर सभीजन बापू जी को शीश झुकाकर अपने-अपने घरों को जाने लगे, कुछ समय उपरांत पंडाल खाली हो गया। ऐसे में उस माई ने शुभ अवसर जानकर बापू श्रद्धाराम जी के चरण थाम लिए और जोर-जोर से रोने लगी। दयावान बापू जी को उस पर दया आ गई, तब बड़े प्रेम से बोले बेटी। तनिक मुख से कहो-इस प्रकार क्यों आंसू बहाती हो, हमसे क्या चाहती हो। इस पर उसने हाथ जोड़ कर बापू जी से विनम्र प्रार्थना की। हे अन्तरयामी जी। मुझे एक पुत्र की दात दीजिए। मैं संसार में निपुती कहलाती हूँ और घर बाहर के उलाहने सहती हैं। बापू जी ने उसके माथे को बड़े ध्यान से देखा और अंतरध्यान होकर निहारा। तब कहा-माई। तेरे भाग्य में पुत्र नहीं है। जाओ। चली जाओ। हम कुछ न कर पाएंगे। तब उसने छटपटाकर कहा-हे सुखदाता। भाग्यविधाता। इस धाम की लाज बचा लीजिए। और मुझे एक पुत्र दे दीजिए। अन्यथा संसार क्या कहेगा कि नंदा चौर धाम ने भी खैर न पाई है। उसके कठोर शब्दों ने बापू जी के हृदय को छिन्न-भिन्न कर दिया। तब विचारशील होकर बोले माई इधर आओ। भीतर ओम नारायण जी समाधि में लीन हैं। भीतर चली जाओ। वह जब उठें, उनके चरण थाम लेना और पांच पुत्रों की मांग करना। तुम्हारी इच्छा पूरी होगी और इस धाम की महिमा चौगुनी

होगी। तब उसने आंसू पोंछते हुए कहा हे कृपालु जी। मुझे एक पुत्र मिल जाए, वही बहुत है। इस पर बापू जी ने कहा-अरी मूर्खा। तुझे मांगना भी नहीं आता। जब मांगन को आई है तो जी खोलकर मांग। यहां से सब कुछ मिलता है, मुरझाया हृदय खिलता है। अब जा विलम्ब न लगा। भीतर चली जा और बापू ओम नारायण जी के जगने की प्रतीक्षा कर। तब वह हाथ जोड़कर भीतर चली गई।

बापू ओम नारायण जी समाधि में लीन थे, कुछ समय उपरांत समाधि खुली सामने बैठी माई को देखा, तब आश्चर्य चकित होकर पूछा- हे माई। तुम कौन हो. कहां से आई हो और किस कार्य हेतु आई हो। तब माई ने खड़े होकर, दोनों हाथ जोड़कर बड़े दीनभाव से कहा- मैं एक दुखियारी हूँ, पुत्र रत्न की मारी हूँ, दूर गांव से आई हूँ और आपके सेवक द्वारा भिजवाई हूँ। इन सत्य वचनों को सुनकर बापू ओम नारायण जी भली भांति जान गए कि यह भक्त श्रद्धाराम जी की पढ़ाई है और कुछ लेने हेतु यहाँ आई है।

तब बड़े प्रेमपूवर्क पूछा-अच्छा तो कहो किस इच्छा से आई हो, इस पर उसने सिर झुकाकर तथा झोली फैलाकर कहा-मेरी झोली में पाँच पुत्रों की दात दे दीजिए। बापू ओम नारायण जी ठहाका मार हंसे और बोले-अरी भाग्यवान। तेरी

झोली में पाँच पुत्रों की दात हमारे सेवक न पहले ही डाल दी है। मेरे पास तो केवल मेरा मान बढ़ाने हेतु भेजा है। जाओ। तुम्हारे घर पांच पुत्र होंगे, पांचों ही अपने-अपने कार्य में निपुण होंगे।

दोहा : बापू श्रद्धाराम ने, सुनली दीन पुकार। एक से पांच पुत्र का दिया नेक परिवार।। उसके घर आनंद है, अब ना दुःख की मार। "लाल" उसके अब घर में, खुशियां बेशुमार।।

सच्ची अरदास

दोहा: आशा दीपक जगा, दोनों कर को जोड़।जगजीवन की नाव को, ओम भरोसे छोड़॥ भूले बिसरे काज को, आप देंगे संवार। नतमस्तक हो ओम से, करले दीन पुकार।।

ओम स्वरूप बापू श्रद्धाराम जी को तन-मन-धन सब अपर्ण कर दें। देही में आशा का दीपक टिकाकर, सत्य नाम की बाती सजाकर ओम नाम की सींक से जला ले सब अंधकार मिट जाएगा। संकटों का गुबार छट जाएगा। जीवन की डग महकी-महकी होगी। जो आवागमन से मुक्त होने की जुगत बताएगी।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज के निधन उपरांत श्री ओम दरबार के सच्चे अनुरागी, पूर्ण योगी, विवेक बुद्धि, परम संत श्रद्धेय भक्त गुरदास राम जी महाराज। श्री ओम दरबार नंदाचौर धाम की गद्दी पर संगत की सहानुभूति से बापू जी की पदवी पाकर आसीन हुए।

दोहा : बापू जी से जिस करी, हाथ जोड़ अरदास । उसकी पूरी हो गई, मन भीतर की आस ।। बापू-बापू भक्त का, नाता बड़ा पुनीत । युगों-युगों से चल रही, इनकी सच्ची प्रीत ।। बापू जी की यह कथा, बड़ा पक्का सबूत । "लाल" इसे मन में बसा, हो जा रे मजबूत ।।

दिल्ली में बापू धाम

दोहा : दिल्ली में भी छा गया, बापू जी का नाम। महानगर भी जप रहा, बापू श्रद्धाराम।। यही नाम अब बन गया, सबके मुख की शान। बापू श्रद्धाराम जी, साक्षात् भगवान् ।।

इधर राजधानी दिल्ली में सन् 1952 को संत बापू श्रद्धाराम जी की अनुकम्पा से संत बापू हरनाम दास जी की पुण्य स्मृति में ढक्का ग्राम ओम मंदिर मार्ग निकट परमानंद कॉलोनी, दिल्ली-9 में एक भव्य मंदिर का निर्माण हुआ। कुछ समय पश्चात् मंदिर का नाम श्री ओम नारायण हरनाम जी सत्संग सभा विख्यात हुआ। ऐसे में बापू श्रद्धाराम जी महाराज ने सन् 1952 में यहां ओम शहनशाह झड साहिब की स्थापना की। तब से अब तक अनेक बापू नाम लेवा यहां आते हैं और ओम शहनशाह झंड़े को नतमस्तक होकर मन की मुरादें पाते हैं।

कुछ श्रद्धालु भक्तजन ओम शहनशाह झंडा साहिब जी के स्थापना दिवस पर बड़ी श्रद्धापूर्वक मान सम्मान सहित सम्मिलित हुए, उनमें श्री हंसराज नागपाल जी. श्री देशराज नागपाल जी, श्री गोकुल चंद जी जग्गा, श्री राम लुभाया जी, श्री संत लाल जी, श्री प्यारे लाल जी, श्री अविनाश चंद्र जी, श्री निर्मल चंद जी. बोबो राज तथा और बहुत से गणमान्य सज्जन उपस्थित हुए।

ऐसे में बापू जी के जयकारों से आकाश पाताल गूंज उठा और महानगर का कोना-कोना झूम उठा ।

दोहा :ओम शहनशाह ध्वज ने, तब से रंग बिछाए। काली रातें छट गई, दिन पुनम के छाए।। अज्ञान अंधेरा मिट गया, हर जन मंगल गाए। सबने भरली झोलियां, बापू लिया मनाए। सब घट कलियां खिल गई, बापू ध्वज झुलाए। "लाल" सभी ने चाव से, बापू के गुण गाए।

तर्ज-अफसाना लिख रही हूँ, दिलेबेकरार का...

महिमा जगत में गूंजती, ढक्का ग्राम की।

यहां से मिलती औषधि, हर बिगड़े काम की।

महिमा जगत में गूंजती ....

बड़ी पुनीत करनी है, इस धाम महान की। नास्तिक भी यहां करता, पूजा भगवान की। यहां उतारें आरती, बापू के नाम की। यहां से मिलती औषधि, हर बिगड़े काम की।

महिमा जगत में गूंजती...

जिस जन के कर्म खोटे, वह निर्मल हो गए। जो वैर अग्न में डूबे, वह शीतल हो गए। सत्संग से बन गई है, सूरत आराम की। यहां से मिलती औषधि, हर बिगड़े काम की।

महिमा जगत में गूंजती...

बापू धाम के मीठे बोल / 85

स्वर्ग का पथ दिखाए, इस धाम की वाणी। प्रभु सब घट में बैठे, बापू की बखानी ।। बापू की छवि प्यारी, भक्तन विश्राम की। यहां से मिलती औषध, हर बिगड़े काम की।

महिमा जगत में गूंजती ...

इस धाम पर जो आते, वह अमर पद पाते। लाखों जन्मों की मल, तज निर्मल हो जाते ।। "लाल" यह ढक्का ग्राम तो, सूरत प्रणाम की। यहां से मिलती औषधि, हर बिगड़े काम की।

महिमा जगत में गूंजती...

ईश्वर स्वरूप बापू श्रद्धाराम जी महाराज

दोहा :बापू श्रद्धाराम की, करनी बड़ी महान। सच्चा सेवक कौन है, झट लेते पहचान।। जिस दीपक में तेल बाती, पहले से विद्यमान। लौ लगाकर भक्ति की, उसमें डालें जान।।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज, सच्चे गुरु भक्त, धार्मिक प्रवृत्ति के धनी पुरुष थे। उनके कर्म निरुतर थे, उनकी लीलाएं बड़ी महान थी। वह साक्षात् ईश्वर स्वरूप थे। उनकी वाणी बड़ी मधुर एवं कोमल थी। उनका हृदय फूल समान पवित्र था। वह बड़े उदारचित महापुरुष थे। उनका सम्पूर्ण जीवन एक कर्मयोगी की भाँति व्यतीत होने के कारण दूसरे का दु:ख हरने में अपना सौभाग्य मानता था। आप श्रद्धालुओं को गुरबाणी द्वारा दिखाए गए मार्गों का अनुसरण करते थे। कोई भी प्राणी आपके दरबार से खाली न जाता, जो भी आता मनवांछित फल पाता। ऐसे समाजसेवी महापुरुष सदैव अपने जैसे व्यक्ति की खोज में रहते जब कहीं भी अपने जैसा व्यक्ति दिखाई देता, तुरन्त उसके शीश पर हाथ रखकर अपने जैसा बनाकर ईश्वर की डग दिखा देते और समाज कल्याण के मार्ग में लगा देते।

आपकी भेंट एक दिन चौधरी अविनाश चन्द्र जी से पंजाब में फिलौर के स्थान पर हुई। चौधरी साहिब फिलौर में पुलिस की चाकरी में कार्यरत थे। ऐसे में बापू जी उनसे मिलकर गद्-गद् हो गये।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज इस महान आत्मा के अन्तरमुखी दीपक में रखी बाती को देखकर आनंद विभोर हो गए। तब प्रसन्नचीत होकर, शीश पर वस्द्-हस्त रखकर कहा-बेटा। तेरे मन मंदिर में दीपक भी है, बाती भी है, तेल भी है किन्तु लौ न थी। हमने लौ लगाकर दीपक जगा दिया है। अब उठो। समझो जानो और मानव धर्म पहचानो। सच्चा मानव बनकर मानव की सेवा करो। हिन्दू

मुस्लिम सिक्ख, ईसाई सभी को एक जानो। ऐसी सोच उत्पन्न करो, और दे का मर्दन करो।

इन अनमोल वचनों को सुनकर चौधरी साहिब के मन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। तब तुरन्त नतमस्तक होकर सद्गुरू जी के चरण थाम लिये। ऐसे में ए सुख शांति व आनंद की अनुभूति हुई। तब से निरंतर प्रभु सिमरण तथा नाम कमाई की उपासना में लीन रहने लगे। पुलिस चाकरी की सेवा निवृति उपरांत ढक्का ग्राम दिल्ली में मंदिर श्री ओम नारायण हरनाम जी सत्संग सभा के मंच संचालक होकर भजन मंडलियों एवं कविगणों की कविताओं में गुरुदेव का अनुसरण कर परिवारजनों सहित बापू नाम का रस लूटने लगे। प्रत्येक रविवार बापू दरबार में इनकी उपस्थिति इनके

श्रद्धालुजनों सहित निरंतर होती है।

दोहा : ढक्का साहिब गांव में, प्रभु बिखेरे रंग। भक्त यहां पर आन के, करते हैं सत्संग ।। प्रभु नाम की महक से सबके घट आनंद। सब घट में आनंद है, सब घट परमानंद ॥ यही प्रभु की भक्ति है, यही जाएगी संग। "लाल" पावन कर रसना, बन गए मस्त मलंग।।

सुरपुर प्रस्थान

दोहा : एक दिवस सबको जाना, कर्ता नियम बनाए। जो आया सो जाएगा, उसके खेल रचाए।। हंसे कोई रोए कोई, लेख न मिटने पाए। आयु पूरी होने पर, मनुज ईश घर जाए।। साधु-संत-फकीर-जन, कोई न रहने पाए। जिसकी पारी आ जाए, वही जगत तज जाए।

यह जगत खेल तमाशा है, जीव यहां आता हे और खेल खेलकर चला जाता है। यह घर घाट हरे भरे वन उपवन नगर डगर सब बेगाना है। किसी का न निजी ठिकाना है फिर मृत्य तो मृत्यु है, उसे आना निश्चित है, अपना कर्म निभाना निश्चित है। प्रत्येक जीवात्मा को अपने-अपने कर्मानुसार दूसरी योनि में जाना निश्चित है।

सद्गुरु बापू श्रद्धाराम जी महाराज अपने भक्तों एवं श्रद्धालुओं के सभी कार्य यथायुक्त सम्पूर्ण करते थे, उनकी उपस्थिति में श्री नंदाचौर दरबार से कोई खाली न जाता था, जो आता था वह मनवांछित फल पाता था। आप अपने सेवकों का चेहरा पढ़कर दुःख पहचान लेते थे और फिर तुरंत समाधान कर देते थे। आपको दया दृष्टि से बापू नाम लेवा पर सदा खुशहाली थी, किसी के भी घर न रैन काली थी, सभी के घरों में दिवाली थी।

आप दिन रात बापू ओम नारायण जी के नाम में रहकर ईश्वर के निकट थे। कुछ समय उपरांत आपने नर तन चोला त्यागने का निर्णय लिया अतः राम नाम की चादर लेकर 19 मधर सवत् 2041 विक्रमी तदानुसार 4 दिसम्बर सन् 1974ईसवी को इस जगत से महासमाधि ले ली। इसके उपरांत संगत के आग्रह पर भक्त गुरदास राम जी बापू जी की उपाधि से सम्मानित हुए।

दोहा : चला चली का खेल भी, खेले श्रद्धाराम। हाथ जोड़कर जगत को, अंत किया प्रणाम। बापू श्रद्धाराम भी, जगत खेल का रूप। "लाल" खेल को खेलकर, बन गए ईश सरूप।

तर्ज-ओ दुनियां के मालिक राम-तेरी मर्जी के हम है गुलाम

हे संत सरूप श्रद्धाराम, तुझे कोटि-कोटि प्रणाम। इस दिल पे लिखा तेरा नाम, तुझे कोटि-कोटि प्रणाम ॥

हे संत सरूप श्रद्धाराम...

यह जन्म है तेरे हवाले, हे नाथ भक्त रखवाले। बिन तेरे कोई नहीं मेरा, इस दीन को कंठ लगा ले। अब मन को लुभाया यह धाम, तुझे कोटि-कोटि प्रणाम।इस दिल पे लिखा तेरा नाम, तुझे कोटि-कोटि प्रणाम।।

हे संत सरूप श्रद्धाराम...

कई जन्मों से भटक रहा था, साधु संगत भी खूब करी। हरि नाम के मोती मिले न, यह झोली कहीं ना भरी।। अब मन को यहां पे विश्राम, तुझे कोटि-कोटि प्रणाम। इस दिल पे लिखा तेरा नाम, तुझे कोटि-कोटि प्रणाम ।।

हे संत सरूप श्रद्धाराम...

कभी आस की डोर न टूटे, हे मेरे गुरु इष्ट देव। मैं रहूंगा शरण में तेरी, एक दास की तरह सदैव ।। मेरी बाह पकड़ लो थाम, तुझे कोटि-कोटि प्रणाम। इस दिल पे लिखा तेरा नाम, तुझे कोटि-कोटि प्रणाम।

हे संत सरूप श्रद्धाराम...

इस धाम सा ओर ना कोई, सुरलोक का है यह द्वारा। इस द्वारे से मुक्ति मिलती, फिर होए न जन्म दुबारा ।। "लाल" विनती करे सुबह शाम, तुझे कोटि-कोटि प्रणाम। इस दिल पे लिखा तेरा नाम, तुझे कोटि-कोटि प्रणाम।

हे संत सरूप श्रद्धाराम...

दोहा:ओम शहनशाह झंडा, पूरी करे मुराद। जिसकी जैसी भावना, वैसा दे प्रसाद ॥ जिसने इस प्रसाद से, झोली ली भरवाए। वह प्राणी घर बैठे, गंगा लिया नहाए।

तर्ज-चुप-चुप खड़े हो जरूर कोई बात है

ओम शहनशाह झड़ा, जो भी जन झुलाएग। बापू जी से मन की, मूरादें वह पाएगा।

ओम शहनशाह झंडा...

निःसंतान वाला, बेटा-बेटी पाएगा। बापू जी के आगे, जब सिर को झुकाएगा। गोदी में वह अपनी, संतान खेलाएगा। बापू जी से मन की मुरादें वह पाएगा।

ओम शहनशाह झड़ा...

ओम जी के झंडे ने अंधे को आंख दी। गूंगे को जिव्हा दी, लंगड़े को टांग दी॥झड़े तले आएगा, जो सुखी हो जाएगा। बापू जी से मन की, मुरादें वह पाएगा।।

ओम शहनशाह झड़ा...

नेक सरकार बैठी, खोल के खजाने को। मनचाही भेंटे लो, आनंद मनाने को।हाथ जो पसारेगा, वह खाली न जाएगा। बापू जी से मन की, मुरादें वह पाएगा।।

ओम शहनशाह झड़ा...

झड़े तले खड़े हो, जो अरदास करेगा। निश्चय से कहता हूँ, वह दुःख नहीं भरेगा।। ओम जी का वरद् हस्त, इच्छाएं पुजाएगा। बापू जी से मन की, मुरादें वह पाएगा।

ओम शहनशाह झड़ा...

झंडे ने भक्तों को, दुःखों से उभारा है। सभी की जुबां पे अब, इनका ही नारा है।। "लाल" इस झड़े के, जो सदा गुण गाएगा।

बापू जी से मन की, मुरादें वह पाएगा।

ओम शहनशाह झड़ा...

बापू गुरदास राम जी महाराज

दोहा :संत गुरदास राम की, महिमा बड़ी अपार । नंदाचौर तीर्थ का, जिन संभाला भार।। अपने को समर्पित कर, बन गए ओम सरूप। अब संतों के चित्र पर, यही चढ़ाते धूप ॥

संतों का जीवन बड़ा विचित्र होता है। वह अपने स्वरूप को छिपा कर गुप्त रूप में ईश्वर की आराधना करना चाहते हैं। इसीलिए वह गुफाओं-कन्द्राओं तथा वनों के एकांत स्थान में जाकर ईश्वर की तपस्या करते हैं। उन्हें तपस्या में बाधक पशु परिंदो का आगमन भी अच्छा नहीं लगता। तनिक सी आहट भी बाधक बनकर ईश्वर से जुड़ी तार को तोड़ देती है। वह ईश्वर के परमानंद में अपना ध्यान लगाते हैं। जब उनकी भक्ति चरम सीमा पर पहुंच जाती है। तब जगत्पति

जगदीश्वर उन्हें लोक कल्याण के लिए संसार में भेजते हैं। संत गुरदास राम जी महाराज की भी कुछ ऐसी ही गाथा है।

संत गुरदास राम जी महाराज का जन्म 31 भादों सवत् 1973 विक्रमी को ग्राम दो सांझ कलां जिला जालंधर पंजाब में हुआ। आपके पिताश्री का नाम लघु राम जी और माताश्री का नाम हुक्म देवी था। आपके पिताश्री गांव के एक ख्याति प्राप्त प्रसिद्ध हकीम थे। गांव का प्रत्येक व्यक्ति आपको भली भांति जानता था। आप ग्राम के श्रेष्ठ व्यक्तियों में एक थे। इसी कारण से गांव का प्रत्येक कार्य आपकी देखरेख में होता। शिव दत्त नामक आपके एक भाई थे। जो आपकी भांति ईश्वर के सच्चे पुजारी थे। उन पर सदैव बापू ओम नारायण जी की कृपा बनी रहती। आप दोनों का जन्म बापू ओम नारायण जी के आशीवार्द से हुआ। आप बचपन से बुद्धिमान सुशील एवं गम्भीर प्रवृति के संत थे। आपने अंग्रेजी में एम.ए. की शिक्षा प्राप्त की और सरकारी नौकरी लौहार में की। नौकरी के साथ-साथ खाली समय में ईश्वर का ध्यान करते-करते ईश्वर के सच्चे पुजारी हो गए। आप माता-पिता के संस्कारों के कारण नित्यप्रति श्री ओम दरबार नंदाचौर में शीश झुकाने आते और दरबार आसीन बापू श्रद्धाराम जी से आशिष प्राप्त करते। आपको योग्यता, बुद्धिमता एवं चतुरता को देखकर बापू संत श्रद्धाराम जी महाराज ने आपको नंदाचौर दरबार ट्रस्ट का का प्रधान नियुक्त किया। तब आप सरकारी नौकरी पर कार्यरत थे। आप उप सचीव पंजाब सरकार लोक सेवा आयोग के पद पर आसीन थे। आपने बापू जी की प्रेरणा से सरकारी नौकरी छोड़ दी और नंदाचौर धाम की चाकरी संभाल ली।

एक दिन बापू संत श्रद्धाराम जी महाराज अपनी मौज में नंदाचौर दरबार को गद्दी पर सुशोभित थे। आप आए और नतमस्तक होकर जाने लगे। ऐसे में बापू जी ने आपको बुला लिया और फिर अपने पास बिठाकर बड़े प्रेमपूर्वक समझाने लगे-हे बापू उपासक भक्त जी। मैं चिरकाल से देख रहा हूँ। आप इस दरबार की गद्दी संभालने की समर्थता रखते हैं। इसलिए झिझक को त्याग कर निष्काम भाव से दरबार की सेवा में लग जाइए और यहां आने वाले श्रद्धालुओं को नंदाचौर दरबार की महत्तता बताईए। बापू जी के इन वचनों को सुनकर आपके हाथ पावं शिथिल पड़ गए। तब हाथ जोड़कर निवेदन करने लगे हे ईश स्वरूप बापू जी। मैं इस योग्य नहीं हूँ। जो गृहस्थी होकर ब्रह्मचारी की गद्दी संभाल सकूं। तब आपने इस सुझाव का त्याग कर दिया।

संत बापू श्रद्धाराम जी महाराज के संसार छोड़ने पर संगत के बार-बार आग्रह करने पर आपने नंदाचौर दरबार की गद्दी का सारा कार्य भार संभाल लिया। आप दिन सुखपूर्वक बीत जाने पर रात्रि में बापू जी की मूर्ति के सामने उपस्थित होकर दिनचर्या की आज्ञा लेते और फिर सारा दिन उसी पर चलते। आप बापू जी की आज्ञा बिना कोई भी कार्य न करते। संगत आपको बापू जी का रूप जानकर नतमस्तक होती और मनवांछित फल पाती।

आप रामचरित मानस के सच्चे पुजारी थे। दरबार में रामचरित मानस का पाठ रखना और समयानुसार भोग डालना एवं समाप्ति करना अपना कर्तव्य मानते थे। आपने संगत को गुरबाणी व राम कथा के पाठ के पठन एवं श्रवण की प्रेरणा दी। आज भी इस दरबार में निरंतर राम चरित मानस और गुरबाणी पर प्रकाश डाला जाता है और पाठ के बल पर दुःख दरिद्र को सदैव के लिए हृदय से निकाला जाता है। आप गुरबाणी पर भी विश्वास रखते थे और उसे बड़े ध्यान से सुनते थे।

आपने मंदिर की सुंदरता के लिए अपने गुरुदेव संत बापू श्रद्धाराम जी की जीती जागती मूर्ति, नंदाचौर दरबार में स्थापित करवाई। इसके अतिरिक्त संत बापू ओम नारायण दत्त जी की मूर्ति ओम जी के तपोवन में लगवाई।

आप परोपकारी संत व भक्त सिद्ध हुए। आपकी धर्म पत्नी सुमित्रा देवी जी भी आपके साथ-साथ बापू जी की श्रेष्ठ भगतिन हो गई।

दोहा : समय का चक्र चल रहा, समय न रुकने पाए। एक दिवस फिर चलने का, समय निकट आ जाए।

संत बापू गुरदास राम जी महाराज की अब इस जगत को छोड़ने की घड़ी निकट आ गई, जीवन लीला समाप्त होने की बेला समीप आ गई, आपको एक भयानक रोग ने घेर लिया। तब अस्पताल में उपचार हेतु भर्ती होना पड़ा। आप महानगर दिल्ली की राजधानी अस्पताल विलिंगडन जिसे आजकल राम मनोहर लोहिया अस्पताल कहते हैं, वहां अंतिम श्वासों की पूर्ति करने लगे और अपने सद्गुरु संत बापू श्रद्धाराम जी महाराज के चित्र को बार-बार सिर नवाने लगे।

"काव्य लहरी"

गुरु आओ तो पार लगाओ, किनारे पर हम खड़े हैं। अब नाव को राह दिखाओ, किनारे पर हम खड़े हैं।।

गुरु आओ तो पार लगाओ...

इस दास की विनय सुनकर, इस जन्म को अमर कर दो। अब सिर पे हाथ टिकाकर, मेरे कष्टों को हर लो। मेरे सभी दोष भुलाओ, किनारे पर हम खड़े हैं। अब नाव को राह, दिखलाओ, किनारे पर हम खड़े

हैं।।

गुरु आओ तो पार लगाओ...

अब जीने की आस रही न, हंस जाएगा अकेला। यह जग है झूठा झमेला, नश्वर यहां का मेला।। इस घड़ी में साथ निभाओ, किनारे पर हम खड़े हैं। अब नाव को राह दिखाओ, किनारे पर हम खड़े हैं।।

गुरु आओ तो पार लगाओ...

देरी भई मुख देखा न, अब अपना मुखड़ा दिखाओ। मुझ दीन का हाथ पकड़ के, अपनी शरण में बिठाओ ।। "लाल" अपने पास बुलाओ, किनारे पर हम खड़े हैं।

अब नाव को राह दिखाओ, किनारे पर हम खड़े हैं।।

गुरु आओ तो पार लगाओ...

संत बापू गुरदास राम जी महाराज की दयानीय प्रार्थना सीधी बापू श्रद्धाराम जी महाराज के द्वार पर जा लगी। तब सचखण्ड से विमान आया। आपको मान-सम्मान सहित बिठाया और परम तत्व के द्वार पर पहुंचाया। द्वार पर संत जी ने ईश्वर के नाम की माला घुमाई, किवाड़े खुले आवाज आई, तुम्हारी यात्रा सफल है। तुमने नंदाचौर दरबार की सेवा तन-मन-धन से निभाई है। तुम प्रशंसा के पात्र हो। अब आओ। हमारे गले लग जाओ और हममें समा जाओ।

तब संत बापू गुरदास राम जी महाराज नतमस्तक होकर प्रभु में लीन हो गए। आप 3 चैत्र सवत् 2038 विक्रमी अर्थात् 16 मार्च सन् 1982 को जोती जोत समा गए। उसके उपरांत भक्त भानु दत्त जी महाराज को ज्वाला नगर सहारनपुर की सर्वसम्मति ने श्री नंदाचौर दरबार की गद्दी पर आसीन कर बापू नाम की पदवी से सम्मानित किया।

दोहा : संत गुरदास राम जी, गये प्रभु के धाम। जगकर्ता के धाम पर, उनके घट विश्राम ॥ सारे कारज सफल कर, उज्जवल कर गए नाम। "लाल" अंत समय कर गए, सबको राम-राम।।

बापू भानु दत्त जी महाराज की जीवनी

दोहा:भानु दत्त महाराज तो, बने भक्त सिरमौर। उनके दम से बन गया, तीर्थ नंदाचौर।।सबको अमृत दे रहे, जोड़ प्रीत की डोर।भक्त शरण में आ गये, हिये सानंद विभोर ।।सत्संग के रंगों में, नाच उठा मन मोर।सबको दर्शन दे रहे, बनकर नंद किशोर ।।

संत पंडित भानु दत्त जी महाराज अमूल्य रत्नों की खान थे। इनकी कथा कहानियां प्रत्यक्ष जीते जागते परिमाण हैं। इनके हृदय में अपने भक्तों की सदैव तस्वीर रहती थी। जो नंदाचौर दरबार में सिंहासन रूढ़ देखकर आपकी दिन रात महिमा कहती थी। आपके कठिन श्रम एवं तपस्या के बल पर नंदाचौर धाम एक महान तीर्थ स्थान बना। इस स्थान पर बैठकर बापू भक्तों को प्रभु का अमृत मिला। जन्म-जन्मान्तर में भ्रमित हृदय कमल खिला। सत्संग के माध्यम से मन का मोर नाच उठा। अब यहां पर सर्वशक्तिमान जगत्पति जगदीश्वर के साक्षात् दर्शन हो रहे हैं।

संत पंडित बापू भानु दत्त जी महाराज संत बापू श्रद्धाराम जी महाराज के परम शिष्य थे। आप हिमाचल प्रदेश के एक छोटे से गांव के निवासी थे। आपको मंदिर बापू ज्वाला सिंह (ज्वाला नगर सहारनपुर) की सर्वसम्मति ने नंदाचौर दरबार की गद्दी पर नियुक्त किया। आपने निरंतर कई वर्षों तक गद्दी की व्यवस्था को बड़े सुचारू ढंग से चलाया और नास्तिक को भी आस्तिक बनाकर प्रभु का नाम जपाया। आपकी आज्ञा का अभी तक पालन हो रहा है। नंदाचौर धाम पर चौबीस घंटे हरिनाम का पाठ तथा गुरबाणी का पाठ होता है। जो यहां पर आने वाले श्रद्धालुओं के हृदय को पवित्र करता है। हरि नाम का पाठ रामचरित मानस प्रभु से मिलन की सच्ची एवं पवित्र कथा है। इसके पठन एवं श्रवण से मानव सचखण्ड में सिंहासन रूढ़ एक ओम प्रभु का दर्शन करता है और फिर उसमें एकाकार होकर उसमें समा जाता है। यही इस जीवन का मनोरथ है। गुरबाणी का पाठ गूढ़ उपदेशों और संकेतों को विधिपूर्वक समझाता है। इस पाठ को ध्यान से सुनने व पढ़ने पर मन को शांति मिलती है।

आनंद की प्राप्ति होती है। इसी के आसरे जन्म-मरण से मुक्ति मिलती है। गुरबाणी में जो कुछ भी मानवता के लिए समर्पित किया है यही वास्तविक मानवके कल्याण का उद्देश्य है।

संसार से पार उतरने के लिए पूर्ण गुरु की आवश्यकता है गुरु हो तो ऐसा हो जो स्वयं पूर्ण गुरु हो और अपने शिष्य को पूर्ण ज्ञान दे सके। आपने अपने समस्त शिष्यों एवं श्रद्धालुओं को ईश्वर का पूर्ण ज्ञान देकर बापू धाम को प्रयाण किया। तब श्री नंदाचौर दरबार की गद्दी पर बापू हरभगवान श्री महाराज शोभायमान हुए।

दोहा : सतुगुरु की दया से, मिले परम परोक्ष। गुरु शब्द के ध्यान से, मिले जगत से मोक्ष। मन से चिपकी मैल को, सतगुर दूर हटाए।

जिसने मन को धो लिया, उसने ही हरि पाए।। गुरु नाम का ध्यान कर, इससे बड़ा न कोए। "लाल" गुरु की ओट ले, अंत सहाई होए।।

गद्दीआसीन बापू हर भगवान जी महाराज

दोहा :बापू हर भगवान जी, मिठ्भाषी इंसान। नेक मानस के तन में, छिपे हुये भगवान।। सत्संग की भट्ठी में, तप-तप हुए विद्वान। अब तो मुंह से झरते, नित अमृत व्यख्यान ।। धर्म कर्म को सारथी, बुद्धि चालक लगाम। भक्तों के संगी सखा, ऐसे ललित ललाम ।।

संत बापू हर भगवान जी महाराज की वाणी इस संसार के झमेलों से प्राणी को जलते-तपड़ते-विलखते-कलहपते तथा हर प्रकार के दुःखों से मुक्ति दिलाने को वाली है। मानस तन के चोले में छिपे बापू हर भगवान जी महाराज साक्षात् भगवान है। जो बापू श्रद्धाराम जी का वास्तविक रूप हैं। इनके किये कर्म इनके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। सत्संग की सभा में बैठकर नित्यप्रति हरि नाम का रस लूट-लूट कर

यह संतो की सभा में सम्मिलित हुए हैं। अब नंदाचौर दरबार की गद्दी पर आसीन होकर मधुर-मधुर व्यख्यानों से संगत का मन मोह रहे हैं। आप ईश्वर के नाम की शोभा शालिनी माला घुमा-घुमाकर सभी के पाप धो रहे हैं। स्वयं धर्म कर्म के सारथी बनकर तथा बुद्धि की लगाम थाम कर भक्तजनों के काज संवार रहे हैं। आप अपने श्रद्धालुओं के संगी हैं, सखा हैं, मित्र हैं तथा मीत हैं। आपने देव दुलर्भ धरती पर ज्ञान की गंगा बहाकर अनु-अनु में बसने वाले उस परम तत्व के गुण का बखान कर इस धरती के मानव को प्रभु से जोड़ा है।

आपके सामने सारा संसार झोली फैलाकर खड़ा है, आप दातार है सभी को दे रहे हैं। आपकी देनों को किसी भी वाणी में लिखा नहीं जा सकता। आप देवों में देव हैं। संतों में संत हैं। ज्ञानियों में ज्ञानी हैं, पंडितों में पंडित हैं। गुरुओं में गुरु हैं। आपकी महिमा का बखान किसी भी लेखनी से नहीं किया जा सकता।

दोहा : मन के दपर्ण में छिपे, बापू हर भगवान। मन की आंखे खोलकर, देख जरा इंसान।। त्याग भटकना मन की, इनके बैठ समीप । इस घट के प्रयांण में, जग जाएंगे दीप। बापू जी तो दे रहे, हर पल यह संकेत । बापू के संकेत में, छिपा भक्त का हेत ।। राम नाम को सुमर लो, अंत सहाई होए। "लाल" बापू की वाणी, पुष्प सुगंधित बोए।

बापू धाम श्री ओम मंदिर

दोहा : बापू धाम मंदिर तो, सब दुःख देता चीर। भूले भटके मनुज को, यहीं बंधाता धीर।। ओम शहनशाह ध्वज तो, मंदिर की है शान। वहीं मुरादें पा रहे, जो इस पर कुर्बान।।

भारत के पवित्र धामों में प्रधान एवं महान बापू धाम श्री ओम मंदिर का नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। इस धाम की पवित्र कथा बड़ी मनभावक है। यहां की कर्मभूमि दूषित चितवाले व्यक्ति के पाप हर लेती है। जो प्राणी बापू जी की फुलवाड़ी में रहकर ओम शहनशाह झंडा साहिब को नमस्कार करते हैं। वह समस्त पीड़ाओं को भेदन कर संसार में शोभा पाते हैं।

सन् 1911 ईसवी में ब्रिटिश सरकार का पूरे भारत पर राज्य था। ऐसे में एक दिन राजधानी लंदन में भारत वर्ष पर राजभिषेक ध्वज फैहराने का निर्णय लिया गया। तब ब्रिटेन के राजा जॉर्ज पंचम जिन्हें रोडा बादशाह भी कहते हैं। अपनी

महारानी मैरी सहित दिल्ली में स्थित राजसी समारोह में भाग लेने हेतु जा रहे थे। राजा की सवारी दिल्ली के उत्तरी भाग ढक्का ग्राम से निकली। उस समय मार्ग के दोनों तरफ झौपड़ियां ही झौपड़ियां स्थित थीं। सवारी को देखते ही मार्ग पर तैनात सैनिकों ने कोलाहल मचा दिया। झौपड़ियां ढाको-ढाको। राजा की सवारी आ रही है। तत्काल झौपड़ियों को ढाका गया। सवारी उपरांत झौपड़ियों को उजागर किया गया। तब इस स्थान का नाम किंग्जवे मार्ग पड़ा।

सन् 1952 ईसवी को जब नंदाचौर धाम के स्वामी बापू श्रद्धाराम जी महाराज अपने भक्त की प्रार्थना पर उनके सुपुत्र के नामकरण पर दिल्ली आए। तब अपने प्रेमी भक्त देवी दित्ता जी द्वारा बापू जी के चरणों में समर्पित एक भूखण्ड पर अपने गुरुदेव बापू हरनाम जी की पुन्य स्मृति में मंदिर श्री ओम नारायण हरनाम जी सत्संग सभा की स्थापना की और क्षेत्रवासियों को सेवा-सत्संग-सिमरण से जोड़ने के लिए सप्ताह के प्रत्येक रविवार को सत्संग व लंगर की प्रथा चलाई।

तब से निरंतर इस मंदिर में बापू नाम लेवा सैकड़ों की गिनती में आने लगे और बापू जी से आशिष पाकर जगत के दु:ख रूपी संकटों का अन्त करके सुखों से जीवन व्यतीत करने लगे।

सन् 2008 ईसवी में दिल्ली के महापौर महामहिम आरती मेहरा जी ने इस मंदिर की महानता को देखते हुए, ईश्वर विश्वासी, कृपामूर्ति बापू हरभगवान जी महाराज की देख-रेख में किंग्जवे मार्ग का नाम ओम मंदिर के नाम पर ओम मंदिर मार्ग रखा।

अब इस मंदिर में दिन-रात अखण्ड पाठों की जोत जगती हैं, जो गुरवाणी और राम चरित मानस पर प्रकाश डालती है।

दोहा : अब यह मंदिर बन गया, मनमोहक आगार। यहां से सीधी लगती, विनय ईश के द्वार। जिस घट इसकी महक है, वह घट ठंडा ठार। "लाल" यहीं से मिल रहे, सबको शुभ उपहार।।

लंगर गृह

दोहा : लंगर छकने से मिटे, लगी भूख की आग। बापू के प्रसाद में, कुछ ऐसा अनुराग ॥ लंगर ब्रह्मभोज है, किस्मत वाला खाए। जिस मुख लंगर लग जाए, वही देव बन जाए।

लंगर गृह की सेवा का महत्व जिसने भी जाना है, सच मानो तो उसी ने ही ईश्वर को पहचाना है। बापू श्रद्धाराम जी महाराज कहते हैं कि ईश्वर अपने सेवकों की प्रीति में विभोर होकर कभी-कभी लंगर छकने चले आते हैं जो उनके नेक सेवादार होते हैं। उन्हें मालामाल कर देते हैं। इसलिए सेवादारों को शुद्ध मन से सेवा निभानी चाहिए। बापू जी समय-समय पर अपने प्रवचनों से अपने श्रद्धालुओं को निहाल करते हैं और ईश्वर की डग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज ने मंदिर श्री ओम नारायण हरनाम जी सत्संग सभा की स्थापना उपरांत अपने कर कमलों से ओम शहनशाह झंडा साहिब को लंगर गृह में फहराया और अपने मुखारबिंद से इसे सदैव के लिए अटल करके कहां-जो भक्त शुद्ध मन से इसकी शरण में आएगा, वह ओम जी की कृपा से मनवांछित फल पाएगा।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज ने ओम शहनशाह झंडा साहिब को, कल्पवृक्ष के नाम से विख्यात किया। जिस प्रकार कल्पवृक्ष से सभी अभीष्ट वस्तुएं प्राप्त होती हैं, ठीक उसी प्रकार इसकी शरण में रहकर लोक परलोक की दुलर्भ वस्तुएं भी प्राप्त होती हैं, इसका दर्शन बापू भक्तों के लिए सर्वपरि है।

आज झंडा साहिब लंगर गृह में सुशोभित होकर लंगर गृह की शान बढ़ा रहे हैं और झूम-झूम कर सभी को यही संदेश सुना रहे हैं। आओ। बापू भक्तों आओ। अधिक विलम्ब न लगाओ। झंडे की शरण में आओ और मन की मुरादें पाओ।

ओम शहनशाह झंडा साहिब की सदा ही जय

दोहा : बापू श्रद्धाराम ने, झंडा दिया झुलाए। खुले द्वारे ओंम के, झोली लो भरवाए।।

लंगर गृह के सेवादार-श्री गुलशन कुमार नागपाल जी श्री खरैती लाल जी, श्री लवीश कालड़ा जी, विवेक तनेजा जी, श्री सुशील आहुजा जी, श्री अनुराग आहुजा जी, श्री अजय ग्रोवर जी (बबलू) श्री सलेन्द्र शाह जो तथा श्री विकास जी।

यह सभी सेवादार बड़े शुद्ध एवं नेक ढंग से सेवा निभा रहे हैं। सभी को एक पंगत में बिठाकर लंगर छका रहे हैं। बापू जी इन्हें सद्बुद्धि दें ताकि यह इसी प्रकार बापू भक्तों की सेवा करके अपना जन्म सार्थक बनाएं। लंगर गृह में ऊंच नीच, छुआछूत, बड़ा-छोटा, अमीर-गरीब किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है। सभी को वसुंधरा की गोद में बिठाकर लंगर छकाया जाता है।

दोहा :बापू जी ने दिया, भक्तों को वरदान। इसके फलस्वरूप ही, करें सभी का मान।। अन्तरमुखी चिराग में, कभी न उपजे वैर। हाथ जोड़कर ओम से, यही मांगते खैर ।। सबके मुखड़े पर दिखे, बापू जी की नूर। "लाल" ईर्ष्या, शंका, इनसे रहती दूर।।

सत्संग संपूर्ण आहुति दाता

गुरबाणी ज्ञाता-बापू यशोगायक श्रीमान् हर दयाल जी

दोहा : सत्संग की समाप्ति, सदा-सदा शुभ होए। "लाल" बापू की कृपा, मन अमृत संजोए।।

लेखक की विनम्र प्रार्थना

मनुष्य त्रुटियों का अंबार है। सुधिजन, श्रोताजन, पाठकगण, त्रुटियों पर ध्यान न देकर बापू जी की मनोविनोद लीलाओं का आनंद लें। अंत में-क्षमा याचना सहित-

दोहा: बापू जी ने देश में, कौतुक रचे अपार।
"लाल" लिखे और कर दिए, जन अपर्ण निस्तार।।

इति शुभ

"लाल कृत"

काव्य कलश संग्रह

।। बापू जी के मधुर भजन ।।

मधुर-मधुर संगीत में, बापू जी के गीत। "लाल" इन्हीं से हो रहे, जगजीवन सुरजीत ।।

लेखक

कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी

धार्मिक साहित्यकार सरस्वती रत्न सम्मानित

॥ काव्य लहरी ।।

मैं इस धाम पर आता हूं आता रहूंगा। बापू के गीत गाता हूं गाता रहूंगा।। हैं जब तक मेरा इस जग में आबोदना। मैं यहां सिर झुकाता हूं झुकाता रहूंगा।।

तर्ज-ना मैं भगवान हूं, ना मैं शैतान हूँ, दुनियां जो

यह ओम जी महान हैं, सर्वशक्तिमान हैं। कोई माने न माने, मेरे भगवान् हैं।।

यह ओम जी महान हैं...

यह सीता के राम हैं, राधा के शाम हैं। मीरा के गोपाल हैं, सब सुख आराम हैं।। अल्लाह, वाहेगुरु गौड़, सच का ज्ञान हैं। कोई माने न माने, मेरे भगवान् हैं।।

यह ओम जी महान हैं...

यह ब्रह्म स्वरूप हैं, कर्ता का रूप हैं।

इनके स्वरूप की तो, हर छटा अनूप है।इनके तो मुखड़े पें, सदा ही मुस्कान है। कोई माने न माने, मेरे भगवान् है।।

यह ओम जी महान हैं...

इनकी लीलाएं देख, होता अचंभा है।

गगन के नीचे लगा, कोई न खंभा है।। खेल देख-देख इनके, जन-जन हैरान हैं। कोई माने न माने, मेरे भगवान् है।।

यह ओम जी महान हैं...

यह ओम पिता जी मुझसे, कभी भी रूठे न। बाप बेटे का नाता, कभी भी टूटे न।। "लाल" इन्हीं के मुझपर बड़े ऐहसान हैं। कोई माने न माने, मेरे भगवान् है।।

यह ओम जी महान हैं...

तर्ज-जोगी हम तो लुट गए तेरे प्यार में ...

ओ बापू हम तो आए तेरे द्वार पर जाने हमपे ओ बापू मेहर कब होगी

ओ बापू...

तुम हो ब्रह्मा, तुम हो विष्णु, तुम भोला भण्डारी। भक्त सुदामा, केवट शबरी, अपने हाथ उभारी।

ओ बापू...

कठिन समय जब गज पर आया, तुमरी ओट निहारी। सूंड़ पकड़कर उसकी तुमने, झट से की निस्तारी।

ओ बापू...

यम डंड की मार से बचने, अजामिल टेर लगाई। चक्र सुदर्शन लेकर दौड़े, नाम की लाज बचाई।।

ओ बापू...

ध्रुव भक्त को नारद जी की, सीख बड़ी मन भाई। उसी सीख ने उसकी नइया, भव से पार लगाई।

ओ बापू...

झोली को फैलाकर बैठे हम भी तेरे द्वारे। सब सुख देने वाले बापू, अब दुःख हरो हमारे ।।

ओ बापू...

बापू तुमने मेरी बारी, देरी क्यों लगाई। "लाल" शरण में आन पड़ा है, क्यों न करी सुनाई।।

ओ बापू...

चरण धूल की महिमा

दोहा :थड़ा साहिब की महिमा, जन-जन रहे बखान। यहां सुशोभित थड़े पर, बैठे है भगवान। नंदाचौर की धरती, तब से बनी महान। जब से बापू ओम जी, बने ब्रह्म समान।।

तर्ज-बचपन की महौब्बत को, दिल से न जुदा करना

थड़ा साहिब की धूलि, जो माथ चढ़ाते हैं। मैं गर्व सहित कहता, वह सुरपुर जाते हैं।।

थड़ा साहिब की धूलि...

यहां पर ज्ञान भरा, नित बहता सागर हैं। प्रभु का अमर रस तो, सभी पे निछावर है। यहां ओम किया पूजन, जन-जन बतलाते हैं। मैं गर्व सहित कहता, वह सुरपुर जाते हैं।

थड़ा साहिब की धूलि...

सब पाप कर्म टलते, यह सीतल चंदन है, इसे मनमुख भी लगा, धूलि माथ चढ़ाने पर। मन हर्षित पाने पर।। गुरमुख कहलाते हैं। मैं गर्व सहित कहता, वह सुरपुर जाते हैं। थड़ा साहिब की धूलि...

यहां पर ओम बापू, सदा से विराज रहे। प्रभु की खुमारी में, निसवासर साज रहे।। ऐसे में जो इनका, नित दर्शन पाते हैं। मैं गर्व सहित कहता, वह सुरपुर जाते हैं।

थड़ा साहिब की धूलि...

धूलि से ज्ञान मिले, यदि श्रद्धा हो मन में। नर सुख अनुभव करता, इस मानव जीवन में।। "लाल" मन सुखी रहता, दिन सुख के आते हैं। मैं गर्व सहित कहता, वह सुरपुर जाते हैं। थड़ा साहिब की धूलि...

॥ काव्य लहरी ॥

बापू श्रद्धाराम जी, दीन खड़ा है द्वार। नजर उठाकर देख लो, हे सच्ची सरकार ।। ढक्का ग्राम स्थान पर, जब से चरण टिकाए। सबके चेहरे खिल गए, जन-जन मंगल गाए। धरती सुखमय हो गई, सत्संग पुष्प खिलाए। तब से भक्तों ने यहां, अनुपम भजन सुनाए।

तर्ज-महफिल से जल उठी शमा, परवाने के लिए

श्रद्धाराम हरि का रूप, मैंने लिया अब जान। यही ब्रह्मा यही विष्णु, यही हैं शिव भगवान ।।

श्रद्धाराम हरि का रूप...

इस धरा पर पाप देखकर, यह मानव बन आए। नंदाचौर थल पर आकर, अपने पैर टिकाए।। हमें मुक्ति दिलाने आए,यही करूणानिधान। यही ब्रह्मा, यही विष्णु, यही हैं शिव भगवान।। श्रद्धाराम हरि का रूप...

सुंदर चोले नर तन ने, सबके भाग्य जगाए। जिस-जिसने दर्शन पाया, हर्षित मन मुस्काए । राम रूप बनाने वाले, यह समर्थ बलवाना यही ब्रह्मा, यही विष्णु यही हैं शिव भगवान ।।

श्रद्धाराम हरि का रूप...

खिला-खिला सा रूप इनका, यही जगत के चालक। दयावान इस बापू के हम सब ठहरे बालक। पाप कर्म सब नष्ट करते, वेकर शुभ वरदान। यही ब्रह्मा, यही विष्णु, यही हैं शिव भगवान।।

श्रद्धाराम हरि का रूप...

सभी घटों में बसते हैं, घट-घट अन्तरयामी। मंगलमय सच की सूरत, बापू धाम स्वामी ।। "लाल" इनकी छत्रछांव में, सृष्टि के इंसान। यही ब्रह्मा, यही विष्णु, यही हैं शिव भगवान ।।

श्रद्धाराम हरि का रूप...

तर्ज-फूल तुझे भेजा है खत में, फूल नहीं मेरा दिल है-

बापू जी तुम जग के दाता, सब राजा के राजा है। नंदाचौर धाम पर देखा, तुम्हीं गरीब निवाजा हो।

बापू जी तुम जग के दाता...

तुम कर्ता हो सारे जग के, सब जीवों के स्वामी हो ,सभी घटों की जाननहारे, घट-घट अन्तरयामी हो सबकी आस पुजाने वाले, सबके भाग्य विधाता हो, नंदाचौर धाम पर देखा, तुम्हीं गरीब निवाजा हो

बापू जी तुम जग के दाता...

जिसकी जैसी मनोकामना, वैसा ही फल देते हो। तुम्ही नंदाचौर बैठकर, विनय सभी की सुनते हो।। सबके काज बनाने वाले, तुम्हीं पीर ख्वाजा हो। नंदाचौर धाम पर देखा, तुम्हीं गरीब निवाजा हो

बापू जी तुम जग के दाता...

नमक हराम कभी न बनना, यही आप का कहना है ,आपकी इस अमर वाणी पर, हमें दृढ़ अब रहना है, हम भक्तों के लिए आपका, सदा खुला दरवाजा हो ,नंदाचौर धाम पर देखा, तुम्हीं गरीब निवाजा हो

बापू जी तुम जग के दाता...

हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख-ईसाई, सभी यहां पर आते हैं। आपस में सब मिलकर रहते, सब मिल पर्व मनाते हैं।। "लाल" यहां सब शीश झुकाते, चाहे मामा भांजा हो। नंदाचौर धाम पर देखा, तुम्हीं गरीब निवाजा हो।

बापू जी तुम जग के दाता...

104 /बापू धाम के मीठे बोल

॥ काव्य लहरी ।।

बापू जी के दर आने पर, सब चीजें मिलती है। क्योंकि इनकी चरण धूलतो, नित कनक उगलती है।। बापू की कृपा दृष्टि से, हर आशा फलती है। इनसे हाथ फैला के ले, शुभ घड़ी निकलती है।

तर्ज-बड़े प्यार से मिलना सबसे, दुनियां में इंसान रे

जो भी मांगों बापू जी से, सोइ-सोइ मिलता है। इस दरबार में आने से,सभी संकट टलता है।।

जो भी मांगो बापू जी से...

रोटी मिलती कपड़ा मिलता, मिलता सुखी परिवार। माता मिलती पिता मिलता, मिलती ज्ञानवती नार।। बापू जी की छत्रछाया में, हर हृदय खिलता है। इस दरबार में आने से, सभी संकट टलता है।

जो भी मांगो बापू जी से...

दयानिधान ओम से मांगों, जो सब जग को देते। किसने लिया यहां से कितना, हिसाब कभी न लेते।। खान-पान के देव यही है, जग इनपर पलता है। इस दरबार में आने से, सभी संकट टलता है।।

जो भी मांगो बापू जी से...

मनोकामना पूरी करते, जो जन मन में सजाए। दूध पूत से फले व फूले, जो भी यहां पर आए। बापू जी के मधुर वचन सुन, शुभ समय निकलता है।।

जो भी मांगो बापू जी से...

बापू जी सतपथ अनुरागी, सच्चे ईश पुजारी। जगत्पति जगदीश्वर जी की, इन पर कृपा भारी।। "लाल" इन्हीं की आज्ञा बिन, पत्ता भी न हिलता है। इस दरबार में आने से, सभी संकट टलता है।।

जो भी मांगो बापू जी से...

तर्ज-चल उड़ जा रे पंछी कि अब यह देश हुआ बेगाना-भाभी

अब सुनले रे बंदे, तेरी यह कागज जैसी काया। अब सुनले रे बंदे...

कागज जैसी तेरी काया, बूंद पड़े गल जाए। क्या भरोसा इस काया का, कब जाने ढल जाए।

राम रत्न को जोड़ ले बंदे, अंत यही संग जाए।

अब सुनले रे बंदे...

कौड़ी तोल न तोल जन्म को, देह का कर न नास।बापू धाम की ओर पैर रख, इसमें ब्रह्म निवास ।। भक्ति रस का प्याला पीले, इसमें हर्ष उल्लास।

अब सुनले रे बंदे...

नश्वर काया पर इतरा ना, यह तो साथ न जाए।ओम का मार्ग धर्म की सीढ़ी, सत्य मार्ग दिखलाए।। दुनियां दर्शन का है मेला, एक आए एक जाए।

अब सुनले रे बंदे...

शांत होगी तेरी काया, माटी में ही मिलकर। चार जने जब कंधा देकर, फूंके आग लगाकर ।।यही विधि का अटल नियम है, सुनले कान लगाकर।

अब सुनले रे बंदे...

ओम बापू की वाणी सुनकर, घट में जोत जगाले। इस जीवन का मोल जान के, इसको सफल बनाले।। "लाल" भटकना छोड़ जगत की, इस पर ध्यान लगाले।

अब सुनले रे बंदे...

काव्य लहरी

भक्तजनों की विनय पर, बापू दिल्ली आए।देवी दिता परिवार के, तब फिर भाग जगाए।। भक्त प्रभु को देखकर, मंद-मंद मुस्काए। सुनसान पड़ी तब भूमि, बापू भेंट चढ़ाए।।

यहाँ बापू की करनी, सब पर कर्म कमाए। ओम शहनशाह झंडा, सबकी आस पुजाए।

तर्ज-बहारों फूल बरसाओ, मेरा महबूब आया है-सूरज

करो इस धाम का दर्शन, यहां पर बापू आए हैं। यह धरती हो गई पावन, यहां पर बापू आए हैं।

करो इस धाम का दर्शन...

बापू ने यहां बैठकर ज्ञान की गंगा बहाई। सभी का मन हुआ गद्-गद् भजनों की झड़ियां लगाई।। खिला हर जीव पर उपवन, यहां पर बापू आए हैं। यह धरती हो गई पावन, यहां पर बापू आए हैं।

करो इस धाम का दर्शन...

देवी संगीत बज उठा, सभी का मन हुआ नंदन। स्वरों से स्वर मिल गये, गूंज उठे धरती गगन।। छिड़ गये मनभाते भजन, यहां पर बापू आए हैं। यह धरती हो गई पावन, यहां पर बापू आए हैं।।

करो इस धाम का दर्शन...

मिला इस धाम से अमृत, आज हर एक प्राणी को सबकी रूह करने लगी, स्नेह बापू वाणी को सभी का मन हुआ कुंदन, यहां पर बाप आए हैं। यह धरती हो गई पावन, यहां पर बापू आए हैं।

करो इस धाम का दर्शन...

बापू जी यहां पर आए, सभी का दुःख मिटाने को। गार में गिरते जनों को, भव से पार लगाने को। "लाल" सबका खिला तन-मन, यहां पर बापू आए हैं।यह धरती हो गई पावन, यहां पर बापू आए हैं।

करो इस धाम का दर्शन...

॥ काव्य लहरी ॥

दोहा :बापू नंदाचौर के, भक्तन के सिरमौर। हाथ जोड़ विनती करूं, वही करेंगे गौर।। भानु दत्त महाराज जी, सुनलो मन की चीत। लाज रहे इस दास की, जो बन जाओ मीत। बापू श्रद्धाराम जी, विनय करो स्वीकार। मुझको दो चरणामृत, अपना दास विचार।।

तर्ज-बचपन महौब्बत को दिल से न जुदा करना

बापू चरणामृत तो, हर संकट को टारे। हाथों की ओक बना, नित पिओ रे प्यारे ॥ चरणामृत पिओ रे चरणामृत पिओ रे

बापू चरणामृत तो...

हमने चरणामृत को, निशदिन ही परखा है। यह दसवां दर खोले, जन-जन में चर्चा है। इसी ने करोड़ों जन, भवसागर से तारे। हाथों की ओक बना, नित पिओ रे प्यारे चरणामृत पिओ रे चरणामृत पिओ रे

बापू चरणामृत तो...

यह देवों की औषधि, योगी बतलाते हैं।इसे हाथों में लेकर, घट में पहुंचाते हैं।।इसे जिव्हा पर चढ़ा, गुण बापू के गारे।हाथों की ओक बना, नित पिओ रे प्यारे ।। चरणामृत पियो रे, चरणामृत पियो रे।

बापू चरणामृत तो...

इस चरणामृत ने तो, दुःखों का नाश किया।सब घट निर्मल करके, सच का प्रकाश किया। यह ऐसी बूटी है, जो बिगड़ी संवारे। हाथों की ओक बना, नित पिओ रे प्योर।।चरणामृत पियो रे, चरणामृत पियो रे।

बापू चरणामृत तो...

बापू का नाम जपो, जो भक्ति चाहते हो। चरणामृत सवेन करो, जो मुक्ति चाहते हो।"लाल" इसको पाने को, आ बापू के द्वारे। हाथों की ओक बना, नित पिओ रे प्यारे ॥चरणामृत पिओ रे, चरणामृत पिओ रे

बापू चरणामृत तो...

तर्ज-यह कौन आया रोशन हो गई, महफिल किसके नाम से-साथी

ओम बापू ने जगकर्ता की, महिमा हमें सुनाई है।खेल-खेल में उस दाते ने, सारी सृष्टि रचाई है।

ओम बापू ने जगकर्ता की...

गगन बनाकर उसमें छोड़े, चंदा सूरज के गोले । मानव को फिर धरती दे दी, इधर-उधर यह ना डोले ।। चार युगों को तभी रचाकर, सबके घट अमृत घोले। आपस में सब मिलकर रहना, सब हृदय के पट खोले। अपनी पावन अमर जोत से, सब घट जोत जगाई है। खेल-खेल में उस दाते ने, सारी सृष्टि रचाई।

ओम बापू ने जगकर्ता की...

संत, पुरुष, योगी, संयासी, प्रभु ने आप बनाये हैं। पंछी, परिंदे, तोता, मैना, तरुवर शिखर बिठाये हैं।। हाथी, घोड़े, गऊएं, भैसें, सब आज्ञा में चलाये हैं। उसकी करनी देख-देखकर, भक्तों ने गुण गाये हैं। हर प्राणी के अन्दर उसने, अपनी ज्योत बसाई है।।

खेल-खेल में उस दाते ने, सारी सृष्टि रचाई।

ओम बापू ने जगकर्ता की...

ब्रह्मा जी को चार वेद दे, धर्म कर्म का ज्ञान दिया।भला करो तुम हर इक जन का, शुभ कर्मों का दान दिया।। दीनों की आशिषें ले लो, जगजीवन वरदान दिया।जगत तुम्हारी महिमा गाए, ऐसा विधि विधान दिया।।संतजनों के चरण पखारो, ऐसी सीख पढ़ाई है।

खेल-खेल में उस दाते ने, सारी सृष्टि रचाई है

ओम बापू ने जगकर्ता की...

बाल्मिकि और तुलसी जी को, सेवा दी है लिखने की। सूरदास को भक्ति दे दी, नंद नंदन को भजने की।। मीराबाई को जुगत बताई, नंद किशोर मानने की। कृष्ण भक्त की लगन लगाई, शाम प्रभु को पाने की।। ऐसी उसने लीला रच दी, समझ न कुछ भी आई है। खेल-खेल में उस दाते ने, सारी सृष्टि रचाई है।।

ओम बापू ने जगकर्ता की...

देख प्रभु की अद्भुत लीला, मन को अब समझाले तू। जीवन है सुख दुःख का मेला, मन में इसे बसाले तू॥उड़ जायेगा हंस अकेला, इस पर कान लगाले तू। सकल जगत का खेल झूठ है, अपना आप बचाले तू॥ "लाल" प्रभु को शीश झुकाले, इसमें तेरी भलाई है। खेल-खेल में उस दाते ने, सारी सृष्टि रचाई है।

ओम बापू ने जगकर्ता की...

॥ काव्य लहरी ।।

दोहा : बापू जी के बोल तो, सभी गुणों की खान। इनके एक-एक शब्द में, बोल रहे भगवान।। बंदे तू इस धाम से, सच्चा करले प्यार। इसी धाम से पाएगा, जगत्पति का द्वार।।

तर्ज-आज हिंमालय की चोट से, हमने फिर ललकारा है

बापू जी की वाणी बोले, मन के बंद किवाड़े खोले। इसी धाम पर शीश झुकाले, इधर-उधर काहे को डोले। बापू जी की वाणी बोले...

यह सतपुरुषों का है डेरा, यहां चढ़े नित सुखी सवेरा। यहां सभी में भाईचारा, यहां नहीं है तेरा-मेरा ।।

सबकी रसना सच-सच तोले, इधर-उधर काहे को डोले।

बापू जी की वाणी बोले...

सबसे सुंदर धाम यही है, चारों तीर्थ धाम यही हैं।इसी धाम पर राम बसे हैं, राधा के घनश्याम यही हैं।। यहां भक्ति से मन संजोले, इधर-उधर काहे को डोले।

बापू जी की वाणी बोले...

चारों वेद यहां पर गाएं, जन-जन को अमृत पिलवाएं। दस गुरुओं की वाणियां ने भी, यहां पे अपने रंग बिछाए।।वेदों के यश से मन धोले, इधर-उधर काहे को डोले

बापू जी की वाणी बोले...

बापू जी को विनय सुनाले,जगजीवन को सफल बनाले ऐसी अमृतमयी बेला में, अपने भीतर प्रभु बसाले । "लाल" ओम की माला पिरोले, इधर-उधर काहे को डोले।

बापू जी की वाणी बोले...

तर्ज-गौरी चलो न हंस की चाल, जमाना दुश्मन है

मुझे मिल गई खुशी अपार, बापू के द्वारे से। मेरी नईया हो गई पार, बापू के द्वारे से ।।

मुझे मिल गई खुशी अपार...

जो चाहा मैंने पाया, इस बापू जी के दर से। सब मंशा हो गई पूरी, दुष्कर्म टल गए सिर से ।। मेरा सुखी हुआ परिवार, बापू के द्वारे से। मेरी नईया हो गई पार, बापू के द्वारे से ।।

मुझे मिल गई खुशी अपार...

बापू के दर पर आकर, बिन मांगे मिल गए मोती। अब रसना अमर रस पीती, मल जन्म-जन्म के धोती ।। मेरा संवार गया संसार, बापू के द्वारे से। मेरी नईया हो गई पार, बापू के द्वारे से ।।

मुझे मिल गई खुशी अपार...

अब ज्ञान हुआ इस मन को, बापू है रूप हरि का।यही राम शाम गौतम हैं, यह सचस्वरूप हरि का।जन्मों का छटा अंधकार, बापू के द्वारे से।

मेरी नईया हो गई पार, बापू के द्वारे से ।।

मुझे मिल गई खुशी अपार...

मैंने जो यहां से पाया, पाया न तीर्थ जाकर। जीवन की खुशियां मिल गई, बापू की शरण आकर ।। "लाल" खूब पाया सत्कार, बापू के द्वारे से। मेरी नईया हो गई पार, बापू के द्वारे से।।

मुझे मिल गई खुशी अपार...

तर्ज-महलों में रहने वाले-शबाब

हे नंदाचौर वाले, तेरा है शुक्रिया।तुमने ढक्का गांव को, सुरपुर बना दिया।।

हे नंदाचौर वाले...

भूमि ली देवी दित्ता से, उसे जानकर अपना। उसको भी सूझ वे दी, भक्ति की आनकर।। अपनी लिखी पुस्तक में, उसे भी चढ़ा लिया। तुमने ढक्का गांव, सुरपुर बना दिया।।

हे नंदाचौर वाले...

अब तो यहां पे जगती, एक ज्योति ही नूरानी। हरनाम जी की कहती, निशदिन पावन कहानी ।। यहां श्रद्धाराम जी ने, झंडा फैहरा दिया। तुमने ढक्का गांव को, सुरपुर बना दिया।

हे नंदाचौर वाले...

इस थल पे हो रही है, अब संतजनों की बात। बापू भक्तों को मिलती, यहां से शुभ सौगात।। यहां आने वालों को, सचखण्ड दिखा दिया। तुमने ढक्का गांव को, सुरपुर बना दिया।।

हे नंदाचौर वाले...

संगत को मिल रही है, अब यहां से हर मुराद। बेऔलाद ने भी पाई, यहां आन कर औलाद । "लाल" सुधा का प्याला, सभी को पिला दिया। तुमने इक्का गांव को, सुरपुर बना दिया।

हे नंदाचौर वाले...

बापू धाम के मीठे बोल / 111

॥ काव्य लहरी ।।

तर्ज-स्वयं बनाएं

बापू मेरे घर आओ, लाड मैं लडाऊंगा। सोने की पालकी में, आपको बिठाऊंगा।।

बापू मेरे घर आओ...

मैं छत्तीस प्रकार के पकवान बनाऊंगा। पिस्ता बादाम काजू, सभी में मिलाऊंगा।। जब खाने बैठोगे तो, पंखा भी डुलाऊंगा।

बापू मेरे घर आओ...

शुद्ध देसी घी का, मैं हलुआ बनाऊंगा। कामधेनू दूध वाली, खीर भी खिलाऊंगा। पालथी लगाओगे जब, आनंद मनाऊंगा।।

बापू मेरे घर आओ...

कृष्ण कन्हैया जान, माखन से रिझाऊंगा। दूध भी मलाई वाला, चाव से पिलाऊंगा। भोग जब लगाओगे तो, कीर्ति सुनाऊंगा।

बापू मेरे घर आओ...

बापू तेरे भजनों को, दिन-रात गाऊंगा। चरणों की धूल को भी, शीश पे चढाऊंगा।। आसन पे बिठा दोनों, चरण भी दबाऊंगा।

बापू मेरे घर आओ...

जब जाने लगोगे तो, चुप सा हो जाऊंगा भूल चूक क्षमा होवे, विनय भी सुनाऊंगा। "लाल" जब जाओगे तो, नीर भी बहाऊंगा।

बापू मेरे घर आओ...

तर्ज-इक परदेशी मेरा दिल ले गया- फाल्गुन

मुझे बापू धाम का सहारा मिल गया।आज सारे दुःखों से किनारा मिल गया।।

मुझे बापू धाम का...

इस नेक धाम की तो ऐसी है कहानी। ज्ञानोपदेश देती, बापू जी की वाणी।। मुझे सच्चे गुरु का द्वारा मिल गया। आज सारे दुःखों से किनारा मिल गया।

मुझे बापू धाम का...

सच्चे साथी मिल गए, आज इस धाम से। हम भी तो जुड़ गये, ओम जी के नाम से।। मुझे चार धाम का चौबारा मिल गया। आज सारे दुःखों से किनारा मिल गया।।

मुझे बापू धाम का...

मेरी ओर अब कोई दुःख नहीं ताकते। देख सूरत मेरी दूर-दूर भागते ।। मुझे मेरे हिये का प्यारा मिल गया। आज सारे दुःखों से किनारा मिल गया।।

मुझे बापू धाम का...

आज इस मन की ना पूछो कोई बात। यहां से आशिषे मिली, पाई हैं सौगात ।। मुझे ओम बापू का संवारा मिल गया। आज सारे दुःखों से किनारा मिल गया।।

मुझे बापू धाम का...

चार चांद लग गए, मेरी जिन्दगी को। अब नमन करता हूँ, बापू बन्दगी को। आज सारे दुःखों से किनारा मिल गया।

मुझे बापू धाम का...

।। काव्य लहरी ।।

तर्ज-स्वयं बनाए

मैं दीन गरीब भिखारी, तुम बापू जगत उभारी। कर जोड़ करूं नित विनती, मेरी भी हो निस्तारी ॥

मैं दीन गरीब भिखारी...

मैं तुमसे मांगन आया, हे दाता साहूकारा। झोली फैलाये खड़ा हूं, हे कष्ट निवारनहारा।। हे पाप खंडन दुःख भंजन, अब सुनलो बात हमारी। कर जोड़ करूं नित विनती, मेरी भी हो निस्तारी ॥

मैं दीन गरीब भिखारी...

तुम इस जग के सागर हो, मैं तुच्छ कीट सागर का। तुम गुणवंता जगकर्ता, मैं चाकर हूं इस दर का।। हे सबके भाग्यविधाता, दीनों की राखनहारी।

कर जोड़ करूं नित विनती, मेरी भी हो निस्तारी।।

मैं दीन गरीब भिखारी...

कोई भला कर्म न किया, मैं दोषी हूँ इस दर का। भूले से भी ना देखा, मैंने पथ तेरे घर का।। भक्तों की बात सुनी न, जो तेरे दर के पुजारी। कर जोड़ करू नित विनती, मेरी भी हो निस्तारी।।

मैं दीन गरीब भिखारी...

तुमने तो भक्तजनों को, अपना ही नाम दिया है। मुझको भी नाम दान दो, मैंने दर थाम लिया है। हे ओम पिता सुखकारी, "लाल" है शरण तुम्हारी। कर जोड़ करूं नित विनती, मेरी भी हो निस्तारी ।।

मैं दीन गरीब भिखारी...

तर्ज-जगवाला मेला यारो, थोड़ी देर दा

इस बापू धाम की तो, शोभा है न्यारी। एक बार आने से ही, होती निस्तारी ।।

इस बापू धाम की तो...

यहां आने वालों में, सच्चा सत्कार है। वैर की न बात कोई, सभी में प्यार है।। बापू जी की सीख तो है, बड़ी हितकारी। एक बार आने से ही, होती निस्तारी ।।

इस बापू धाम की तो...

दुनिया में जिसका न, कोई भी सहारा है।उसको तो ओम जी का, सच्चा द्वारा है।। ओम जी ने भक्तों की, नाव पार उतारी। एक बार आने से ही, होती निस्तारी ।।

इस बापू धाम की तो...

इस दर से लेने वाले, सैकड़ों सवाली। कोई भी न गया है, आज तक भी खाली।। ओम जी तो भक्तों पे बड़े ही उपकारी। एक बार आने से ही, होती निस्तारी ।।

इस बापू धाम की तो...

जो भी विश्वास करके, यहां पर आता है। ओम शहनशाह से वह, सभी कुछ पाता है। "लाल" ओम शहनशाह तो, पत राखनहारी हारी।

एक बार आने से ही होती निस्तारी ।।

इस बापू धाम की तो...

बापू जी ईश रूप हैं

तर्ज-स्वयं बनाए

बापू जी का जिस प्राणी ने, हृदय से सम्मान किया। बापू जी ने उस प्राणी को, जगजीवन वरदान दिया।

बापू जी का जिस प्राणी ने...

जिस प्राणी ने कभी न जाना, इस जीवन का मोल क्या।वह भव जल में गोते खाता, थका नाव का चला-चला।जिसने बापू वचन निभाये, उसने अमृतपान किया।बापू जी ने उस प्राणी को, जगजीवन वरदान दिया।

बापू जी का जिस प्राणी ने...

बापू जी की जिसपर कृपा, वह सत्संग में आते हैं। ज्ञान के मोती अमृतरस पी, जीवन सफल बनाते हैं।। बापू जी ने अपने भक्तों को, प्रभु नाम का दान किया।। बापू जी ने उस प्राणी को, जगजीवन वरदान दिया।

बापू जी का जिस प्राणी ने...

बापू भक्त सुधा रस पी कर,बापू-बापू जपते हैं। उठत बैठत सांझ सवेरे, इसी नाम को रटते हैं।।"लाल" ओम ने अपने भक्त का, चिर संचित अरमान किया।बापू जी ने उस प्राणी को, जगजीवन वरदान दिया।।

बापू जी का जिस प्राणी ने...

सत्संग की महिमा

तर्ज-स्वयं बनाएं

दोहा : सत्संग सभा धर्म की, जो दे अनुपम ज्ञान। मन की आंखे खोलकर, देख जरा इंसान ।।

॥ भजन ॥

तर्ज स्वयं बनाएं

बापू जी की धर्म सभा में, सब पूजन के अधिकारी। एक से एक यहां पर बैठे, सभी धर्मों के पुजारी।।

बापू धाम के मीठे बोल /115

बापू जी की धर्म सभा में...

बापू जी ने सभी जनों को, शुभ कर्मों का ज्ञान दिया। सभी जीवों का भला करो तुम, यह सुंदर व्यख्यान दिया।। सबसे भाईचारा रखना, इसमें हैं खुशियां सारी। एक से एक यहां पर बैठे, सभी धर्मों के पुजारी।।

बापू जी की धर्म सभा में...

सबके घट में राम बसे हैं, इस पर तुम विश्वास करो।बापू जी के इन वचनों से, सबके घट प्रकाश करो।। जगत पिता की मधुर कथा से, तुम जोड़ो नित संसारी। एक से एक यहां पर बैठे, सभी धर्मों के पुजारी।।

बापू जी की धर्म सभा में...

बापू जी के अटल वचन का, घर-घर में प्रचार को। अपने मन का कमल खिलाकर, जन-जन पर उपकार करो।। "लाल" सुखी इस धरती पर वह, जो बापू की फुलवारी। एक से एक यहां पर बैठे, सभी धर्मों के पुजारी।।

बापू जी की धर्म सभा में...

आरती

ओम जय श्री बापू हरे, प्रभु जय श्री बापू हरे। हाथ जोड़कर तुमरी, नतमस्तक हो तुमरी हम सब शरण पड़े

ओम जय श्री बापू हरे...

हे माता-पिता प्रतिपालक, परम पिता दाता। आपकी शरण में रहकर, हर जन सुख पाता ।।

ओम जय श्री बापू हरे...

ब्रह्मा विष्णु शिव शंकर, सभी द्वार खड़े। मुक्ति धाम के अभिलाषी, तुमरी शरण पड़े।

ओम जय श्री बापू हरे...

हे अजर अमर अविनाशी, दो जग के वाली। जिसने जैसी आस रखी, तुमसे झट पाली।।

ओम जय श्री बापू हरे...

संत पानप संत ठाकुर, संत श्रद्धाराम। तुम ज्वाला सिंह भाग सिंह, तुम गुरदास राम।

ओम जय श्री बापू हरे...

ओम नारायण दत्त बने, भक्त उबारन को।

मंगल मूरत रूप धरा, जन निस्तारन को ।।

ओम जय श्री बापू हरे...

तुम हो भानु दत्त श्रद्धेय, साक्षात् भगवान। बापू हरनाम दास की, तुम उत्तम पहचान।।

ओम जय श्री बापू हरे...

नंदाचौर धाम विख्यात, आपका बसेरा। जहां आपके दर्शन से कटे जगत फेरा ।।

ओम जय श्री बापू हरे...

"लाल" शरण में आने से, कटती जंजीरे। जीवन सुखमय बन जाता, बनती तकदीरें।

ओम जय श्री बापू हरे...

'शुभ समाप्ति"

लेखक-कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी ०-४४ चन्द्रशेखर आजाद कालोनी किशन गंज-दिल्ली-७ मोबाइल-9540962406

"लाल द्वारा प्रकाशित पुस्तकें"

*बापू धाम के मीठे बोल

*रामलीला नाटक-सम्पूर्ण रामायण

*कृष्णलीला नाटक-सम्पूर्ण कृष्णलीला

*दुष्ट मर्दनी मात भवानी-संक्षिप्त इतिहास

*बाबा बालक नाथ जी की अद्भुत लीला

*सिक्खों का गौरवमयी इतिहास

*दस गुरु अमर कथा-संक्षित इतिहास

*गुरु नानक मार्ग मोक्षद्वार

*लाल गीतांजली

*मेरा भारत महान

*काव्य कुम्भ प्रकाश

*सांई नाथ की अनुपम गाथा

*गुरबाणी अमृतभरी

*नकटा राजा ऊत्त मंत्री (हास्य नाटक)

*सर्व धर्म ज्ञान ज्योति

सत्य का प्रतीक

॥ ओम शहनशाह झंड़ा साहिब ।।

ॐ

बापू श्रद्धाराम ने, झंड़ा दिया झुलाए।
खुले भण्डारे ओम के, झोली लो भरवाए ।।

लेखक-कविरत्न नरेन्द्र सिंह लाल होशियारपुरी
धार्मिक साहित्यकार सरस्वती रत्न सम्मानित
मोबाईल : 9540962406